ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल पंजीकृत संस्थान

विरोधी नामाब्द संवत्सरीयम संवत-2075

सौभाग्यम्

ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक
ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी

संपादक

डॉ. प्रकाश कुमार गौतम

आकल्पन : शनिदेव ग्राफिक्स, भोपाल मो. 9926980190

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
ज्योतिष में संपूर्ण समाधान	2
ज्योतिषाचार्य पंडित अयोध्या प्रसाद गौतम	3
जारी है अनुसंधान	4
ज्योतिष मठ संस्थान का प्रगति पत्रक	5
महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन 29 मार्च 2018	7
मनविचार : ब्राह्मणों के पुरोधा हैं महर्षि महेश योगी	10
ज्योतिष के बिना वेद अधूरा : ब्रह्मचारी गिरीशजी	13
इन वास्तु उपायों से खुलेगी समृद्धि की राह	15
धर्म ग्रंथों के धर्म शास्त्रीय वचन	17
चंद्रमा से प्रभावित होती हैं घटना-दुर्घटनाएं	18
ज्योतिष सम्मेलन की रूप रेखा	19
जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर अवधूत बाबा अरुण गिरि महाराज	21
देसी नुस्खे, सौन्दर्य निखार, स्वस्थ रहने के सहज एवं सरल तरीके	24
स्वस्थ रहने के सहज एवं सरल तरीके	26
शिव रुद्राक्ष की महिमा	30
सूर्य साधना का केंद्र कोर्णाक मंदिर	31
गुरु बहाते हैं जीवन में ज्ञान की गंगा	32
विवाह संस्कार में जरूरी होता है कुंडली मिलान, दाम्पत्य जीवन के संकल्प : 7-5 वचन	34
रत्नों से रोगों का निदान	37
अनुसंधान : रुद्र वीसी का चौथा वर्ष संवत 2075	39
साढ़े साती एवं अढ़ैया शनि विचार सन 2018-19 ई.	40
कालसर्प योग और निवारण के उपाय	41
संवत 2075 के ग्रहण	42
मानव जीवन में नवग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव	43
सम्मेलन अखबारों के पन्नो से	45
पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग में की गई 2017-18 की भविष्यवाणियां जो अक्षरतः सत्य सिद्ध हुई	47
सामान्य जानकारी, वास्तु , ज्योतिष, ज्ञान, चौघड़िया	48
भारत की धर्म संस्कृति भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार	55
गंगा दर्शन : हरिद्वार स्थित हर की पौड़ी का विहंगम दृश्य	56

संपादक मंडल- **ज्योतिषाचार्य पं. श्री विनोद गौतम, मुहूर्ताचार्य पं. श्री कैलाशचंद्र दुबे, श्री राजेश पाठक, श्री निरुपम तिवारी, श्री सरल भदौरिया**

ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल द्वारा प्रकाशित

प्रधान कार्यालय : ज्योतिष मठ संस्थान, ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल मो. : 9827322068, email-pt.vinodgoutam@gmail.com, website-www.jyotishmath.com

सम्पादकीय

ज्योतिष में संपूर्ण समाधान

ॐ सर्वे ग्रहाणांबै भौवायनाः चेतनाः चरणः चरन्ति, प्राणायनो मतिष्तस्यैः मंथिनत्वात् मिमिक्षत्।।

वेद भारतीय संस्कृति के मूलाधार ग्रंथ हैं, जिसमें जीवन के सभी पक्षों के शुभाशुभ का विचार उपलब्ध है। वाचिक परम्परा से लिखित परम्परा और फिर मुद्रण सुविधाओं के आते-आते वेदों का ज्ञान सर्वसुलभ हो गया। वेदों के अध्ययन को छह भागों में विभाजित किया गया है। ज्योतिष इसका छठवां अंग है और जिसे शिक्षा के साथ महत्वपूर्ण अंग माना गया है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों के प्रति मानव हमेशा से आकर्षित होता रहा है। उसके ज्ञान में विकास के साथ-साथ यह जानने में भी सक्षम हो गया कि अंतरिक्ष में उपस्थित खगोलीय पिंड उसके जीवन को भी कहीं न कहीं प्रभावित करते हैं। वैसे ज्योतिष को सूर्य आदि ग्रहों का ज्ञान कराने वाला माना गया है, परन्तु अन्तरिक्ष के रहस्यों की अधिक जानकारी मिलने के बाद ज्योतिष की परिभाषा और अर्थ दोनों का बहुत अधिक विस्तार हो गया है। ज्योतिष एक विज्ञान है या नहीं? इस विषय पर विचार और मतभेद बने रहते हैं, फिर भी यह जीवन दर्शन की एक कला तो है ही, जो कि मनुष्य के सकारात्मक पक्षों का विवेचन कर उसे श्रेष्ठतम बनाने में सहयोग प्रदान करता है। सौभाग्यं स्मारिका आपकी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग करेगा, इसी मंगल कामना के साथ।

- डॉ. प्रकाश कुमार गौतम

पदाधिकारी - ज्योतिष मठ संस्थान

संस्थापक अध्यक्ष
ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी

उपाध्यक्ष
प्रसिद्ध चिकित्सक श्री जेपी पॉलीवालजी

संचालक
ज्योतिषाचार्य पं. श्री विनोद गौतमजी

कार्यालयाध्यक्ष
मुहूर्ताचार्य पं. श्री कैलाश चंद्र दुबेजी

कोषाध्यक्ष
ज्योतिषी श्रीमती सविता गौतमजी

सह-व्यवस्थापक
आचार्य श्री सुबोध मिश्राजी,
आचार्य श्री यश शर्माजी

कानूनी सलाहकार मंडल

मप्र के पूर्व चीफ जस्टिस मा. श्री डीपीएस चौहानजी, इलाहाबाद

जस्टिस मा. श्री आरडी शुक्लाजी, भोपाल

जस्टिस मा. श्री अशोक तिवारीजी, इंदौर

न्यायाधीश मा. श्री एसएन द्विवेदीजी, भोपाल

न्यायाधीश मा. श्री एसएस उपाध्यायजी, भोपाल

श्री अमित शुक्लाजी, (सीनि. एड.)
हाईकोर्ट जबलपुर-मो. 9425325708

श्री उमाकांत शुक्लाजी (सीनि. एड.),
सतना मो.-9303321029

श्री ओ.पी. त्रिपाठीजी (एड. हाईकोर्ट),
जबलपुर मो.-9826768278

श्री सीएस शर्मा (सीनियर एड.)
भोपाल मो.-9425016814

श्री योगेश द्विवेदीजी (एड.)
भोपाल मो.-9425159954

श्री अनुराग तिवारीजी (एड.)
इंदौर मो. 9806018811

सर्वाधिकार सुरक्षित 'सौभाग्यम्'

ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल द्वारा प्रकाशित 'सौभाग्यम्' में मुद्रित विषय वस्तु या उसके अंश प्रकाशक की बिना लिखित अनुमति के छपवाना या प्रकाशन करना अपराध है। ऐसी स्थिति में कापीराइट एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी।

सभी प्रकार के विवादों का निपटारा भोपाल के सभी सक्षम न्यायलयों में होगा।

ज्योतिषाचार्य पंडित अयोध्या प्रसाद गौतम

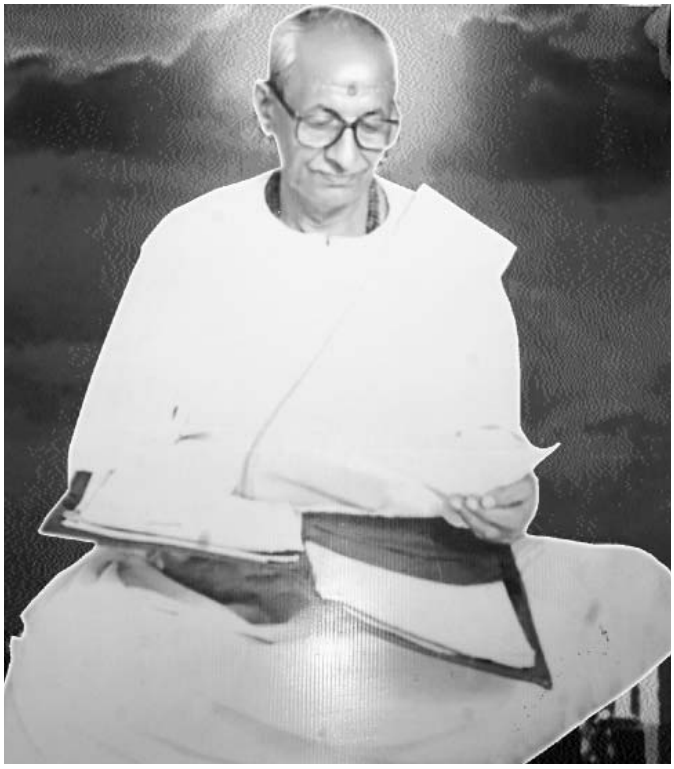

देश के गौरव और प्रदेश के प्रख्यात ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी ने ज्योतिष की ज्योति जलाकर समूचे मानव समाज को जागृत कर दिया। लगभग 85 वर्षीय वयोवृद्ध होने के बावजूद भी सदैव स्वस्थ और तंदुरुस्त दिखने वाले पंडित गौतम का ज्योतिषीय ज्ञान अद्‌भुत है। आपने अपने बचपन में स्कूली शिक्षा तो ग्रहण की ही बाद में बनारस जाकर ज्योतिष से आचार्य डिग्री प्राप्त कर तंत्र का गहन ज्ञान भी प्राप्त किया। इसके अलावा कर्म-कांड में भी आपने गहरी रुचि से अध्ययन कर सनातन धर्मावलंबियों का भला किया। आप अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद, ज्योतिष तंत्र महासंघ से लेकर अनेक ज्योतिष, धार्मिक व सामाजिकों संगठनों के शीर्ष पदों पर शोभा बढ़ाते रहे हैं। आप आद्याशक्ति मां गायत्री का ध्यान प्राणायाम वसुधैव कुटुंकम की सकारात्मक भावना से विश्व शांति एवं विकास हेतु अध्ययनकाल से करते आ रहे हैं। आप शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती द्वारा ज्योतिष मार्तण्ड की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं। आप माँ दुर्गाजी के उपासक हैं। ज्योतिष ज्ञान में आपकी चर्चा एक चमत्कारी संत के रूप में होती है। ज्योतिष संदर्भ में आपकी राय जानने देश के कई राजनीतिक व न्याय क्षेत्र से जुड़ी विभूतियां आपके पास परामर्श करने आती हैं। यही नहीं देश के अलावा विदेशी मूल के लोग भी आपकी ज्योतिष से प्रभावित हैं और आपसे ज्योतिषीय राय लेने भारत आते हैं। आपके द्वारा बताए मार्ग पर चलकर अपनी समस्याएं दूरकर मां के आराधक बन गए हैं। हजारों सत्य भविष्यवाणियां लोगों में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। जिसमें 2001 में गुजरात में आए भूकंप का स्पष्ट उल्लेख, राजीव गांधी, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, उमा भारती, शिवराज सिंह चौहान के अतिरिक्त वर्तमान में हुए चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, त्रिपुरा, कर्नाटक आदि के चुनाव में लिखी गई भविष्यवाणी अक्षरतः सत्य सिद्ध हो चुकी है। आपके द्वारा आगे की भी भविष्यवाणी की जा चुकी है। आपके द्वारा पंचांग, कैलेंडर आदि के निर्माण का कार्य वर्षों से किया जाता रहा है, जिसमें कई भविष्यवाणियों का उल्लेख रहता है। आप ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक हैं। जहां पर ज्योतिषीय ज्ञान का अनुसंधान निरन्तर जारी है।

ज्योतिष मठ संस्थान

जारी है अनुसंधान

जो अज्ञात है उसे ज्ञात करा देने वाले शास्त्र का नाम ही ज्योतिष है। इस शास्त्र के आधार पर मनुष्य अपने जीवन को अपने भविष्य के शुभ परिणाम से संजोकर सुख प्राप्त करता है। इसके लिए ज्योतिष अनुसंधान जरूरी है। जिसकी अहम जिम्मेदारी का निर्वहन भोपाल के नेहरू नगर क्षेत्र स्थित ज्योतिष मठ संस्थान कर रहा है। विश्व के प्रख्यात ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी द्वारा संस्थापित इस अनुसंधान केंद्र में ज्योतिष संबंधी सभी विधाओं पर अनुसंधान जारी है। ज्योतिष में रुचि रखने वाले नवोदित छात्र भी ज्योतिषीय ज्ञान व शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ज्योतिष मठ में जन्म कुंडली के आधार पर ज्योतिष परामर्श, मिलान तो किया ही जाता है साथ ही विद्वान पंडितों द्वारा ग्रह शांति निमितार्थ पूजन-अनुष्ठान भी होते हैं। इस तरह के अनुष्ठान जीवन के किसी विशेष क्षेत्र में उन्नति व सुख-संपदा, संतति के साथ राजसत्ता प्राप्ति के लिए भी संपन्न कराए जाते हैं। शनि, राहु, मंगल, सूर्य आदि ग्रहों की दशा शांति के निमित्त भी ज्योतिष मठ में पूजन-विधान व अनुसंधान किए जाते हैं। जन्म कुंडली निर्माण, लग्न पत्रिका, विवाह मिलान आदि कार्य भी उत्कृष्ठतापूर्वक होते हैं। कैलेंडर, पंचांग निर्माण कार्य तथा समय-समय पर की गई भविष्यवाणियां एवं ज्योतिषीय सम्मेलनों का आयोजन निरंतर जारी रहता है। इस तरह ज्योतिष कार्य के अलावा हस्तरेखा व वास्तु आदि पर भी विस्तृत अनुसंधान किए जाते हैं। इस संस्थान में कई राजनेताओं, साहित्यकारों, बड़े प्रशासकों के अलावा अन्य सभी क्षेत्रों के लोगों के हस्त छाप भी संग्रहीत हैं जो किसी क्षेत्र विशेष में अपनी कला कौशल के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। ज्योतिष मठ में सैकड़ों वर्ष पुराने कैलेंडर व पंचांग आदि भी संग्रहीत हैं। इसके अलावा ग्रह शांति पूजन-अनुष्ठान में उपयोग आने वाले सैकड़ों वर्ष पुराने लकड़ी के सुरवा थाल, पंच पात्र आदि उपलब्ध हैं जिनका उपयोग ग्रह शांति आदि अनुष्ठान में होता है।

ज्योतिष मठ संस्थान का प्रगति पत्रक

विगत 5 वर्षों में किए गए आयोजन, उत्सव, संगोष्ठियां एवं बैठकें-

1. ज्योतिष मठ संस्थान का संगोष्ठी 12 अप्रैल 2013 ई. आयोजित।
2. देवी मूर्ति स्थापना ध्वजारोहण 13 अप्रैल 2013 ई.
3. महाचण्डी पाठ प्रारंभ तारीख 20 अप्रैल 2013 ई.
4. महाशतचण्डी पाठ की पूर्णाहूती कार्यक्रम 19 अप्रैल 2013 ई.
5. भ्रम व भय विषय पर ज्योतिष संगोष्ठी 29 सितंबर 2013
6. गीता जयंती का आयोजन 13 दिसंबर 2013 ई.
7. मां सरस्वती की स्थापना, बसंत पंचमी समारोह 5 फरवरी 2014 ई.
8. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी व सौभाग्यम का विमोचन 30.3.2014 ई.
9. बुद्धपूर्णिमा के अवसर पर महाबोधी ध्यान का आयोजन 14.5.2014
10. संस्थान की बैठक में राशि पर विचार गोष्ठी 10.जून 2014 ई.
11. गुरु पूर्णिमा पर वृहद समारोह का आयोजन 10 जुलाई 2014 ई.
12. बसंत पंचमी पर भव्य समारोह 24 जनवरी 2015 ई.
13. पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग का विमोचन 23 जनवरी 2015
14. नव संवत्सर समारोह एवं नवरात्रि महोत्सव 21 मार्च 2015
15. नवरात्रि महोत्सव का रंगारंग समापन 29 मार्च 2015 ई.
16. अक्षय तृतीया पर सिद्धिपूजा का भव्य आयोजन 21 अप्रैल 2015 ई.
17. आर्द्रा प्रवेश एवं अधिमास पर परिचर्चा 17 जून 2015 ई.
18. गुरु पूर्णिमा पर भव्य आयोजन 31 जुलाई 2015 ई.
19. प्रशिक्षु ज्योतिषाचार्यों को वायु परीक्षण शोध प्रयोग 31 जुलाई 2015
20. श्राद्धादि कर्म पर गोष्ठी सोमवार 28 सितम्बर 2015 ई.
21. मौसमी असंतुलन पर विस्तृत परिचर्चा 25 दिसंबर 2015 ई.
22. पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग (कैलेंडर) का विमोचन एवं कुंभ पर्व को लेकर एक प्रेसवार्ता का आयोजन 30 दिसंबर 2015 ई.
23. ज्योतिष मठ द्वारा दिनांक 8 अप्रैल 2016 को गुडी पड़वा पंचांग संवत का प्रथम दिन सोमनाम संवतसर का फल कथनवाचन के साथ शक्ति की उपासना नवदिवसीय चंडी अनुष्ठान प्रारंभ।
24. तारीख 15 अप्रैल 2016 को पुष्य नक्षत्र में रामनवमी पाठ पारायण चंडी अनुष्ठान की पूर्णाहुति संस्थान के अनुयायियों द्वारा की गई।
25. अक्षय तृतीया पर एक संगोष्ठी का आयोजन 9 मई 2016
26. आद्रा प्रवेश पर परिचर्चा कर प्रेसवार्ता 22 जून 2016
27. नाग पंचमी 7 अगस्त 2016 को नागों से संबंधित जानकारियां लोगों तक पहुंचाई। इसमें सर्प विशेषज्ञों का सम्मान किया गया।
28. अप्रैल 2016 माह में संस्कृत संस्थान भोपाल में हुए ज्योतिष सम्मेलन में ज्योतिष मठ संस्थान द्वारा सहभागिता निभाई।
29. उज्जैन कुंभ में कुंभ कैलेंडर का निर्माण तथा कुंभ रहस्यम पुस्तक

संस्थापक
पं. अयोध्या प्रसाद गौतम

सहयोगीगण

1. महामंडलेश्वर अवधूत बाबा श्री अरुण गिरि महाराजजी आश्रम, पशुलोक ऋषिकेश उत्तराखण्ड
2. महंत श्री चंद्रमादास त्यागीजी, गुफा मंदिर भोपाल
3. महंत श्री रविंद्रदासजी, बगलामुखी सिद्धपीठ भोपाल
4. महामंडलेश्वर शिवांगीनन्दन नन्दगिरिजी, हरिद्वार, ऋषिकेश
5. पं. श्रीराम जीवन दुबे गुरुजी, चामुंडा दरबार भोपाल
6. महाराज श्री वैभव भटेलेजी, प्रसिद्धि कथावाचक, भोपाल
7. पं. श्री नारायणशंकर नाथूराम व्यासजी, जबलपुर
8. पं. श्री प्रेमपाल कौशिकजी, राजधानी पंचांग निर्माता, दिल्ली
9. ज्योतिषाचार्य पं. सूर्यकांत चतुर्वेदीजी,जबलपुर
10. धर्माधिकारी पं. विष्णु राजोरियाजी, भोपाल
11. पं. श्री राजेश मिश्राजी पुष्पांजलि पंचांग, भोपाल
12. श्री अनंतचरणदासजी कोटा (राजस्थान)
13. पं. गौरीशंकर शास्त्रीजी, वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य, भोपाल
14. पं. प्रहलाद पंड्याजी, श्री गणेश ज्योतिष केंद्र, भोपाल
15. श्री संत मंगलमजी, साई धाम नेहरू नगर, भोपाल
16. पं. श्री जगदीश शर्मा, ज्योतिषाचार्य भोपाल
17. पं. श्री धर्मेन्द्र शास्त्रीजी ज्योतिषाचार्य, भोपाल
18. पं. श्री रामकिशोर वैदिकजी, भागवताचार्य, भोपाल
19. पं. श्री धनेश मिश्राजी, काली मठ संस्थान, भोपाल
20. श्री शैलेंद्र निगमजी, समाजसेवी, भोपाल
21. श्रीमती जसविन्दर औबेरायजी, भोपाल
22. श्री देवकुमार सतवानीजी, भोपाल
23. श्री मंटू भदौरियाजी, भोपाल
24. पं. श्री देवेन्द्र दुबेजी, वैदिक पंडित, भोपाल
25. पं. श्री राजेश पाठकजी, धर्म नगरी, भोपाल
26. श्री आशुतोष गुप्ताजी, इंडिया फर्स्ट न्यूज, म.प्र. भोपाल
27. श्री रवि चौधरीजी, रंगकृति संस्था, भोपाल
28. श्री पवन अरोराजी, प्रशासनिक अधिकारी, भोपाल
29. पं. श्री बृजमोहन तिवारीजी, पूर्व आईजी, भोपाल
30. श्री आरडी प्रजापतिजी, पूर्व आईजी, भोपाल
31. पं. श्री राजेश गुरुजी, महाकाल मंदिर, उज्जैन
32. पं. श्री चेतन शास्त्रीजी, सिद्धवट घाट, उज्जैन
33. पं. श्री प्रसाद भालेरावजी, त्र्यंबकेश्वर धाम, नासिक
34. पं. श्री देवेश शास्त्रीजी, मंगलनाथ मंदिर, उज्जैन
35. पं. श्री नीरज पाण्डेजी
36. पं. संजय वाजपेयीजी
37. पं. पंकज व्यासजी
38. श्री बाला प्रसाद विश्वकर्माजी तांत्रिक, बालौद
39. श्री आदर्श फोटोकापी वाले धमीजाजी, रीवा

का प्रकाशन कर मेला क्षेत्र में वितरित कर महाकुंभ से संबंधित प्रचार-प्रसार करके कुंभ का ज्ञान भक्तों को संस्थान द्वारा प्राप्त कराया गया। जिसमें संस्थान के लगभग 100 सहयोगियों ने सहयोग किया।

30. नवंबर 2016 कुशावर मंडी जिला राजगढ़ में संस्थान द्वारा एक ज्योतिष सम्मेलन कर सहभागिता निभाई।
31. 7, 8 एवं 9 जनवरी 2017 को पीतांबरा पीठ दतिया में अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। जिसमें ज्योतिष मठ संस्थान द्वारा सभी प्रकार का सहयोग कर सम्मेलन में भागीदारी निभाई।
32. गुड़ी पड़वा 29 मार्च 2017 को संस्थान के स्थापना दिवस का कार्यक्रम संपन्न, पंचांग पूजा की गई।
33. महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध संगोष्ठी का सफल आयोजन 29 मार्च 2018 महर्षि संस्कृत केंद्र भोपाल।

इसके अतिरिक्त मठ में दैनिक दैवीय आराधना, चंडीपाठ, अनुष्ठान, हवन आदि कार्य निरंतर तथा अतिथि सम्मान के साथ समय-समय पर भोज के कार्यक्रम के साथ आगंतुक विद्वानों से परिचर्चा कर सुझाव प्राप्त किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त दैनिक अखबार, टीवी चैनल तथा पत्र-पत्रिकाओं को अनुसंधानित ज्योतिषीय लेख उपलब्ध कराए जाते हैं।

स्मरणीय पल

ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावतजी एवं मध्यप्रदेश के पूर्व चीफ जस्टिस श्री डीपीएस चौहानजी।

विश्व संत सम्राट श्री कृपालुजी महाराज, हैदराबाद के पूर्व चीफ जस्टिस श्री देवेन्द्र गुप्ताजी एवं पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी।

पंचांग का प्रदर्शन करते हुए मध्यप्रदेश के पूर्व चीफ जस्टिस श्री डीपीएस चौहानजी एवं ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी।

विश्व संत सम्राट स्वामी प्रज्ञाननंदजी से विश्व विकास पर चर्चा करते हुए ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी।

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन 29 मार्च 2018

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन 29 मार्च 2018 को भोपाल स्थित महर्षि ध्यान केंद्र में गरिमामयी ढंग से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में भारत के अनेक प्रांतों से पंचांगकारों एवं प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्यों ने शिरकत की। सम्मेलन में राजधानी पंचांग दिल्ली, पुष्पांजलि पंचांग भोपाल, रामानुजम पंचांग भोपाल, पं. अयोध्याध्या प्रसाद गौतम पंचांग भोपाल, भुवनविजय पंचांग जबलपुर, पं. बाबूलाल चतुर्वेदी पंचांग जबलपुर, लाला रामस्वरूप आरसी पंचांग आदि ख्याति प्राप्त पंचांगों के पंचांगकार तथा प्रतिनिधियों द्वारा व्रत-त्योहारों की एकता बनाने के प्रस्ताव रखे। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के तौर पर महर्षि महेश योगीजी वैदिक विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ब्रह्मचारी श्री गिरीशजी महाराज एवं मुख्य अतिथि ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी एवं विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में पूर्व न्यायाधीश श्री एस.एन. द्विवेदीजी तथा तत्कालीन सीबीआई जज श्री शिवशंकर उपाध्यायजी मंच पर विराजमान रहे। राजधानी भोपाल के धर्माचार्य पं. विष्णु राजोरियाजी, प्रसिद्ध कथावाचक महाराज वैभव भटेलेजी, ज्योतिषाचार्य पं. श्री रामजीवन दुबे गुरुजी चामुंडा दरबार तथा वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य श्री प्रहलाद पंड्याजी, डॉ. प्रकाश गौतमजी ने इस सम्मेलन में पधारे विद्वानों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रसिद्ध कथाकार एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. निलिम्प त्रिपाठीजी द्वारा किया गया। व्रत-त्योहारों एवं मुहूर्तों में भिन्नताओं में एकरूपता लाने के प्रयास को लेकर यह कार्यक्रम किया गया। इस सम्मेलन में उपस्थित ज्योतिषाचार्यों के समूह को संबोधित करते हुए ब्रह्मचारी गिरीशजी द्वारा सनातन व्रत-त्योहारों को लेकर एक पंचांग सूत्र का निर्माण करने का आश्वासन दिया गया। जिसमें सभी संदिग्ध व्रत त्योहारों एवं पर्वों की विवेचना वैदिक आधार पर हो ऐसे

पंचांग सूत्रों का निर्माण कर देश के संपूर्ण क्षेत्रों में वितरित करवाया जाए। साथ ही सभी पंचांगकारों को भी निर्णीत व्रत-त्योहारों की सूची प्रदान की जाए। जिससे आगामी वर्ष में छपने वाले पंचांग-कैलेंडरों में शुद्ध व्रत-त्योहारों को दर्शाया जा सके।

उक्त कार्यक्रम मध्यप्रदेश शासन संस्कृति संचालनालय के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय-भोपाल, कालीमठ संस्थान-भोपाल, वैदिक ब्राह्मण युवा संगठन-भोपाल, स्वराज न्यूज चैनल मध्यप्रदेश-भोपाल, इंडिया फर्स्ट न्यूज चैनल म.प्र., छग-भोपाल, रंगकृति संस्थान-भोपाल, धर्म नगरी समाचार पत्र-भोपाल का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के संयोजक ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम ने बताया कि इस सम्मेलन में अतिथि विद्वानों द्वारा की गई घोषणाओं को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से एक बैठक का आयोजन किया जाएगा एवं सनातन वैदिक पंचांग का निर्माण व्रत-त्योहारों को निर्णीत कर किया जाएगा। सम्मेलन में पं. राम किशोर वैदिकजी, पं. श्री धनेश प्रपन्नाचार्यजी, डॉ.श्री जयप्रकाश पालीवालजी एवं मुहूर्ताचार्य पं. श्री कैलाशचंद्र दुबेजी, पं. श्री देवेंद्र दुबेजी, पं. श्री ऋषभ दुबेजी, पं. श्री सुबोध मिश्रा, श्री संजय भदौरियाजी, श्री धीरेंद्र चौहानजी, श्रीमती अनीता गौतमजी, श्री बीडी मिश्राजी गुलमोहर कालोनी, भोपाल का विशेष सहयोग सम्मेलन के सफल होने में रहा। सम्मेलन में भोपाल के नामचीन पत्रकारों का सम्मान भी किया गया। सभी ज्योतिषाचार्यों एवं पंचांगकारों को शाल श्रीफल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्रभात साहित्य परिषद के डॉ. अनिल शर्माजी (मयंक) का विशेष सम्मान किया गया। लेखन जगत की तेज-तर्रार पत्रकार श्रीमती सुमन त्रिपाठीजी (दैनिक खबरी-खबरी) एवं निशांत शर्माजी, रमेश शर्माजी, संदीप भामरकरजी, वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेश पाठकजी-धर्म नगरी, श्री आशुतोष गुप्ताजी, श्री राजेश रायजी आदि पत्रकारों का विशेष सम्मान किया गया। संस्थान के संस्थापक पं. अयोध्या प्रसाद गौतम द्वारा सभी उपस्थित विद्वानों का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भोपाल ज्योतिष की वाराणसी है यहां समीप से कर्क रेखा गुजरती है। जहां पर एक निश्चित तारीख में परछाई भी गायब हो जाती है। यह स्थान ज्योतिषीय शोध हेतु उपयुक्त है। सभी के सहयोग से भोपाल में एक ज्योतिषीय वेधशाला का निर्माण किया जाएगा। जिसमें ज्योतिष के प्रशिक्षु ज्योतिषाचार्य शोध करेंगे। इस प्रस्ताव पर सम्मेलन में उपस्थित मुख्य अतिथि आचार्य ब्रह्मचारी श्री गिरीशजी महाराज द्वारा सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन प्रदान किया गया तथा ऐसे गरिमामयी कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष आयोजित हों ऐसा सुनिश्चित किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली, वृंदावन, मुंबई, नाशिक, बड़ोदरा, इटावा, दमोह, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर, रीवा, सतना, पन्ना, सागर, छतरपुर, आगरा, झांसी, नीमच, हरिद्वार, वाराणसी, इलाहाबाद सहित भोपाल के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्यों की उपस्थिति विशेष रूप से सराहनीय रही। कार्यक्रम के आयोजन के संबंध में ज्योतिष सम्मेलन के संयोजक पं. विनोद गौतम के अनुसार महर्षिजी के नाम से सम्मेलन करने का संकल्प 2003 में पिपलेश्वर मंदिर नेहरू भोपाल में आयोजित महर्षिजी के स्वर्गारोहण की शोकसभा में लिया गया था। जो कि आज इतने वर्ष बाद महर्षिजी के नाम से यह आयोजित किया गया। भविष्य में महर्षिजी के आशीर्वाद से और भी ज्योतिष सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा। तथा ज्योतिष में फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

-ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम, संचालक ज्योतिष मठ, नेहरू नगर, भोपाल

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन दिनांक 29 मार्च 2018 ई. को भोपाल में महर्षि ध्यान केंद्र स्थित सभागार में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में देशभर के पंचांगकार एवं ज्योतिषाचार्य शामिल हुए। व्रत त्योहारों में एकरूपता लाने के लिए किए गए ज्योतिष मठ संस्थान के इस प्रयास को सभी जगह सराहना मिली। सम्मेलन में यथोचित सभी विद्वानों का सम्मान किया गया। सम्मेलन को फोटो एलबम की नजर से देखने पर यह अलौकिक एवं भव्य समारोह पथ प्रदर्शक है।

ज्योतिष सम्मेलन के संयोजक पं. श्री विनोद गौतमजी का सम्मान करते हुए उपस्थित मुख्य अतिथिगण, ज्योतिषाचार्य एवं विद्वान आचार्यगण तथा महिला ज्योतिषाचार्य।

संस्थान के संस्थापक ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी का सम्मान करते हुए महर्षि संस्थान के प्रमुख ब्रह्मचारी आचार्य श्री गिरीशजी महाराज।

सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि पधारे सीबीआई जज श्री शिव शंकर उपाध्यायजी का स्वागत सम्मान करते हुए आयोजक पं. विनोद गौतमजी एवं पं. धनेश शास्त्रीजी।

वेदों के पुनरोद्धारक महर्षि महेश योगीजी

प्रत्येक वर्ष जनवरी माह की 12 तारीख को महर्षि महेश योगी की जयंती के रूप में मनाया जाता है। सुंदर दिव्य विभूति महर्षि वैदिक महेश योगी जी ने संपूर्ण ज्ञान से विश्व को अलौकिक किया। उन्होंने सरल प्रवचनों के माध्यम से हिन्दुस्तान के जबलपुर से लेकर हालैंड सहित अनेक देशों में लगभग मृत पड़े वेदों को संजीवनी दी। आपको वेदों के पुनरोद्धारक कहना अतिश्योकित न होगी। उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं ब्रह्म ज्ञान, वेदों में निहित ज्ञान के आधार पर अनेक ग्रंथों की रचना की। महर्षिजी का वास्तविक नाम महेश प्रसाद श्रीवास्तव है। आपके पिता श्री रामचंद्र श्रीवास्तवजी राजस्व विभाग जबलपुर में कार्यरत रहे। महर्षिजी ने जबलपुर से मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा की उपाधि प्राप्त की। विश्व विख्यात महर्षि होने तक की जीवन यात्रा कठिन तपस्या से भरी हुई है। परम गुरु स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वतीजी को देखकर उन्हें वैराग्य जागृत हो गया। उन्होंने भावातीत ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए विश्व भ्रमणकर करीब 200 देशों की यात्रा की। योग व वेदों की वाणी बाह्मण बालकों को अपने स्कूल-कॉलेजों की स्थापना कर सुलभ कराई। योग व साधना के आध्यात्मिक गुरु ब्राह्मणों के पुरोधा महर्षिजी नीदरलैंड स्थित अपने आश्रम में 5 फरवरी 2008 को ब्रह्मलीन हो गए। ज्योतिषमठ संस्थान द्वारा फरवरी 2008 में एक शोकसभा का आयोजन पिप्लेश्वर मंदिर नेहरू नगर के प्रांगण में किया गया। जिसमें भोपाल सहित आसपास के महर्षि संस्थानों में अध्ययनरत छात्र तथा महर्षिजी के अनुयायियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए उस दिन उन्हें संपूर्ण ब्राह्मण समाज का पुरोधा बताया गया था।

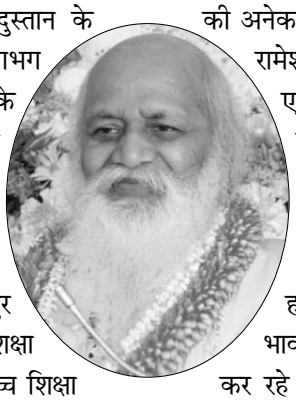

आप श्री महर्षिजी का व्यक्तित्व अजर-अमर है। ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानंदजीके सानिध्य में सभी प्रकार की आध्यात्मिक योग साधना कर इस हिम क्षेत्र में मौन व्रत करके भावातीत ध्यान को पूरी पश्चिमी दुनिया में लोकप्रिय बना दिया। उनके शिष्यों में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर देश-विदेश की अनेक संसदीय एवं कारोबारी हस्तियां शामिल हैं। उन्होंने रामेश्वर स्थित आश्रम में 10 हजार बाल ब्रह्मचारियों को एक साथ आध्यात्मिक योग साधना की दीक्षा दी। दुनियाभर में फैले लगभग 60 लाख अनुयायी उनके जीवन व उनके कार्यों पर मंथन व अनुसरण करते हैं। उनके द्वारा स्थापित की गई वेद-वेदांग शालाएं एवं आश्रम तथा विश्वविद्यालय आज प्रतिवर्ष हजारों ब्राह्मण बालकों को कर्म-कांड, वेद, योग एवं भावातीत ध्यान की शिक्षा देकर संस्कारमय ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। आज उनके सभी विश्वविद्यालय उनके परम शिष्य ब्रह्मचारी श्री गिरीशजी महाराज द्वारा संचालित हो रहे हैं। जिसमें वेद-वेदांग की शिक्षा संस्कार प्राप्त होते हैं। इन स्कूल आश्रमों में भोजन एवं आवास की व्यवस्था उपलब्ध है। जिससे गरीब ब्राह्मण बालक अपनी शिक्षा पूर्ण कर संस्कारी बन रहे हैं। भारत देश के साथ ही 128 देशों में महर्षिजी के द्वारा स्थापित वैदिक शिक्षण संस्थान भावातीत ध्यान करा रहे हैं। जिससे देश और विदेश में मृत पड़े वेदों को पुनः जीवनदान मिल गया है। आज के युग में जहां सरकारों द्वारा पारंपरिक संस्कृत स्कूल कालेज बंद किए जा रहे हैं ऐसी स्थिति में महर्षि जी की संस्थाएं ब्राह्मण बालकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यही कारण है कि महर्षिजी को लोग ब्राह्मणों के पुरोधा मानते हैं। उपरोक्त विचारों के आधार पर मन में एक विचार आया कि क्यों न महर्षिजी के नाम से ज्योतिष सम्मेलनों का निरंतर आयोजन किया जाए। इसी उद्देश्य के साथ 29 मार्च 2018 को ज्योतिष मठ संस्थान ने महर्षि ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया, जिसकी अपार सफलता चर्चा का विषय रही। **-ज्योतिष मठ संस्थान द्वारा**

श्री मारुती संगीत संस्थान

संगीत कला सीखने के लिए संपर्क करें - नवीन बैच प्रारंभ

पं. श्री अशोक भट्ट, प्रोफेसर कॉलोनी, भोपाल मो. 9893439624

संगीतमयी श्रीमद्भागवत गीता, संगीतमयी श्रीमद्भगत कथा, संगीतमयी शिवार्चन, संगीतमयी सुन्दरकांड, अखंड मानस पाठ, देवी जागरण हेतु संपर्क करें।

मंचासीन - प्रसिद्ध कथावाचक महाराज श्री वैभव भटेलेजी, भागवताचार्य डॉ. निलिम्प त्रिपाठीजी, ब्रह्मचारी श्री गिरीशजी महाराज, ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी, पं. श्री विष्णु राजोरियाजी, पं. प्रहलाद पंड्याजी, पं. श्री रामजीवन दुबे गुरुजी।

डॉ. निलिम्प त्रिपाठीजी का स्वागत सम्मान।

ब्रह्मचारी आजार्य गिरीशजी महाराज को सम्मेलन के दौरान बेच लगाते हुए संयोजक पं. विनोद गौतम।

सम्मेलन में उपस्थित ज्योतिषाचार्य विद्वानगण, मीडिया प्रमुख।

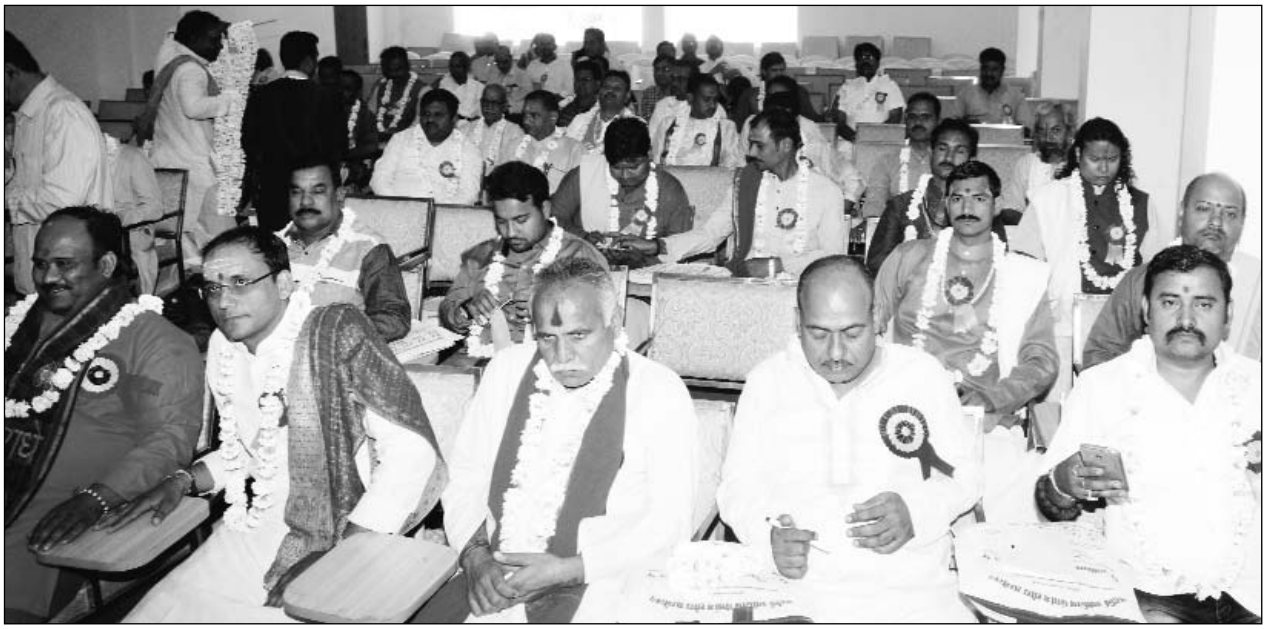

सम्मेलन में उपस्थित ज्योतिषाचार्य विद्वानगण एवं मीडिया प्रमुख तथा सम्मानीय अतिथिगण।

श्री वासुदेवजी का सम्मान करते हुए पं. श्री विनोद गौतमजी।

ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या गौतमजी से पंचांगों के शोध पर अपने विचार रखते हुए।

प्रभात साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. श्री अनिल शर्माजी का सम्मान।

ब्राह्मण युवजन महासभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री अशोक भारद्वाजजी का सम्मान।

ज्योतिष के बिना वेद अधूरा : ब्रह्मचारी गिरीशजी

ज्योतिष के उत्थान के लिए मैं संकल्परत हूं

ब्रह्मचारी आचार्य श्री गिरीशजी महाराज द्वारा ज्योतिष सम्मेलन में मुख्य अतिथि के तौर पर जब उन्होंने ज्योतिष के प्रति अपनी श्रद्धा-संकल्प और भावना का बखान किया उस समय उपस्थित विद्वान उनके संकल्प से अभिर्भूत हो उठे। सभी ने एक स्वर में महाराजश्री की प्रशंसा की। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि ज्योतिष के क्षेत्र में कार्यरत वैदिक विद्वानों को अगर किसी भी प्रकार की आवश्यकता महसूस होती है तो उसके लिए महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय हमेशा तैयार है। शोध अनुसंधान में होने वाले व्यय के साथ ज्योतिष सम्मेलनों में आर्थिक मदद करने का आश्वासन भी उपस्थितत ज्योतिषाचार्यों को आचार्य श्री के द्वारा दिया गया। उन्होंने बताया कि करोंद स्थित विद्यालय प्रांगण में दो दिन चार दिन 10 दिन का भी अगर कोई शोध सम्मेलन आयोजन किया जा रहा है तो उसमें संपूर्ण व्यय महर्षि संस्थान उठाएगा। साथ ही ज्योतिषियों की समस्याओं के समाधान के लिए एक उचित मंच बनाया जाएगा जिसमें बैठकर ज्योतिषी अपना शोध कार्य तो करेंगे ही अपने ज्ञान को भी एक-दूसरे से आदान-प्रदान कर सकेंगे। इस दौरान मंच से यह आवाज उठने पर कि भोपाल के कर्क रेखा स्थित जगह पर एक ज्योतिष वैधशाला का निर्माण कराया जाए। जिसमें सभी प्रकार के ज्योतिषीय शोध किए जाएं। जहां पर सभी प्रकार की सूर्य घड़ियां, नक्षत्र एवं तिथि, काल संकेतक भी शोध में सहायता कर सकें, एवं इस शोध केंद्र में जगह-जगह के पर्यटक ज्योतिष प्रेमी आकर ज्योतिष ज्ञान प्राप्त कर सकें।

इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए ब्रह्मचारी गिरीशजी महाराज द्वारा अश्वस्त किया गया कि भविष्य में वैधशाला का निर्माण कर्क रेखा पर किया जाएगा तथा पंचांग-कैलेंडरों में सनातन व्रत त्योहारों में आई भिन्नताओं को दूर करने के उद्‌देश्य से एक **महर्षि सनातन व्रत त्योहार** पंचांग सूत्र का निर्माण किया जाएगा। जिसमें निर्णय सिन्धु, धर्म सिन्धु आदि प्राचीन धर्म ग्रंथों के आधार पर व्रत त्योहारों का सटीक उल्लेख किया जाएगा। जिससे व्रत-त्योहारों में भ्रम की स्थिति दूर होगी। इस संबंध में शीघ्र ही एक कमेटी का गठन किया जाएगा। ज्योतिष मठ संस्थान एवं उपस्थित आचार्यों, पंचांगकारों द्वारा श्री ब्रह्मचारी गिरीशजी का स्वागत अभिवंदन वेद मंत्रों से किया गा।

श्रीराम मेडिकल स्टोर

टाऊन हाल के सामने सिमरिया चौक, सतना म.प्र.

फोन नं. 07672-403056

हमारे यहां सभी प्रकार की दवाईयां उचित रेट पर मिलती हैं। इमरजेंसी सेवा 24 घंटे उपलब्ध।

प्रो. सुरेश गुप्ता

मो.-989394245

ज्योतिष सम्मेलन एक नजर में

पं. श्री शिवार्चन शुक्लजी, अध्यक्ष श्री दुर्गा मंदिर समिति-डी सेक्टर नेहरू नगर का सम्मान।

पं. श्री राजाबाबू दुबेजी, वैदिक शास्त्री वृंदावन का सम्मान करते हुए श्री निलिम्प त्रिपाठीजी।

पं. श्री राकेश शास्त्रीजी भोपाल का सम्मान करते हुए श्री ब्रह्मचारीजी।

श्री विदुयाजी का सम्मान करते हुए श्री ब्रह्मचारीजी।

पं. श्री पचौरीजी का सम्मान करते हुए श्री ब्रह्मचारीजी।

अतिथिगण का सम्मान करते हुए हुए श्री ब्रह्मचारीजी।

पं. श्री प्रमोद पांडेजी दुर्गा मंदिर अशोका गार्डन भोपाल का सम्मान करते हुए श्री ब्रह्मचारीजी।

लोकप्रिय पार्षद श्रीमती संतोष जितेंद्र कसाना का सम्मान।

वास्तु खण्ड | इन वास्तु उपायों से खुलेगी समृद्धि की राह

मकान निर्माण या घर की सजावट करते हुए हमें वास्तु उपायों का ध्यान रखना चाहिए। इन उपायों को अपनाने से हमारी सकारात्मकता बढ़ती है और समृद्धि की राह भी खुलती है। कड़ी मेहनत और प्रयासों के बावजूद जब समृद्धि आपसे दूर रहती है तो अपने घर के वास्तु पर ध्यान देना चाहिए। यह संभावित है कि आपकी समृद्धि की राह की रुकावट के लिए घर का वास्तु जिम्मेदार हो। अगर घर में वास्तु दोष है तो आप कुछ आसान उपायों के जरिए उन्हें दूर करके संपन्नता की राह की रुकावट को दूर कर सकते हैं।

कुबेर धन के देवता माने जाते हैं और घर में आर्थिक संपन्नता के लिए उनकी कृपा और प्रसन्नता अहम है। वे आपसे प्रसन्न हैं तो आपको पर्याप्त धन और समृद्धि मिल सकती है। भगवान कुबेर को यदि प्रसन्न करना है और उनकी कृपा प्राप्त करना है तो व्यक्ति को वास्तु उपायों का पालन करना चाहिए। आर्थिक समृद्धि के लिए कुछ वास्तु उपायों का ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तु उपायों का ध्यान रखकर व केवल आप अपनी प्रसन्नता का स्तर बढ़ा सकते हैं बल्कि समृद्धि की राह भी तलाश सकते हैं।

तिजोरी की दिशा – अपने घर में तिजोरी को हमेशा दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम दीवार के करीब या नैऋत्य कोण में इस दीवार की अलमारी में रखना चाहिए। इस दिशा में तिजोरी होगी तो वह हमेशा उत्तर दिशा में खुलेगी। उत्तर भगवान कुबेर की दिशा है और उस दिशा में तिजोरी खुलने का अर्थ यही है कि धन के देवता कुबेर की कृपा से वह भरी रहेगी। तिजोरी या धन की अलमारी को किसी भी अन्य दिशा में रखने से बचें।

तिजोरी बीम के नीचे न हो : किसी भी हाल में धन या तिजोरी बीम के नीचे न हो। ऐसी स्थिति में तिजोरी रखने पर घर में सदैव आर्थिक संकट बना रहता है और बिजनेस में भी नुकसान की आशंका आप पर मंडराती रहती है।

तिजोरी के सामने आईना : धन को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले उपायों में यह भी एक उपाय है। जब भी कांच में आप धन को देखते हैं तो वह आपको हमेशा दोगुना नजर आएगा। यह आपकी सकारात्मकता को बढ़ाने का एक उपाय है जो बहुत कारगर है।

उत्तर-पूर्व दिशा में स्वच्छता : यूं तो पूरे घर में ही सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि समृद्धि आपके घर में प्रवेश कर सके, लेकिन फिर भी उत्तर-पूर्व दिशा में किसी भी तरह का कचरा न हो इस बात का विशेष ख्याल रखें। इस हिस्से में सीढ़ियों के निर्माण से भी बचना चाहिए। उत्तर-पूर्व कोने में मशीनरी जैसी भारी चीजें रखने से बचना चाहिए।

उत्तर-पूर्व में ऊंची इमारत न हो : अपने घर या प्लाट के उत्तर-पूर्व दिशा में कोई ऊंची इमारत या मंदिर वगैरह न हो ऐसा घर चुनें। अगर ऐसा होता है तो धन का नुकसान होता है। अगर ऐसी स्थिति हो तो भी इसका तो बहुत ही ध्यान रखें कि उनकी छाया आपके घर या प्लाट पर न गिरे।

गोलाई से बचें – उत्तर-पूर्व कोने में घुमावदार दीवार के निर्माण से बचना चाहिए। इस दिशा में अगर बाउंड्री वॉल भी बनवा रहे हैं तो उसमें गोलाई न हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए। उसे सही कोण पर मोड़ देने के बारे में सतर्क रहें।

छत की ढलान : छत में हमेशा ढलान दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की तरफ होना चाहिए। घर बनाते समय इस बात का ध्यान रहे कि छत का उत्तर-पश्चिम हिस्सा थोड़ा ऊंचा हो।

दीवारों की मोटाई : इस बात का भी विशेष ध्यान रहे कि घर की दक्षिण और पश्चिम में स्थित दीवारें और बाउंड्री उत्तर और पूर्व की तरफ की दीवारों से ऊंची और मोटी होना चाहिए। यह उपाय भी समृद्धि दिलाता है।

सड़क से ऊंचा हो प्लाट : प्लाट खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह आसपास बनी रोड से ऊंचा हो। सड़क से निचली जगह पर होने वाला प्लाट अच्छा नहीं माना जाता और आर्थिक संकट का कारण बनता है।

दक्षिण-पश्चिम में ऊंचे-पेड़ : घर में समृद्धि के लिए दक्षिण-पश्चिम दिशा में ऊंचे पेड़ लगाए जाना चाहिए। ये वृक्ष अर्थ की स्थिरता पैदा करते हैं। किसी भी तरह के दुर्भाग्य को टालते हैं और परिवार पर आने वाले संकट को भी दूर करते हैं। ये पारिवारिक संपन्नता और व्यापार में लाभ के लिए उपयोगी वास्तु उपाय है।

घर का केंद्र रहे खाली : इस बात का ध्यान रहे कि आपके घर का केंद्रीय भाग या हिस्सा हमेशा खाली रहे। उस जगह पर कोई निर्माण नहीं करना चाहिए। इस जगह मंदिर जरूर बनवा सकते हैं। घर का यह हिस्सा ब्रह्मस्थान माना जाता है।

स्टोर रूम की दिशा : घर में हमेशा इस बात का ध्यान रहे कि दक्षिण-पश्चिम या पश्चिमी हिस्से में ही स्टोर रूम बनाया जाए ताकि समृद्धि की राह हमेशा खुली रहे।

खिड़कियों और दरवाजें की सफाई : अपने घर के दरवाजे और खिड़कियों को हमेशा साफ और स्वच्छ रखें क्योंकि घर में आने वाला धन का इससे सीधा संबंध है। ये साफ नहीं होने पर धन प्राप्ति के मार्ग में बाधा पहुंचती है ?

मुख्य द्वार की सज्जा : घर के मुख्य द्वार की सजावट अच्छी होना चाहिए ताकि समृद्धि बिना झिझक आपके घर में प्रवेश कर सके। इसके अलावा अपने घर के द्वार पर अपने नाम का नेम प्लेट भी होना चाहिए। इस हिस्से में अच्छी रोशनी और रंग-रोगन होना चाहिए।

पक्षियों के लिए दाना-पानी : ख्याल रहे कि आप घर के किसी एक हिस्से में पक्षियों के लिए थोड़ा दाना-पानी रखें। यह सकारात्मक ऊर्जा और धन को आमंत्रित करता है।

घर का रंग बैंगनी : अगर घर में जामुनी रंग हो तो धन आपकी तरफ आता है। इस रंग की पूर्ति के लिए घर में जामुनी रंग के पौधे भी लगाए जा सकते हैं। अगर जामुनी रंग के पौधे तलाशने में दिक्कत हो तो इस रंग के बर्तन में मनी प्लांट भी लगाया जा सकता है।

पं. श्री रामजीवन दुबे गुरुजी, श्री लक्ष्मीकात चेलानीजी, बड़ोदरा, पं. श्री विनोद गौतमजी एवं डॉ. श्री अनिल शर्माजी सम्मेलन के दौरान प्रसन्न मुद्रा में।

भागवत महाकथा के दौरान डॉ. अनिल शर्माजी, पं. श्री विनोद गौतमजी द्वारा प्रसिद्ध भागववार्य पं. श्री निलिम्प त्रिपाठीजी को ज्योतिष सम्मेलन की ग्रुप फोटो भेंट की गई।

ज्योतिष मठ संस्थान द्वारा प्रकाशित पंचांग की प्रति कथाकार महाराज श्री वैभव भटेलेजी एवं प्रसिद्ध समाज सेवी नेताद्वय, श्रीभगवानदास सबनानीजी भेंट करते हुए ज्योतिषवार्य पं. विनोद गौतमजी।

ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल द्वारा प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. त्रिपाठीजी पन्ना का सम्मान।

ज्योतिष सम्मेलन की सफलता के पश्चात प्रसन्न मुद्रा ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतमजी सपत्नीक।

धर्म ग्रंथों के धर्म शास्त्रीय वचन

(1) नान्दी श्राद्ध के बाद ऋतु मई हो तो गौदान तथा कूष्मांडी हवन करना चाहिए (2) विवाह के बाद एक वर्ष तक तिल, तर्पण, तीर्थयात्रा, मुण्डनादि श्राद्ध पिंडदान न करें (3) मलमास में तीर्थ, श्राद्ध होता है। लौहे पात्र में दान वर्जित है (4) रजस्वला स्त्री देवी पूजन के लिये पांचवे दिन शुद्ध होती है (5) व्रत, यज्ञ, विवाह आदि में नान्दी श्राद्ध के बाद सूतक नहीं लगता है (6) भाद्रपद पूर्णिमा को छोड़कर शेष पूर्णिमा को श्राद्ध निषेध है।

गया श्राद्ध – (1) विभक्त या अविभक्त सम्पत्ति में बड़े भाई के गया श्राद्ध करने पर भी उसके छोटे भाई को भी गया श्राद्ध करने का अधिकार है, मंझले भाई को भी गया श्राद्ध करने का अधिकार है। (2) यदि पिता जीवित हो तो पुत्रों को कोई भी श्राद्ध करने का अधिकार नहीं है। गया क्षेत्र में किसी तरह पहुंच जाये तो मात्र तर्पण कर सकते हैं।

स्त्री की क्रिया– स्त्री की सपिंड क्रिया पुत्र या पति ही कर सकता है और कृत्य दूसरे अधिकारी भी कर सकते है। विवाह न हुआ है तो पिता के अभाव में माता आदि को क्रिया करना चाहिये।

पुरूष की क्रिया – पुत्र के अभाव में पौत्र, उसके अभाव में प्रपौत्र, उसके अभाव में पत्नी, उसके अभाव में छोटे भाई, उसके अभाव में सौतेला बड़ा भाई, उसके अभाव में पुत्र वधु दाह सपिंड आदि क्रिया की अधिकारी है जो व्यक्ति पहले दिन क्रिया करें वही दस दिन का कृत्य करें 10 दिन की क्रिया के बीच नजदीकी अधिकारी भी आ जाये तो वह एकादशाह करें परन्तु चाहे कितनी भी देर हो और कितने ही दिन बीत जाये तो भी सपिंडकरण का अधिकार पुत्र के रहते हुये दूसरे को नहीं है।

त्रिज्येष्ठ विचार – प्रथम गर्भ से उत्पन्न (ज्येष्ठ) वर कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नही करना चाहिये। वर कन्या में कोई भी 1 द्वितीय गर्भ का हो तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ है। कृतिका नक्षत्र के सूर्य को त्यागकर त्रिजेष्ठ में भी दानादि से विवाह शुभ है दो सहोदर भाईयों का विवाह दो सहोदर कन्याओं के साथ नहीं करना चाहिये। एक ही वर को दो सहोदर कन्याओं को नही देना चाहिये, एक ही घर में एक साथ दो मांगलिक कार्य नहीं होते है, मण्डप एवं आचार्य बदलने पर हो सकते है। पुत्र के विवाह के बाद 6 माह के अन्दर कन्या का विवाह या उपनयन आदि मांगलिक कार्य एवं पितरों की श्राद्धादि क्रिया नहीं होती है संवत् बदलने पर हो सकती है।

सूतक विचार - विवाहादि उत्सव प्रारंभ हो जाने पर गोत्र में यदि मरण या जन्म हो जावे तो उस कार्य को अन्य गोत्री द्वारा उसी धान्य से पूरा कराने पर दोष नहीं होता है। वाग्दान होने पर दोनों कुलों के माता-पिता के मरण में 1 वर्ष तक अन्य मरण में छः मास तक विवाहादि नहीं होता है। 4 पीढ़ी तक यह विधान माना जाता है। सूतक के बाद विनायक शांति से 3 मास के भीतर हो सकता है।

संस्कार विचार – एक माता से उत्पन्न दो संतानों का मुण्डन आदि संस्कार एक साथ नहीं करना चाहिए। यवन (जुड़वा) संतान का हो जाये तब युंजाम मंत्र से हवन कराकर पंचगव्य पान करने पर शुद्धि होती है।

प्रसिद्ध संवत्सरों का उत्पत्तिकाल

यहूदी सन् ईसा पूर्व 7 अक्टूबर 3761, कलियुगाब्द 18 फरवरी 3102, रोमी सन् 21 अप्रैल 753, आसुरी बाबुली सन् 26 फरवरी 747, विक्रमाब्द संवत् 23 फरवरी सन् 57 ईसा पूर्व शुरू हुआ था।

ईस्वी के बाद जिन सनों का प्रचलन हुआ - शकाब्द 3 मार्च ईसा पश्चात 78, आरमेनीस 9 जुलाई 552 ई. हिजरी सन् 16 जुलाई 622 ई., पारसी सन् 10 जून 632 ई. में शुरू हुआ।

शक और संवत् का पारस्परिक परिवर्तन – संवत् में से 135 घटा देने से शकाब्द और शकाब्द में 135 जोड़ने से संवत् के वर्ष आ जाते हैं। विक्रम सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से और शक वर्षारंभ सायन मेषार्क दिन से शुरू हो जाता है। राष्ट्रीय चैत्रारंभ के साथ ही शकसंवत् शुरू होता है। जो कि प्रतिवर्ष 21 मार्च के आसन्न पड़ता है

सन् 1582 में रोम के 13वें पोप ग्रेगरी ने 5वीं अक्टूबर को 15 अक्टूबर किया था, तब से इस संशोधित सन् में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय विश्व के लगभग सभी देशों में ईसवी सन् तारीखों का प्रचार है। दो शताब्दी बाद कुछ संशोधन की आवश्यकता प्रतिलक्षित होगी।

रहस्य

चंद्रमा से प्रभावित होती हैं घटना-दुर्घटनाएं

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को मन का कारक ग्रह माना गया है। इसीलिए जितनी भी घटनाएं-दुर्घटनाएं होती हैं उन सब पर ज्योतिषकार चंद्रमा का विशेष प्रभाव होना मानते हैं। जिस तरह से चंद्रमा शुक्ल पक्ष में बढ़ता और कृष्ण पक्ष में घटता है यही स्थिति मानव मन की होती है। जिसके कारण मन के विचलित होने से कई बार बड़ी घटनाएं-दुर्घटनाएं हो जाती हैं। यह भी देखा गया है कि हर माह अमावस्या के आसपास सबसे ज्यादा घटनाएं-दुर्घटनाएं होती हैं, क्योंकि इस समय चंद्रमा कमजोर होता है और मानव मन को भी कमजोर बनाता है।

मानव जीवन में पल-पल कुछ घटित होता रहता है। यह समूची प्रकृति ही चलायमान सी प्रतीत होती है और चाहे प्राकृतिक क्षेत्र हो या मानवीय सभ्यता। घटना व दुर्घटनाएं घटित होती ही रहती हैं। ऐसा क्यों होता है? घटनाएं और दुर्घटनाएं घटित क्यों होती हैं, इसके पीछे मूल कारण क्या है? ऐसा जानने की जब हम अभिलाषा करते हैं तो शास्त्र पुराणों के तर्क जो भी हों, लेकिन ज्योतिष का यही सटीक तर्क है कि किसी भी घटना या दुर्घटना के पीछे चंद्रमा उसके मूल में होता है। चंद्रमा के कारण ही मानवीय घटनाएं या कहें कि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। असल में चंद्रमा को मन का कारक ग्रह माना गया है। जिस तरह से हमारा मन निरंतर चलायमान होता है उसी तरह से चंद्रमा का मूल स्वरूप कभी भी एक जैसा नहीं रहता। शुक्ल पक्ष में यदि चंद्रमा बढ़त लिए हुए होता है तो कृष्ण पक्ष में घटता नजर आता है। इसी आधार पर मनुष्य के मन की दशा बनती बिगड़ती है, जिसके परिणाम स्वरूप ही घटना या दुर्घटना की स्थिति बनती है। ज्योतिष कर्म करने वाले अनुभवी ज्योतिषी इस बात को भी अनुसंधानित करते हैं कि सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं एवं भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी या तो अमावस्या के आसपास होती हैं या फिर पूर्णिमा के इर्द-गिर्द। असल में चंद्रमा एक प्रभावी ग्रह है, जो कि समुद्र में भी ज्वार-भाटा लाने का कारण बनता है। यहां हम इस बात को तर्ककांकिक कर सकते हैं कि जब चंद्रमा समुद्र में ज्वार-भाटा ला सकता है तो मनुष्य के हृदय पर क्या कुछ असर नहीं डाल सकता। यही कारण है कि अमावस्या और पूर्णिमा के आसपास मनुष्य का मन या तो बहुत मजबूत होता है या फिर बहुत कमजोर। जब मन मजबूत होता है तो कई मर्तबा अच्छे कार्य भी संपन्न हो जाते हैं। अन्यथा मन जब कमजोर होता है तो निर्णय क्षमता भी कमजोर पड़ जाती है और घटना की जगह दुर्घटना घटित हो जाती है। इस बात को हम एक कार चलाने वाले ड्रायवर से समझ सकते हैं। जो कि सड़क मार्ग पर अपना वाहन दौड़ाते हुए पल-पल में अन्य वाहनों से चुनौतियों का सामना करता और वाहन चालन के नियमों का पालन करते हुए पल-पल में निर्णय भी लेता है। जो कि मन पर ही आधारित होते हैं। एक ड्रायवर द्वारा दौड़ते वाहन को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी होती है, लेकिन जब उसका मन कमजोर पड़ता है और वह उसे एक पल में जबकि सड़क पर खतरे से बचना है और गलत निर्णय हो गया तो दुर्घटना हो जाती है, जो कि न केवल धनहानि बल्कि जनहानि का भी कारक बन जाती है। यही वजह है कि अमावस्या व पूर्णिमा के आसपास सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं देखने में आती हैं। फिर चाहे वो सड़क दुर्घटना हो या फिर कोई अन्य प्राकृतिक दुर्घटना।

ज्योतिष सम्मेलन की रूप रेखा

मध्यप्रदेश संस्कृति संचालनालय के मुखिया श्री मनोज कुमार श्रीवास्तवजी के मन में विगत दो-तीन वर्षों से व्रत-त्योहारों में भिन्नताएं होने की बात समझ में नहीं आ रही थी। उनका कहना था कि जब ज्योतिषी सूर्य चंद्र ग्रहण के सेकेंडों का वर्णन करते हैं तो क्या व्रत-त्योहार में एक रूपता क्यों नहीं हो सकती है। उपरोक्त विचारों के साथ ज्योतिष मठ संस्थान के संचालक ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम से विचार मंथन हुआ। पश्चात निर्णय हुआ कि क्यों न व्रत-त्योहारों में एकरूपता लाने के उद्देश्य से ज्योतिष सम्मेलन करवाया जाए। प्रस्ताव पारित होते ही ज्योतिष मठ संस्थान ने मध्यप्रदेश संस्कृति संचालनालय के सहयोग से इस सम्मेलन को करवाने का निश्चय किया। जिसमें आगे चलकर महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय, काली मठ संस्थान, वैदिक ब्राह्मण युवा संगठन, इंडिया फर्स्ट न्यूज, स्वराज न्यूज, धर्मनगरी समाचार पत्र, रंगकृति संस्थान भी सहयोगी के रूप में हमसे जुड़ गये। फलस्वरूप महर्षि ध्यान केंद्र भोपाल में सफल ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जा सका। इस हेतु हम संस्कृति के सुसंस्कृत मुखिया श्री मनोज श्रीवास्तव का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

संस्कृति के सुसंस्कृत मुखिया

मनोज कुमार श्रीवास्तव - एक परिचय

एक कुशल प्रशासक की बुद्धि तथा एक दक्ष साहित्यकार जैसे हृदय के संयुक्त रूप का नाम है मनोज कुमार श्रीवास्तव। इन्होंने एम.ए हिन्दी साहित्य में उपाधि प्राप्तकर भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस) में 1987 में आए। इससे पूर्व सहायक प्राध्यापक एवं सहायक आयुक्त, आयकर विभाग, मुंबई के रूप में अपना अवदान शिक्षा और राष्ट्र को देते रहे। आई.ए.एस बनने के बाद में एस.डी.ओ. अतिरिक्त कलेक्टर, प्रशासक, कलेक्टर, आई. जी. पंजीयन एवं मुद्रांक, चेयरमैन प्रबंध निदेशक, विद्युत वितरण कंपनी, पूर्वी क्षेत्र, मध्यप्रदेश, आयुक्त, भू-अभिलेख, आयुक्त, आबकारी, सदस्य, राजस्व मंडल, सचिव, संस्कृति, न्यासी सचिव, भारत भवन, आयुक्त एवं सचिव जनसंपर्क, आयुक्त, भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग जैसे पच्चीसों विभागों के दायित्वों को सफलता एवं समर्पण के साथ निभाते हुए संप्रति -प्रमुख सचिव (संस्कृति, वाणिज्य) म.प्र. शासन, मंत्रालय, भोपाल के पद पर वर्तमान में आसीन हैं।

इनके रचना संसार में 'मेरी डायरी से', 'यादों के संदर्भ', 'पशुपति' जैसे पाँच कविता संग्रह हैं तो 'शिक्षा में सन्दर्भ और मूल्य', 'वंदेमातरम, 'सुन्दरकांड (पांच खंड)' जैसे विवेचनात्मक एवं व्याख्यात्मक सात कृतियाँ हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की अद्भुत शोभाएँ है।

'अक्षरम' द्वारा इनकी प्रतिभा और समर्पण के प्रति सम्मान करते हुए इन्हे अंतरराष्ट्रीय हिन्दी उत्सव 2012 में 'अक्षरम् संस्कृति सम्मान' से अलंकृत किया गया है। आपकी सोच सकारात्मक एवं अद्वितीय है।

कविकृत, कवियों द्वारा अपनाई गई पूरे देश में हजारों कवियों के हृदय में राज करने वाली

समसामायिक साहित्य का मासिक दस्तावेज

अवश्य पढ़ें

शिवम्

प्रधान संपादक
निरुपम तिवारी
मो.-9425649435

e-mail : shivam.vinodtiwari@gmail.com,

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंहजी चौहान ने पंचांग में उल्लेखित सत्य भविष्यवाणियों की सराहना की।

महाकाल मंदिर परिसर में प्रमुख पुजारीजी द्वारा पंचांग को सम्मान प्राप्त हुआ।

माननीय श्री जयंत मलैया एवं माननीय श्री बाला बच्चन द्वारा पंचांग की सराहना की गई।

पंचांग के संपादक डॉ. प्रकाश गौतमजी का मा. जयंत मलैया, मा. प्रहलाद पटेल ने सम्मान किया।

डॉ. राजेंद्र शुक्लजी, मा. श्री नारायण त्रिपाठीजी को कैलेंडर भेंट किया।

राजमाता महारानी श्रीमती दिलहर कुमारी जी का आगमन ज्योतिष मठ संस्थान में हुआ। साथ में राजकुमारी कृष्णा राजे जी।

सुप्रसिद्ध डॉ. श्री टीएन दुबे ज्योतिष मठ संस्थान में पंचांग का विमोचन करते हुए।

पूर्व संस्कृति मंत्री मा. श्री लक्ष्मीकांत शर्माजी को कैलेंडर की प्रति भेंटकर शुभकामनाएं दीं।

जूना अखाड़े के महाँमंडलेश्वर अवधूत बाबा अरुण गिरिजी महाराज

ऋषिकेश आश्रम

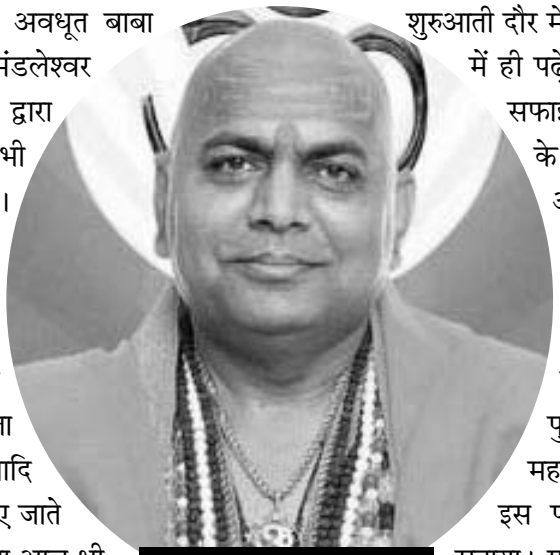

अवधूत बाबा

आश्रम के प्रधान सेवक

ऋषिकेश में पशुलोक स्थित अवधूत बाबा आश्रम है। जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर अवधूत बाबा अरुणगिरि महाराज द्वारा स्थापित इस आश्रम में लगभग सभी प्रकार की नवस्पतियां मौजूद हैं। आश्रम में जहां आम के फलों की बहार में पक्षी कोलाहल करते हैं वहीं रातरानी के अनगिनत पेड़ वहां की हवा को सुगंधित बना देते हैं। आश्रम में स्थित यज्ञ शाला में पूरे वर्षभर यज्ञ-अनुष्ठान आदि कार्य वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा किए जाते हैं। कई वर्ष पूर्व से प्रज्वलित धूना आज भी संत-महात्माओं एवं दर्शनार्थियों के लिए प्रज्वलित है। धूने के बगल से ही साधना कक्ष में अनेक ऋषि मुनियों के चित्र लगे हुए हैं। आश्रम में भक्तों की सुविधा के लिए सभी प्रकार से सुसज्जित आवास उपलब्ध रहते हैं। यहां पर 500 भक्तों के लिए रुकने की व्यवस्था है।

मई माह में मुझे हरिद्वार एवं ऋषिकेश गंगा दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। जिज्ञासावश में श्री अवधूत बाबा आश्रम भी गया। वहां पर दो दिन रुकने के पश्चात पता लगा कि बाबाजी की साधना स्थली यहां से कुछ ही दूर 72 सीढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। मन के भावों ने उस साधना स्थली पर जाने को मुझे मजबूर कर दिया। वहां पर अन्य संत पुजारियों ने चर्चा के दौरान बताया कि शुरुआती दौर में अवधूत बाबाजी इन्हीं 72 सीढ़ियों में ही पढ़े रहते थे इन्हीं सीढ़ियों की साफ-सफाई वे दिनभर करते रहे थे। तथा पास के ही शमशान में भोजन कर आते थे। अब आप यह तो समझ ही गए होंगे कि अवधूतों के शमशान का भोजन क्या है? ऐसा समय 20 साल उन्होंने ऋषिकेश स्थित 72 सीढ़ी स्थान पर बिताया। आश्रम के एक पुराने साधक ने बताया कि महाराजजी भजन बहुत अच्छा गाते हैं इस पर महाराजजी ने हमें भजन भी सुनाया। पश्चात उन्होंने बताया कि लगातार 30 साल सांसारिक जीवन से विरक्त रहा और अभी कुछ साल से सांसारिक जीवन में प्रवेश किया है। मैं कश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा हवन-रथ वाहन को लेकर विगत वर्ष 2016-17 में कर चुका हूं। अब सोमनाथ से रामेश्वरम की यात्रा करने की इच्छा है। इन यात्राओं से मेरा उद्देश्य पर्यावरण की शुद्धता का एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है। उनका कहना है कि यज्ञ ही जीवन है, जीवन ही यज्ञ है। आओ पेड़ लगाएं हम, सांसें हो रहीं हैं कम। ऐसे अनेक नारों का उपयोग करके पूरे देश में जन-जागृति सभी लोग फैलाएं। जिससे हमारे देश की संस्कृति एवं शुद्ध वायु की शुद्धता बनी रहे।

-ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

अवधूत बाबा आश्रम ऋषिकेश में महामंडलेश्वर श्री अवधूत बाबा अरुण गिरिजी महाराज द्वारा प्रसादित ज्योतिषाचार्य पं. श्री विनोद गौतमजी।

महामंडलेश्वर शिवांगी नन्दन नंदगिरीजी की शक्ति साधना

इलाहाबाद कुंभ में महामंडलेश्वर की उपाधि से विभूषित शिवांगी माताजी का व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं अलौकिक है। ऐसा लगता है कि उनके अंदर स्वयं माता शक्ति ने डेरा जमा रखा है। आपके द्वारा शक्ति साधना के अनेक प्रकार के सूत्रों का संपादन किया जा चुका है। आपके द्वारा कश्मीर से कन्याकुमारी की यात्रा यज्ञवेदी के साथ पूर्ण की जा चुकी है। आपकी अलौकिक तंत्र शक्ति का लोहा अनेक तांत्रिक एवं साधक मानते हैं। आपकी वाणी में स्वयं सरस्वती माता विराजमान हैं। आपकी तपोस्थली में अनेक प्रकार के वैदिक एवं कर्मकांडीय अस्त-शस्त्र साधना में सहयोगरत रहते हैं। आपके द्वारा महामंडलेश्वर 1008 अवधूत बाबा अरुण गिरि महाराजजी से दीक्षित होने के पश्चात इलाहाबाद, नासिक एवं उज्जैन के शाही स्नान की साक्षी बनी हैं। भोपाल स्थित कैरवा डेम आश्रम, पचमढ़ी आश्रम एवं उज्जैन आश्रम के साथ हरिद्वार एवं ऋषिकेश आश्रम में आपके भक्तों का निरन्तर आना-जाना लगा रहता है। आपके द्वारा 1100 कुंडीय यज्ञ अनेकों जगह सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं। आपकी साधना एवं तपस्या के प्रभाव से अनेक भक्त लाभांवित हुए हैं। देश-विदेश के श्रद्धालुओं सहित अनेक साधु-संत आपके मार्गदर्शन में अपना कार्य करते हैं। मेरे ऊपर एवं मेरे परिवार के ऊपर गुरुदेव के साथ माताजी की विशेष कृपा रही है। उनका स्नेह मुझे पुत्रवत प्राप्त हुआ है। जिससे में कृतार्थ हूं।

अंकुर ऋषिकेश

मा. श्री बाला बच्चनजी को कैलेंडर भेंट किया गया।

म.प्र. संस्कृति विभाग के सुसंस्कृत मुखिया श्री मनोज श्रीवास्तवजी को पंचांग की प्रति भेंट करते हुए।

पं. श्री देवेश शास्त्री मंगलनाथ मंदिर उज्जैन का सम्मान।

मुख्यमंत्री निवास में कुंभ रहस्यम की प्रति भेंटकर महामृत्युंजय प्रसाद देते हुए पं विनोद गौतम।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित आईजी श्री आर.डी. प्रजापतिजी का ज्योतिष मठ में सम्मान किया गया।

मंगलनाथ मंदिर के महंत अक्षय भारतीजी द्वारा मंगलमूर्ति भेंटकर ज्योतिष मठ का सम्मान किया।

आयुर्वेद ज्ञान : देसी नुस्खे

सर्दी होने पर - त्रिकुटी चूर्ण शहद के साथ सुबह-शाम लेने से सर्दी से राहत मिलेगी। यह दवा आप घर में भी बना सकते हैं। सोंठ, पीपरामूल व कालीमिर्च तीनों को बराबर मात्रा में कूट-पीसकर महीन कपड़े से छान लें। आपकी त्रिकुटी तैयार है।

खांसी आने पर - अदरक एवं लोंग को भूंजकर गुड़ के साथ खाएं रात्रि में सोते वक्त काली मिर्च 3 दाने, लोंग 3 दाने अलग-अलग दाड़ों में दबाकर रखें। सुबह खांसी छूमंतर।

बुखार आने पर - पानी, तेल को बराबर मात्रा में थाली में रखकर फेंटें। उस फेंट को मरीज के सम्पूर्ण शरीर पर लेपन करें। तत्पश्चात गीली तौलिए से सिर की ओर से लेकर नीचे पैर तक उतारा करें, बुखार में आराम मिलेगा।

दर्द-पीड़ा होने पर - हल्दी, प्याज का लेप बनाकर दर्द वाले स्थान पर लगाएं, राहत प्राप्त होगी।

पेट दर्द होने पर - काला नमक भुंजी हुई अजवाइन के साथ नींबू के साथ एक गिलास पानी में एक चम्मच डालकर पीने से पेट दर्द से राहत मिलेगी।

सिर दर्द होने पर - गीले कपड़े की पट्टी बनाकर उसमें पिपरमेंट लगाकर सिर के चारों तरफ लपेटने से सिर दर्द में तत्काल आराम मिलेगा।

दस्त लगने पर - एक कप गरम चाय में एक कप ठंडा पानी मिलाकर पीने से तत्काल दस्त बन्द हो जाएंगे। दही और केले का सेवन करने से भी आराम मिलता है।

मल रुकाव होने पर - आंवला, हर्रा, बहेड़ा को कूटकर चूर्ण बना लें और उसमें हींग, अजवाइन मिलाकर रात्रि में पानी से भिगोएं। सुबह उसी जल को ग्रहण करें। ऐसा नियमित करने से पेट के सभी रोग समाप्त हो जाएंगे।

बच्चों के दांत निकलने पर - पीपरामूल को घिसकर शहद में मिलाकर बच्चों के मसूढ़ों में लगाएं। काले धागे में चांदी के पांच दांत बनवाकर गले में पहना दें इससे बच्चे के दांत बगैर दुख-तकलीफ के आराम से निकल आएंगे।

बिच्छू के काटने पर - बैरी की पत्तियां तोड़कर अपने गदेली से मसलें और उसका रस जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो उसके दोनों कानों में निचोड़ दें तथा बचा हुआ रस पत्तों सहित जीभ के नीचे दबा दें। तत्पश्चात प्याज को पीसकर हल्दी मिलाकर बिच्छू के काटे गए स्थान पर लेप कर दें। इस प्रक्रिया से तत्काल आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होंगे।

मासिक धर्म - महिलाओं को मासिक धर्म की रुकावट यदि उम्र से पूर्व हो गई हो तो अजवाइन 10 ग्राम पुराना गुड़ 50 ग्राम, 200 ग्राम जल में अच्छी तरह पकाकर सुबह-शाम सेवन करने से मासिक धर्म प्रारंभ हो जाता है तथा गर्भाशय की शुद्धि हो जाती है।

मस्से-यदि आप मस्सों से परेशान हैं तो दोपहर खाने के बाद एक ग्लास छाछ में 2 ग्राम पिसी हुई अजवाइन सेंधा नमक मिलाकर पीने से मस्सों से छुटकारा मिलता है।

अदरक का प्रयोग - अदरक उल्टी रोकने में काफी मददगार है यह भूख भी बढ़ाता है। पीरियड्स में आराम देता है। सिर दर्द व गठिया में लाभकारी। डायबिटीज में आराम के साथ भोजन के स्वाद को दुगुना बना देता है।

सौन्दर्य निखार

चेहरे की सुन्दरता के लिए - प्रतिदिन ठंडे पानी से चेहरे को दो बार धोएं। बाजार में मिलने वाली मुलतानी मिट्टी के बराबर बेसन मिलाकर रख लें। नींबू निचोड़कर उसका लेप बना लें, प्रतिदिन स्नान करने के पहले इस लेप को लगाकर चेहरा धोएं।

आंखों की सुन्दरता के लिए - गुलाब जल को आंखों में डालें, साथ ही लौंकी अथवा ककड़ी को गोल काटकर दोनों आंखों की पलकों पर 15 मिनट तक रखें इसके पश्चात आंखें धो लें। कुछ दिनों बाद आपकी आंखें सुन्दर हो जाएंगी।

बालों की सुन्दरता के लिए - रीठा शिकाकाई को सहेजकर रखें, स्नान करने के पहले बालों पर मलें इससे निकलने वाले फैन को थोड़ी देर तक बालों में लगाएं रखें। तत्पश्चात आंवला अथवा सरसों का तेल बालों पर लगाएं, इसके बाद स्नान करें या बाल अच्छी तरह धो लें। इससे आपके बाल चमकीले, घने तथा मुलायम हो जाएंगे।

सिर के लिए - सिर में रूसी होने पर नींबू का रस लाभकारी है। साथ ही गुनगुने तेल में नींबू का रस मिलाकर लगाने से बाल स्वस्थ होते हैं।

नाखूनों के लिए - नींबू के छिल्के को कोहनी और नाखून पर रगड़ने से उसमें चमक आ जाती है और हमेशा नेल पॉलिश के कारण जो नाखूनों में पीलापन आ जाता है वह भी दूर हो जाता है।

आंखों में ताजगी के लिए - खीरे के टुकड़ों को आंखों के नीचे रगड़ने से काले धब्बे दूर हो जाते हैं। खीरे के रस को रुई में भिगोकर आंखों के ऊपर रखने से आंखों में ताजगी आती है। दूध क्लीनिंग्स मिल्क का काम करता है। इससे रोजाना चेहरे और हाथों की सफाई करने से रंग साफ होता है, सांवली त्वचा में भी निखार आता है। दूध में बेसन और चंदन का चूर्ण मिलाकर लगाने से चेहरे में चमक आती है।

ऐड़ी-पैरों की सुन्दरता के लिए - गुनगुने पानी की बाल्टी में वेसलीन मिलाकर 15 मिनट तक पैरों को बाल्टी में डुबाकर रखें तत्तपश्चात मुलायम तौलिए से पोंछ लें। ऐसा प्रतिदिन करने से आपकी ऐड़ियां और पैरों की सुन्दरता बढ़ेगी।

वैदिक ब्राह्मण युवा संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित वैदिक ब्राह्मणों के संग ज्योतिषाचार्य पं. श्री विनोद गौतमजी एवं संगठन के अध्यक्ष पं. श्री रामकिशोर वैदिकजी।

भोपाल स्थित हिन्दी भवन में कवि सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित कवियों के द्वारा पंचांग-2018 का विमोचन।

राजांचल टाइम्स

राजधानी भोपाल से प्रकाशित प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका

राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर आधारित *अवश्य पढ़ें।*

देश के सभी बुक स्टॉलों पर उपलब्ध।

प्रधान
संपादक
राजीव त्रिपाठी
मो.-9303108665

पता: राजांचल टाइम्स जी.एल.-373, अयोध्या नगर, भोपाल-41 (म.प्र.) ईमेल-**rajanchaltimes.yahoo.com**

स्वस्थ रहने के सहज एवं सरल तरीके

- सूर्योदय के कुछ पूर्व ही अमृतबेला में शुभ दर्शनकर उठना।
- उठने के बाद मल मूत्र त्यागने में देर या आलस्य नहीं करना।
- रोज दांत और जीभ साफ करना।
- शीतल जल से मुंह और आँखों को धोकर कुल्ला करना।
- पैदल चलकर प्रात: वायु सेवन या शक्ति के अनुसार व्यायाम करना।
- व्यायाम या वायु सेवन के बाद शरीर में तेल मालिश करना। सिर में रोज तेल लगाना। बीच-बीच में कान में भी तेल डालना।
- एक दिन बाद देकर दाढ़ी बनवाना। हाथ पैर के नाखून बढ़ने नहीं देना। सिर या शरीर पर अधिक बाल रखना हानिकारक है।
- उबटन या साबुन लगाकर अथवा शरीर को कपड़े से रगड़कर नीरोगावस्था में शीतल जल से नित्य स्नान करना लाभदायक है।
- स्नान के पश्चात् चन्दनादिका अनुलेपन हितकर है।
- कंघी से सिर के बालों को साफ रखना नेत्रों के लिए हितकारी है।
- शीशे में मुख देखना मंगलस्वरूप, कांति व आयुवर्द्धक है।
- स्वच्छ वस्त्र और सुगन्धित फूलादि धारणकर नित्यकर्म करना।
- आंखों में अंजन लगाना।
- भोजन घर और बर्तन गन्दा नहीं रखना। भोजन बनाने वाले को गन्दे और मैले वस्त्र नहीं पहनना चाहिए।
- भूख लगने पर रुचि अनुसार हल्का भोजन खूब चबा चबा कर खाएं। भोजन पूर्व और पश्चात् खड़ाऊ पहनना तथा पैरों को धोना शक्तिवर्द्धक है। इससे पावों के रोग नहीं होते। गरिष्ट भोजन हानि करता है। भोजन के आधे घंटे बाद पानी पीना बहुत लाभदायक है। ठण्डा भोजन हानिकारक है।
- भोजन करके कुछ देर लेटना। परिश्रम करना या सो जाना हानिकारक है। भोजन के बाद टहलना लाभकारी है।
- भोजन के उपरान्त ताम्बूल या चूर्ण आदि सेवन करना।
- वर्षा, धूप, हवा, धूल से बचने के लिये छाता लगाना।
- दोपहर को मौसम के अनुसार पके फल का सेवन लाभदायक है।
- सन्धया समय वायु सेवन करना लाभकारी है।
- सन्ध्या भोजन, दिया जलने के बाद, आठ बजे के पूर्व कर लेना चाहिए। रात को दिन के भोजन की अपेक्षा कम खाना।
- ज्यादा रात तक नहीं जागना। दस बजे तक सो जाना।
- सोने के पूर्व यथाशक्ति दूध का सेवन करना।
- हाथ पैर धोकर और अपने इष्ट देवता का स्मरण करके ही सोना चाहिए।

ऐसे होती है तन्दुरुस्ती में कमी

- **पेशाब रोकने से**- रुक-रुक कर आने लगता है। सरदर्द, पेटदर्द, कमर और पेशाब की बीमारियां पैदा होती हैं।
- **पाखाना रोकने से**- भगन्दर, पेटदर्द, पिंडलियों में दर्द, डकार, कब्ज, बुखार और मुंह से बदबू आने के रोग पैदा होते हैं।
- **वायु रोकने से**- पेशाब और पाखाने में खराबी, शरीर में सुस्ती और पेट की बीमारियां पैदा होती हैं।
- **डकार रोकने से**- हिचकी, खांसी, दिल व दिमाग की बीमारियां पैदा होती हैं।
- **भूख रोकने से**- क्षीणता, कमजोरी, अग्नि की कमी, भूख की कमी आदि रोग पैदा होते हैं।
- **छींक रोकने से**- गले की नसें अकड़ जाती हैं, सर में दर्द होता है। पक्षाघात होता है और शरीर कमजोर हो जाता है।
- **प्यास रोकने से**- गले, मुंह और ओठों में, खुश्की, सरमें चक्कर, सांस और दिल की कमजोरी पैदा करती है।
- **नींद रोकने से**- शरीर में दर्द, सर में दर्द, आंखों में भारीपन व दर्द पैदा होता है।
- **आंसू रोकने से**- जुकाम, निगाह में खराबी, दिल व दिमाग की कमजोरी और बेचैनी आदि रोग पैदा होते हैं।
- **जंमाई रोकने से**- सर, मुंह, आंख, नाक और कान आदि में वायु का विकार पैदा होते हैं।

काली मठ में पूर्व मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस श्री आर.डी. शुक्लाजी सपत्नीक पं. विनोद गौतम के साथ पूजन-अर्चन करने पहुंचे। पं. धनेश आचार्यजी द्वारा सम्मान किया गया।

ज्योतिष मठ संस्थान के यज्ञाचार्य पं. कैलाशचंद्र दुबेजी द्वारा श्री नीरज पांडेजी का गृह शांति अनुष्ठान संपन्न कराते हुए।

ज्योतिष मठ संस्थान के यज्ञाचार्य पं. कैलाशचंद्र दुबेजी स्वास्थ्य विभाग के पूर्व डायरेक्टर श्री पीएनएस चौहान जी से यज्ञ संपन्न कराते हुए।

ज्योतिष मठ संस्थान भोपल में उपस्थित भक्तगणों के साथ पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम।

INDIA FIRST℠
NEWS
WWW.INDIAFIRST.ONLINE
MISSION FOR THE NATION

चैनल हेड

आशुतोष गुप्ता

मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, मो. 9993942725

उज्जैन महाकाल मंदिर में अभिषेक पूजा हेतु संपर्क करें-

काल उसका
क्या करे, जो
भक्त हो
महाकाल का

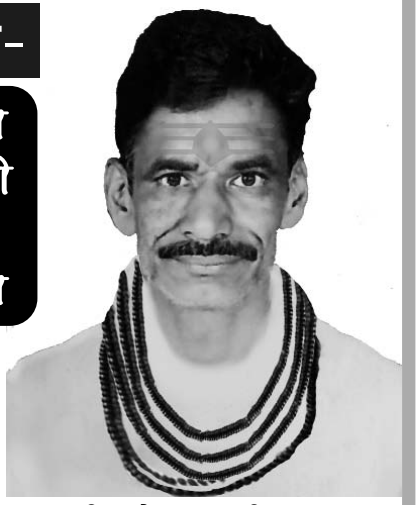

पं. श्री राजेश गुरुजी (व्यास)
मो.9301069887, 9111222109

मंगल शांति, भात पूजा के लिए संपर्क करें
पं. देवेश शास्त्री
मंगलनाथ मंदिर, उज्जैन
मोबाइल -9926026607

उज्जैन में कालसर्प पितृदोष आदि शांति के लिए संपर्क करें
पं. चेतन शास्त्री (गुलाटी गुरु)
सिद्धबट घाट, उज्जैन
मोबाइल - 9926053161

त्र्यंबकेश्वर में कालसर्प शांति के लिए संपर्क करें
पं. प्रसाद भाले राव
त्र्यंबकेश्वर धाम, नासिक
मोबाइल -9096955492

1 जून 2018 दमोह में एक धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन के अवसर पर डॉ. प्रकाश गौतमजी एवं मप्र के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहानजी पूजन-अर्चन करते हुए अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ।

मा. जनसंपर्क मंत्री श्री नरोत्तम मिश्राजी की धर्मपत्नी का ज्योतिष मठ में सम्मान।

26 जनवरी 2018 एवीएम स्कूल नेहरू में झंडा वंदन पर मुख्य आतिथ्य में पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी, स्कूल के डॉयरेक्टर श्री शैलेश जैनजी, अतिथि डॉ. अनिल शर्माजी, स्कूल की प्राचार्या सेन मैडमजी।

श्री अशोक नामदेवजी के द्वारा 108 सिक्कों का ॐ बनाकर ज्योतिष मठ को भेंट किया।

उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान के दौरान मंदिर के मुख्य पुजारी पं. श्री प्रदीप गुरूजी, पं. श्री विनोद गौतमजी, पं. श्री देवेंद्र दुबेजी, श्री सुरेश नामदेवजी के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहानजी की पत्नी श्रीमती साधना सिंहजी।

शिव रुद्राक्ष की महिमा

भगवान शिव पंचदेवों में प्रधान अनादि ईश्वर हैं। आगम-निगम आदि शास्त्रों के जनक भी हैं। अनन्त ब्रह्माण्ड के संहारक शिव मंगल दाता भी हैं। भस्म-योगी गण अपने ज्ञानपुंज की अग्नि के द्वारा अहंकार को दग्ध करते हैं। पंच महाभूत आदि सबको दग्ध कर इनको शुद्ध आध्यात्मिक भाव में परिवर्तन करते हैं। अग्नि उसको निर्विकार शुद्ध और शांत बना देती है। उसे भस्म कहते हैं। शिव की जटाओं में समाहित गंगा के तेज पुंज से जब इस भस्म का मिलन होता है तब शिव शक्ति की कृपा प्राप्त होती है। पांच मुख होते हैं शिवजी के ईशान, अघोर, तत्पुरुष, वामदेव, सद्धोज्याल।

रुद्राक्ष – पृथ्वी पर एक रुद्र तत्व, रुद्राक्ष शिव पुराण, पद्म पुराण आदि अनेक ग्रंथों में रुद्राक्ष की महीमा का वर्णन किया गया है। रुद्राक्ष सांसारिक दुखों एवं बाधाओं से छुटकारा दिलाता है। यह भी अकटय् सत्य है कि रुद्राक्ष पहनने वाले व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होती। यूं तो रुद्राक्ष अनेक प्रकार के होते हैं पर २१ मुखी रुद्राक्ष तक इस धरा में प्रमाण में आए हैं। परन्तु इनका स्पष्ट उल्लेख किसी धर्मशास्त्र में नहीं है। जिस जगह रुद्राक्ष की पूजा होती है वहां लक्ष्मीजी का वास सदा रहता है। रुद्राक्ष कार्य सिद्धि एवं कुंडली जागृति में सहायक माना गया है। रुद्राक्षधारी को यमराज का भय नहीं रहता। वही दीर्घायु हो जाता है। रुद्राक्षधारी को भूत-प्रेत, बाधा नहीं रहती। यह ब्रह्म हत्या के दोष का शमन करता है। रुद्राक्ष धारण करने से बांझ स्त्री भी पुत्रवती हो जाती है।

सावधानियां – रुद्राक्ष कटे-पिटे, खंडित, कांटों के बिना तथा बाजार में बनावटी रुद्राक्ष धारण न करें। जप आदि कार्यों के लिए छोटे दानों की माला का उपयोग करें। शुद्ध रुद्राक्ष की पहचान करने के लिए रुद्राक्ष को पानी में डालें, असली रुद्राक्ष डूब जाएगा जबकि नकली रुद्राक्ष पानी के ऊपर आ जाएगा।

रुद्राक्ष के महत्व

एक मुखी– साक्षात भगवान का स्वरूप है, जो सर्वश्रेष्ठ है। इससे भक्ति और मुक्ति दोनों प्राप्त होती हैं।

दो मुखी – यह शिव और शक्ति का स्वरूप है, इसे धारण करने से दम्पत्ति धन-धान्य और सत्संतति से युक्त होकर शांत व पवित्र गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं अर्थात दोनों में एकात्मय भाव उत्पन्न होता है।

तीन मुखी – यह साक्षात अग्नि का विग्रह है, इसे धारण करने वाला अग्नि के समान तेजस्वी हो जाता है। यह रुद्राक्ष ब्रह्मशक्ति, खुशहाली दिलाने वाला है।

चार मुखी – यह ब्रह्म का स्वरूप है, इसे धारण करने से सभी मानसिक रोग दूर हो जाते हैं। इसका धारक धनाड्य, आरोग्यमान व श्रेष्ठ माना जाता है।

पांचमुखी – पंच ब्रह्म स्वरूप है। इसके पास रहने से कोई दुख प्राणी को नहीं सताता व सब प्रकार के पाप मिट जाते हैं।

छः मुखी – स्कन्द के समान है जो विद्या प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है।

सात मुखी – यह लक्ष्मीजी का स्वरूप है जो धन संपत्ति, कीर्ति प्रदान करने वाला होता है।

आठ मुखी – यह गणेश का स्वरूप है, जो विजयश्री प्रदान करने वाला माना गया है। इसके धारण करने से विरोधियों का मन बदल जाता है।

नौ मुखी – यह धर्मराज का स्वरूप है, इसे धारण करने से सहनशीलता, वीरता, साहस कर्मठता में वृद्धि होती है तथा संकल्प में दृढ़ता आती है तथा किसी प्रकार से यमराज का भय नहीं रहता।

यात्रा संस्मरण

सूर्य साधना का केंद्र कोणार्क मंदिर

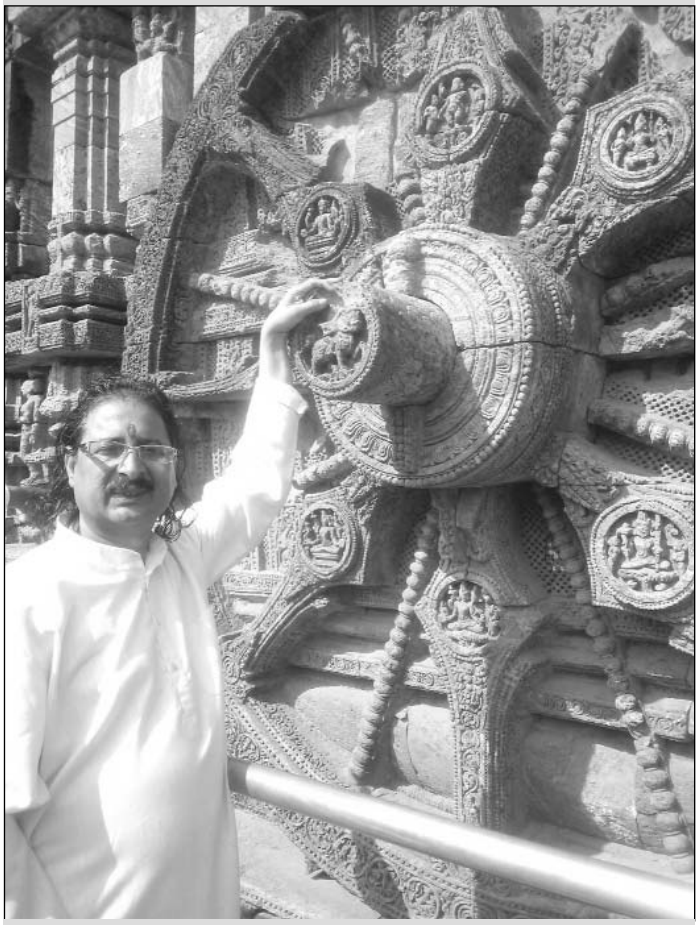

कोणार्क सूर्य मन्दिर भारत में उड़ीसा राज्य के पुरी जिले के अन्तर्गत पुरी नामक शहर में प्रतिष्ठित है। यह भारतवर्ष के चुनिन्दा सूर्य मन्दिरों में से एक है। सन् 1984 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी है।

पौराणिक महत्व

यह मन्दिर सूर्य-देव अर्थात अर्क को समर्पित था, जिन्हें स्थानीय लोग बिरंचि-नारायण कहते थे। इसी कारण इस क्षेत्र को उसे अर्क-क्षेत्र या पद्म-क्षेत्र कहा जाता था। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को उनके श्राप से कोढ़ रोग हो गया था। साम्ब ने मित्रवन में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर कोणार्क में, बारह वर्षों तक तपस्या की और सूर्य देव को प्रसन्न किया था। सूर्यदेव, जो सभी रोगों के नाशक थे, ने इसके रोग का भी निवारण कर दिया था। तदनुसार साम्ब ने सूर्य भगवान का एक मन्दिर निर्माण का निश्चय किया। अपने रोग-नाश के उपरांत, चंद्रभागा नदी में स्नान करते हुए, उसे सूर्यदेव की एक मूर्ति मिली। यह मूर्ति सूर्यदेव के शरीर के ही भाग से, देवशिल्पी श्री विश्वकर्मा ने बनायी थी। साम्ब ने अपने बनवाये मित्रवन में एक मन्दिर में, इस मूर्ति को स्थापित किया, तब से यह स्थान पवित्र माना जाने लगा। भगवान सूर्य की पहली किरण मंदिर के गर्भगृह में स्थित मध्य स्थान पर पड़ती है। मंदिर में 12 रथों के पहियों द्वारा समय का ज्ञान प्राप्त होता है।

कोणार्क में पाषाण कला

यह कई इतिहासकारों का मत है, कि कोणार्क मंदिर के निर्माणकर्ता, राजा लांगूल नृसिंहदेव की अकाल मृत्यु के कारण, मंदिर का निर्माण कार्य खटाई में पड़ गया। इसके परिणामस्वरूप, अधूरा ढांचा ध्वस्त हो गया। लेकिन इस मत को एतिहासिक आंकड़ों का समर्थन नहीं मिलता है। पुरी के मदल पंजी के आंकड़ों के अनुसार और कुछ 1278 ई. के ताम्रपत्रों से पता चला, कि राजा लांगूल नृसिंहदेव ने 1282 तक शासन किया। कई इतिहासकार, इस मत के भी हैं, कि कोणार्क मंदिर का निर्माण 1253 से 1260 ई. के बीच हुआ था। अतएव मंदिर के अपूर्ण निर्माण का इसके ध्वस्त होने का कारण होना तर्कसंगत नहीं है। यहाँ पर मन्दिर की ध्वस्तता के सम्पूर्ण कारणों का उल्लेख करना जटिल कार्य से कम नहीं है। परन्तु यह सर्वविदित है कि अब इसका काफी भाग ध्वस्त हो चुका है। जिसके मुख्य कारण वास्तु दोष भी कहा जाता है परन्तु मुस्लिम आक्रमणों की भूमिका अहम रही है।

गुरु बहाते हैं जीवन में ज्ञान की गंगा

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु पूजा का विधान है। गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है। इस दिन प्रात: से ही गुरुपूजा, पादुका पूजन, हवन भंडारे का दौर शुरु हो जाता है। यह दिन ज्ञान प्रदान करने वाले गुरुओं का है। वैसे गुरुओं के बारे में कहावत है कि सच्चा गुरु कभी गुरु नहीं होता। वह हमेशा शिष्य ही रहता है। उसमें हमेशा ही कुछ सीखने और पाने की लालसा ताउम्र बनी रहती है। इसीलिए वह गुरु होकर भी शिष्य बना रहता है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं। जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु-चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

पिछले वर्ष गुरु पूर्णिमा का आयोजन श्यामा डांडा जिला पन्ना स्थित गुरुजी के आवास में संपन्न हुआ। जिसमें जिले से भारी संख्या में भक्तगण उपस्थित हुए। गुरुजी के उपस्थित हुए प्रमुख शिष्यों में श्री लक्ष्मण पाठक, इंदिरा पाठक अमानगंज, श्री भरतसिंह परमार पन्ना, श्री सुरेंद्र सिंह कंपनी वाले कटनी सपत्नीक, बड़े कुशवाहजी कटनी, श्री प्रभात परिहार सपत्नीक, महिला बाल विकास अधिकारी, श्री गुप्ताजी जशो, कला बहनजी जशो, प्रीतमलाल कुशवाह पिपरोखल, श्री सुरेश गुप्ता, श्री मोहन गुप्ता, श्री ईश्वरदीन पाठक-गुनौर, सरपंच श्री ब्रजमोहन तिवारी-गुनौर, श्री आरके श्रीवास्तव-पूर्व प्राचार्य पालीटेक्निक-सतना, तिवारीजी टोराह, ठाकुर साहब सागर के अतिरिक्त आसपास के निवासरत सभी शिष्यों ने महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसादी प्राप्त की। यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिन भी है। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और उन्होंने चारों वेदों की भी रचना की थी। इस कारण उनका एक नाम वेद व्यास भी है। उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है। भक्तिकाल के संत घीसादास का भी जन्म इसी दिन हुआ था वे कबीरदास के शिष्य थे। शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है- अंधकार या मूल अज्ञान और रु का का अर्थ किया गया है- उसका निरोधक। गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन-शलाका से निवारण कर देता है। अर्थात अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को गुरु कहा जाता है।

गरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु:साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम:।।

गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक में कहा गया है कि जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी। बल्कि सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है। गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है।

भारतभर में गुरू पूर्णिमा का पर्व बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन काल में जब विद्यार्थी गुरु के आश्रम में नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण करता था तो इसी दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर अपने गुरु का पूजन करके उन्हें अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर कृतकृत्य होता था। आज भी इसका महत्व कम नहीं हुआ है। पारंपरिक रूप से शिक्षा देने वाले विद्यालयों में, संगीत और कला के विद्यार्थियों में आज भी यह दिन गुरू को सम्मानित करने का होता है। मन्दिरों में पूजा होती है, पवित्र नदियों में स्नान होते हैं, जगह जगह भंडारे होते हैं और मेले लगते हैं।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

Join

VINAY SHARMA'S

BRITISH
INSTITUTE

(An Institure of Spoken English and Personality Development)

अंग्रेजी बोलें... जैसे हिन्दी...

Special Batches For
School Going Children

Spoken Engliesh with Practical Grammer

Special Package On

PERSONALITY DEVELOPMENT
COMPETITIVE ENGLISH
GROUP DISCUSSION &
INTERVIEW SKILL

Vinay Sharma
Director

Our Branches-

New Market : 44, Luckey Plaza, Malviya Nagar, Bhopal
Mobile : 7771800901
M.P. Nagar : 112, Jaideep Complex, Zone-II
Mobile : 8109581700
Sonagiri : Above Kwaility Sweets Piplani
Mobile : 9630849685
H.B. Road : H-9, Nirupam State, Bagh Sevaniya
Mobile : 9644877221

www.britishinstitute.in

विश्लेषण

विवाह संस्कार केवल दो प्राणियों के द्वारा सृष्टि सृजन का अनुबंध ही नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन का सार्थक उत्थान व संस्कार भी है, जिसमें वर-वधु के जन्मांक चक्र के आधार पर कुंडली मिलान अवश्यंभावी है।

विवाह संस्कार में जरूरी होता है कुंडली मिलान

भारतीय मनीषियों ने विवाह संस्कार को गृहस्थ आश्रम का शुरुआती अंकुर मूल के रूप में परिभाषित किया है। महर्षि व्यास साहित्य में स्पष्ट है **गृहस्थात् परो धर्मो आश्रया सर्व आश्रमा।।** अर्थात सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ है तथा इसी से सभी आश्रम निर्मित हुए हैं। इसमें मनुष्य निर्माण की कारक विवाह संस्कार पहली कड़ी है। इसलिए इसकी शुरुआत दोष रहित करने के लिए कुंडली मिलान आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में कुंडली मिलान का बहुत बड़ा महत्व है। कुंडली मिलान – यानी उपयुक्त कल-पुर्जों की सही फिटिंग ही जिस प्रकार वाहनों को गतिमान बनाती है। उसी प्रकार कुंडली मिलान से मानव के जीवन के अदृश्य ग्रह, गुण, फल का मिलान हो जाने से दाम्पत्य जीवन तथा परिवारिक जीवन का अनुकूल सुख अनुभूत होता है। तथा गृहस्थ जीवन सृष्टि के सृजन में उत्तरोत्तर विकास करता है।

विचारणीय तथ्य है। एक कोट की फिटिंग किए बिना उपयोग में लाया गया कोट स्वयं के लिए तथा समाज के देखने में फूहड़पन प्रदर्शित करता है तथा स्वयं को संतोषप्रद नहीं होता। भले ही ठंडक दूर हो जाती हो। इसी प्रकार बिना ग्रह, गुण, योग मिलान के किया गया विवाह संस्कार शुभ फलकारी होना असंभव है। जब केवल 1 या 2 वर्ष के उपयोगी कपड़े की फिटिंग हेतु हम अच्छे दर्जी को तलाश कर लम्बाई, चौड़ाई, गला, सीना आदि हर पहलू पर फिट नाप तैयार करवाते हैं फिर भला समस्त जीवन की जोड़ी की फिटिंग के लिए उल्टा सीधा नाप बताकर फूहड़पन का क्यों निर्माण करें। विवाह संस्कार दो प्राणी के सृष्टि सृजन का अनुबंध नहीं है। यह मानव जीवन के सार्थक उत्थान का संस्कार ही विवाह संस्कार है। अतएव कुंडली मिलान से ही अभिलाषाओं की पूर्ति की कल्पना साकार होने के बीज अंकुरित होते हैं। यह कुंडली मिलान की क्रिया में गुण, ग्रह, योग, योनिवैर, गण, नाड़ी, दुर्द्वादश, नवमपंचक, षडाष्टक, स्वास्थ्य, आयु, संतान, इन 12 क्षेत्रों का मिलान किए जाने की विधाएं ऋषियों एवं भविष्य दृष्टाओं ने निर्मित की हैं तथा उनके कारण और निवारण भी दिए हैं, किन्तु हमारी यह बड़ी भूल है कि हम 12 में

से केवल गुण मिलान संख्या को ही कुंडली का मिलान कर अंधे के हाथी स्पर्शन परिणाम जैसे - ज्ञानपूर्ण है। कहावत है बहुत सारे अंधों ने हाथी के 1-1 अंगों का स्पर्श कर हाथी के विषय में बताया कि हाथी ऊपर मोटा नीचे पतला होता है पूछ वाले ने कहा हाथी बिल्कुल पतला डंडे जैसा होता है। पैर वाले ने कहा नहीं खाम (स्तंभ) जैसा होता है। यही विडंबना कुंडली मिलान पर भिन्न-भिन्न रूप से बनी हुई है। गुणों की संख्या का जितना महत्व है उतना ही ग्रहों के मिलान का भी दाम्पत्य जीवन के लिए महत्व है। सबकुछ ठीक मिलान होने पर स्वास्थ्य, आयु, संतान तथा दाम्पत्य जीवन के अन्य क्षेत्र भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं तथा योनि, गण, नाड़ी आदि भी उतने ही महत्वपूर्ण विचारणीय हैं। 36 गुण मिलें किन्तु लड़की में वैधव्य योग हो या लड़के को द्विभार्या योग हो तो क्या उत्तम मिलान मानेंगे यह शास्त्र सम्मत नहीं, यह सभी विचार सम्यक हों तभी कुंडली मिलान शास्त्र सम्मत कहा जाएगा तथा उसका फल सार्थक एवं सुखद होगा।

ज्योतिष मिलान केवल परंपरा का ही निर्वाह नहीं है अपितु भावी दंपत्ति के स्वभाव, गुण, प्रेम और आचार-व्यवहार के गुणों व संबंध के विषय में जानकारी प्राप्त करना है, जब तक समान आचार-व्यवहार वाले वर-कन्या नहीं होते तब तक दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो सकता। क्योंकि विवाह पूर्व ही अपने भावी जीवन साथी के स्वभाव आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। ज्योतिष की यह ग्रह, गुण, मिलान वाली वैज्ञानिक पद्धति एक वरदान समान सिद्ध हो सकती है।

योनि : योनि बैर से विवाद, तनाव, असंतुष्टि तो होती ही है, रोगित संतानों की उत्पत्ति या मानसिक शारीरिक विकृतियां तथा उनके रोगी होने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं। प्रकृति दत्त शारीरिक संगठन में योनि के अनुसार भावना तथा स्वभाव देखे गए हैं। एक महिष योनि की लड़की से मृग योनि के लड़के का संबंध करने से लड़की की भावनाओं तथा स्वभाव में विकृतियां आती हैं, फलत: 3 से 6 वर्ष के बीच लड़की के शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक शांति की धज्जियां उड़ने से भविष्य का जीवन भार रूप बनते देखा गया है। अत: मृग, वृषभ, गौ आदि योनियों का मिलान का लड़के व लड़कियों में उतना ही महत्व है जितना कि गुणों की संख्या का महत्व है।

वर्ण : वर्ण शंका से व्यक्ति के संबंध का बोध होता है। यदि ये सर्वोच्च न मिलें तो इसका प्रभाव दाम्पत्य जीवन के बीच लिए गए निर्णयों पर निरंतर परिवर्तन करता रहता है। यदि वर्ण न मिले तो 12 वर्ष के बीच में संबंध विच्छेद की संभावना प्रबल रहती है। वर्ण मिलान भावनाओं चर्याओं से संबंध रखता है, इसका निर्माण पंचांगों में राशि पतियों के वर्ण के अनुसार निर्मित होता है।

नाड़ी दोष : कुंडली मिलान में नाड़ी दोष की विवेचना। कुंडली मिलान में दोनों की एक नाड़ी नहीं होनी चाहिए नाड़ी का निर्माण नक्षत्रों की प्रकृति के अनुसार आदि, मध्य, अन्त्य नामों से है। जिसे क्रमश: पित्त, वात, कफ, पानी आदि में पित्त प्रधान का लड़का-लड़की होना निश्चय है। यदि दोनों आदि नाड़ी के हों तो (करेंट का योग) विष्फोट होता है। इसलिए एक नाड़ी लड़का-लड़की की हो तो विवाह न करें।

वश्य : कुंडली में चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर, कीट में से कोई एक वश्य होता है। यदि लड़का-लड़की में दोनों एक ही वश्य के हों, विचार के हों तो दाम्पत्य जीवन उत्तम रहता है तथा पुत्र संतति अधिक होगी। यदि वश्य विपरीत हो तो कन्या, अधिकांशत: शून्य की संभावना भी रहती है। संतान अवरोधकता को बल मिलता है जो कामसूत्र के ज्ञाताओं के अनुसार भी संतान सुख का पूरक नहीं है। अत: वश्य मिलान भी कुंडली के गुणों में सविचारणीय है।

तारा और भ्रकूट

जीवन की सफलताओं, आकांक्षाओं की पूर्ति पर अधिपत्य रखते हैं तथा सामान्य भौतिक सुख साधनों के बीच में रहकर भी उन दाम्पत्य जीवन की आनंद अनुभूति आजीवन प्राप्त करते रहते हैं। वस्तुओं एवं आकांक्षाओं की आपूर्ति का ख्याल स्वप्न में भी उनके दाम्पत्य जीवन में नहीं आता। पवित्र आचरण अनुरागपूर्ण व्यवहार तथा लोकोपकारी विचारों की अधिकता से उनका हृदय रूपी भंडार भरा रहता है। भले ही भौतिक सुख सुविधाओं की कमी हो। ऋषियों ने इन्हीं सब स्थितियों के शुभा-शुभ फलों की प्राप्ति हेतु गुण मिलान एवं ग्रह मिलान की यह अद्‌भुत विधि का निर्माण किया है जो कुंडली मिलान के द्वादश क्षेत्रों का मिलान सुख समृद्धि की भंडारता का कारण है।

दाम्पत्य जीवन के संकल्प : सात-पांच वचन

श्रीमती अनीता गौतम
योजना समन्वयक जल ग्रहण परियोजना
दमोह, म.प्र.

वर-वधू को विवाह की रस्में पूर्ण हो जाने के पश्चात् अपने कर्तव्य धर्म का महत्व भली-भाँति समझाने और उनका निष्ठापूर्वक पालन करने हेतु संकल्प के रूप में अलग-अलग प्रतिज्ञाएँ कराई जाती है, जिनके पूरी होने पर स्वीकृति स्वरूप दोनों से स्वीकार है, कहलवाने की प्रथा ब्रह्म वैदिक विवाह में है। विवाह संस्कार पद्धति के अनुसार ये सब प्रतिज्ञाएँ दाम्पत्य जीवन को खुशहाल एवं दीर्घजीवी बनाए रखने के लिए कराई जाती है।

वर के पांच वचन

1 मैं अपनी धर्मपत्नी को अर्धांगनी यानी अपने शरीर का आधा अंग समझूंगा और आज से उसका उतना ही ध्यान रखूंगा, जितना अपने शरीर के अंगों का रखता हूँ। पत्नी में किसी प्रकार के दोष, विकारों के कारण असंतोष व्यक्त नहीं करूंगा।

2 गृहलक्ष्मी का अधिकार पत्नी को सौंपकर उससे परामर्श करके ही जीवन की गतिविधियों और कार्यक्रमों की व्यवस्था करूंगा। अपनी आमदनी पत्नी को सोपूंगा और गृह-व्यवस्था हेतु खर्च में उसकी सहमति लूंगा।

3 पत्नी व्रत का पालन पूरी निष्ठा के साथ करूंगा और पर नारी पर बुरी नजर नहीं डालूंगा। न ही उससे संबंध जोडूंगा। पत्नी को मित्रवत् रखूंगा और पूरा-पूरा स्नेह दूंगा।

4 किसी के सामने पत्नी को लांछित, तिरस्कृत नहीं करूंगा। मतभेदों और भूलों का सुधार एकांत में बैठकर करूंगा। पत्नी के प्रति मधुरता का व्यवहार करूंगा। समझौता नीति का पालन करूंगा।

5 पत्नी के बीमार होने, असमर्थता की स्थिति, संतान न होने या जाने-अनजाने किसी गलत व्यवहार पर भी मैं अपने सहयोग और कर्तव्य पालन में कोई कमी नहीं लाऊंगा। पत्नी के व्यक्तित्व विकास में पूरी शक्ति लगाऊँगा और उसके साथ मधुर प्रेमयुक्त चर्चा तथा सद्व्यवहार का पालन करूंगा।

डॉ. प्रफुल्ल

वधु के सात वचन

1 मैं अपने पति के साथ अपना व्यक्तित्व मिलाकर, सच्चे अर्थो में अर्धांगिनी बनकर, नए जीवन की सृष्टि करूंगी। पति के परिजनों से मधुरता, शिष्टता, उदारतापूर्वक व्यवहार कर उन्हें प्रसन्न और संतुष्ट रखने में कोई कमी नहीं होने दूंगी।

2 परिश्रमपूर्वक गृह संचालन कर पति की प्रगति में सहायक बनूंगी और आलस्य को छोड़ दूंगी। पति के प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए, उनके अनुकूल रहूंगी और पतिव्रत धर्म का पालन करूंगी।

3 सेवा भावना, मधुर वचन बोलने, प्रसन्न रहने का स्वभाव बनाऊंगी। रूठने, कुढने और ईर्ष्या के दुर्गुण नहीं अपनाऊंगी।

4 मितव्ययता से अपना घर चलाऊंगी और फिजूलखर्चा से बचूंगी।

5 पति से विमुख न होऊंगी। उन्हे परमेश्वर मानूंगी। उनका साथ न छोडूंगी। उनका कभी अपमान नहीं करूंगी।

6 पति से हुए मतभेदों को एकांत में निराकरण करूंगी। उन्हें निंदात्मक रूप से प्रस्तुत नहीं करूंगी।

7 पति को सेवा और विनय द्वारा सदैव संतुष्ट रखूंगी। पति के मुझसे विमुख होने पर भी प्रतिफल की आशा किए बिना अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करूंगी।

मूल विचार

नवजात शिशु के जन्म के समय अगर अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती नक्षत्र पड़ रहा हो तब वह शिशु मूलक में जन्म लेता है। इनमें से अश्लेषा, मूल एवं ज्येष्ठा नक्षत्र के मूल पूर्ण मूलक होते हैं। मूलधारी नक्षत्रों में जन्म लेने वाले शिशु को मूल शांति तक निहारना पिता के लिए वर्जित है। पूर्ण मूलक नक्षत्रों की शांति 27वें दिन उसी नक्षत्र के आने पर की जाती है। साधारण मूल जैसे अश्विनी, रेवती, मघा की शांति 12वें, 8वें दिन भी कर सकते हैं।

मूल नक्षत्रों के चरणानुसार फलकथन सारणी

नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पितृ कष्ट	सुखी ऐश्वर्य	पद प्रतिष्ठा	मान-सम्मान
अश्लेषा	पितृ कष्ट	मातृ कष्ट	धन हानि	सुखकारी
मघा	मातृ कष्ट	पितृ कष्ट	शुभतापूर्ण	धन ज्ञानदायक
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	भाई को कष्ट	मातृ कष्ट	शिशु को कष्ट
मूल	शुभतापूर्ण	धन हानि	मातृ कष्ट	पितृ कष्ट
रेवती	राज सम्मान	पद प्रतिष्ठा	धन सुख प्राप्ति	अति कष्ट

रत्नों से रोगों का निदान

प्रकृति के द्वारा नव ग्रहों के समान ही नौ रत्नों की सम्पत्ति मानव को प्राप्त हुई है। ग्रहों के अनुसार ग्रह कृत रत्न धारण करने से जिस प्रकार हमे ग्रहों की सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। उसी प्रकार विभिन्न रोग व्याधियों में भी ग्रह कृत रत्नों का उपयोग करके लाभ प्राप्त किया जा सकता है। महर्षि चरक के अनुसार अधिकांश रोगों की उत्पत्ति बात, पित्त, कफ के असंतुलन के कारण होती है।

रत्न धारण करने की विधि

ग्रह दशा	रत्न	उपरत्न	धातु	धारण दिन	समय	अंगुली
सूर्य	माणिक	वैदूर्यमणि	सोना	रविवार	प्रात:	अनामिका
चन्द्र	मोती	सफेद हकीक	चांदी	सोमवार	सायं	कनि/अनामिका
मंगल	मूंगा	वैदूर्यमणि	चांदी	मंगलवार	दोपहर	अनामिका
बुध	पन्ना	हरा हकीक	सोना	बुधवार	दोपहर बाद	कनिष्ठा
गुरू	पुखराज	सुनेहला	सोना	गुरूवार	दोपहर बाद	तर्जनी
शुक्र	हीरा	सफेद हकीक	चांदी	शुक्रवार	प्रात:	अनामिका
शनि	नीलम	नीली	सोना	शनिवार	सायं	मध्यमा
राहू	गोमेद	लाजवर्त	चांदी	शनिवार	रात	मध्यमा
केतु	लहसुनिया	लाजवर्त	चांदी	शनिवार	रात	मध्यमा

यदि उपरोक्त तत्वों का संतुलन रखा जाये तो व्यक्ति आरोग्यता को प्राप्त होता है। गुरू और चन्द्रमा के असंतुलन से कफजनित रोग होते है, जिनके लिये पुखराज एवं मोती धारण किया जा सकता है। शनि राहू से बात जनित रोग होते है जिनके लिये नीलम, गोमेद एवं लहसुनिया धारण किया जाना उपयुक्त रहता है। सूर्य एवं मंगल के असंतुलन से रक्त पित्त से संबंधित रोग होते है जिनके लिये माणिक एवं मूंगा (प्रवाल) धारण किया जाना उपयुक्त रहता है। बुध से तीनों तत्वों से संबंधित रोग होते है। जिसके लिये पन्ना धारण किया जाना उचित रहेगा। शुक्र से मूत्र विकार वात संबंधित रोग होते हैं जिसके लिये हीरा धारण किया जाना उपयुक्त रहता है। ग्रहों की दशाओं के अनुसार भी रत्न धारण करना लाभप्रद माना गया है। ग्रह दशाओं की शांति हेतु ग्रहकृत जाप, अनुष्ठान एवं शांति कराना चाहिये। इसके बाद रत्न धारण कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। जिसका विवरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है।

रत्नों को उनके दिन में शुक्ल पक्ष में बताई गई धातु में बनवाकर उसकी पूजा करें। पूजन पंचोपचार से करें एवं अगूंठी को रात्रि में कच्चे दूध या गंगा जल में डुबोकर रखना चाहिये। फिर दूसरे दिन शुद्ध जल से स्नान कराकर चंदन, धूप, दीप, पुष्प, प्रसाद आदि से पूजा कर धारण करना चाहिये।

नवरत्नों का नवग्रह पर फल

रत्नों को धारण करने की प्रथा भारत वर्ष में बहुत ही प्राचीन है। इनके धारण से ग्रहों की पीड़ा, दुष्टों को नजर और बुरे स्वप्नों का नाश होता है तथा पाप और दुर्भाग्य से शान्ति मिलती है। माणिक, मोती , मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया में नव रत्न है। ''भाव प्रकाश'' आदि वैद्यक ग्रन्थ और ''शुक्रनीति'' के अनुसार ग्रहों पर इनके असर इस प्रकार हैं-

1 माणिक- इसे चुन्नी और लाल भी कहते हैं। इसका रंग लाल है। इसके धारण से सूर्य की पीड़ा शान्त होती है।

2 मोती- इसे मुक्ता भी कहते है। असली सफेद और निर्मल मोती ही धारण करने योगय है। इसके धारण से ''चन्द्रमा'' की पीड़ा शान्त होती है।

3 मूंगा- इसे प्रबाल और लतामणि भी कहते हैं। इसका रग कुन्दरू फल के सामान लाल होता है। गोल, चिकना, चमकदार, असली मूंगा धारण करने से मंगल पीड़ा शान्त होती है।

4 पन्ना- इसे मरकतमणि, हरितमणि और बुधरत्न भी कहते हैं। इसका रंग हरा होता है। इसके धारण से बुध की पीड़ा शान्त होती है।

5 पुखराज- इसे गुरूरत्न और पीतमणि भी कहते है। इसका रंग पीला एवं सफेद भी होता है। सुवर्ण की सी झलकवाला पीला पुखराज बृहस्पति की पीड़ा शान्त करता है।

6 हीरा- चार भांतिका होता है। सफेद, लाल, पीला और काला। सफेद हीरा सर्व सिद्धियों का दाता समझा जाता है। बेदाग स्वच्छ हीरा शुक्र की पीड़ा शान्त करता है।

7 नीलम- इसका नाम नीलमणि भी है। इसका रंग नीला तथा आसमानी होता है। शुद्ध नीलम के धारण से शनि की पीड़ा शान्त होती है। अशुद्ध नीलम का फल अशुभ होता है।

8 गोमेद- किसी कदर पीलाई और ललाई लिये हुए गौमूत्र के रंग का तथा काले कलर का भी होता है। गोमेद के धारण से राहु की पीड़ा शांत होती है।

9 लहसुनिया- इसे वंदूर्यमणि कहते है। बिल्ली की आंखों की सी इसमें कान्ति तथा कुछ लकीरें होती हैं। इसके धारण से केतु की पीड़ा शान्त होती है।

रत्नों में हीरा सबसे श्रेष्ठ रत्न समझा जाता है। मूंगा और गोमेद नीच समझे जाते है।

आदर्श फोटो कापी सेंटर

सुभाष चौक, रीवा (म.प्र.)

हमारे यहां ए-0 साइज तक कलर फोटोकापी एवं स्कैनिंग कलर प्रिंट आउट निकाले जाते हैं।

पी.के. धमीजा मो. 9424982991

सभी सरकारी कार्य कलेक्टर दर पर किए जाते हैं।

अनुसंधान : रुद्र वीसी का चौथा वर्ष संवत 2075

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम
ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर भोपाल मो. 9827322068

रुद्र बीसी का यह पांचवां वर्ष है। रुद्र बीसी से तात्पर्य शिव तांडव के आगामी बीस वर्ष से हैं, जिसमें प्रलयांकारी शिव अपनी तरह से इस प्रकृति को चलाएंगे जिसमें प्राकृतिक प्रकोप के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में समरसता खंड-खंड होगी, लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे होंगे, हिंसा भड़केगी एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध भी होंगे। जिससे अपार जन-धन की हानि होना तय है। ज्योतिषी और पंडितजन भृगु संहिता के आधार पर बताते हैं कि प्रकृति के बड़े परिवर्तन युग आधारित होते हैं, लेकिन छोटी अवधि के हिसाब से ब्रह्मा वीसी, विष्णु बीसी और रुद्र बीसी को 20-20 वर्ष के कालखंड में बांटा गया है। भृगु संहिता जैसे ज्योतिषीय ग्रंथ में 60 तरह के संवत्सरों का उल्लेख है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बीसी का तात्पर्य बीस-बीस वर्ष के अवधिकाल से बताया गया है। इस तरह देखा जाए तो रुद्र बीसी वर्ष 2013 में प्रारंभ हुई है जो कि आगामी सन् 2034 तक चलेगी, चूंकि रुद्र अर्थात शिव संहार के देवता है। लिहाजा 20 वर्ष संहारक माने जाएंगे। जिसमें प्राकृतिक प्रकोप व मानवीय उपद्रव, हिंसा व युद्ध जैसी परिस्थितियां निर्मित होना स्वाभाविक है। रुद्र बीसी के पहले वर्ष का प्रभाव केदारनाथ धाम में हुए प्रलय से समझा जा सकता है। दूसरे वर्ष पशुपतिनाथ, नेपाल-भारत में भूकंप से हजारों लोगों की मौत इसी रुद्र बीसी का प्रभाव है। तीसरे वर्ष महाकाल उज्जैन में प्राकृतिक प्रकोप से कुंभ मेले का तहस-नहस होना तथा वर्षा एवं बाढ़ के कारण मध्यप्रदेश सहित देश में जन-धन की हानि, एवं सामाजिक व राजनैतिक घटनाक्रम देखने में आ चुके हैं जो कि चौथी रुद्र बीसी का प्रभाव ही माना जा सकता है। आगे पांचवी रुद्रवीसी भी कष्टकारक रहेगी।

भोपाल के नेहरू नगर क्षेत्र स्थित ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम ने अपने अनुसंधान के आधार पर बताया कि रुद्र बीसी के चलते आने वाला समय भयावहतापूर्ण है और इस भविष्यवाणी का उद्घोष किसी तरह का भय उत्पन्न करना नहीं, बल्कि सचेत करने की दृष्टि से किया जाना आवश्यक है। रुद्र बीसी इसके पहले 1952 से 1972 के बीच आई थी जिसमें अनेक तरह के प्राकृतिक प्रकोपों के साथ-साथ भारत-चीन एवं भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ था। इधर पिछले वर्ष शुरु हुई रुद्र बीसी के पहले यानि 1993 से 2013 तक विष्णु बीसी का प्रभाव था विष्णु भगवान चूंकि जगत पालनहार देवता के रूप में जाने जाते हैं जिनके प्रभाव के चलते प्राकृतिक संपदा पर्याप्त रूप से इकट्ठा हुई और खेतों में फसलें भी अपेक्षा से कही ज्यादा हुईं। यहां तक कि गेहूं की उपज को लोग सुरक्षित नहीं कर पाए और हजारों टन गेहूं आसमान तले पड़ा-पड़ा खराब हो जाने के समाचार सभी ने पढ़ और सुने। इसके पूर्व 1973 से 1992 के बीच ब्रह्मा बीसी का प्रभाव था, चूंकि ब्रह्मा उत्पत्ति और सृजन के देवता माने जाते हैं इस तरह से देखा जाए तो इन वर्षों में जनसंख्या वृद्धि इस कदर हुई की चीन और भारत को इस पर कंट्रोल करने के लिए नसबंदी एक अभियान के रूप में शुरु करनी पड़ी। अब एक बार फिर यह समय रुद्र बीसी का है, जिसमें संहार के देवता शिव का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। ज्योतिषियों का कहना है कि यह रुद्र बीसी आरंभ से ही भयावह घटनाओं को सामने ला रही है। ये घटनाएं मानवीय एवं प्राकृतिक भी हैं। ऐसा लगता है कि भगवान शिव ने अपने संहारक अभियान की शुरुआत अपने ही धाम यानि केदारनाथ और फिर पशुपतिनाथ क्षेत्र से की है। जहां आई तबाही के घाव सदियों तक नहीं भर पाएंगे। जिस तरह से रुद्र ने अपनी तीसरी आंख खोली है उसमें सबसे पहले तीर्थ क्षेत्र ही निशाने पर दिख रहे हैं, जहां शास्त्र आधारित मान-मर्यादाओं का विखंडन हो रहा है। इससे ऐसा लगता है कि आने वाले 20 वर्ष बहुत ही संभल कर चलने के हैं क्योंकि इन दिनों में संहार से जुड़ी घटनाएं हर कभी सामने आएंगी। लिहाजा शिव उपासना ही इनसे बचने का एक मात्र उपाय है।

साढ़े साती एवं अढ़ैया शनि विचार सन 2018-19 ई.

२६ अक्टूबर २०१७ से शनि धनु राशि में प्रवेश करें चुके हैं। शनि अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल आदि नक्षत्रों में गतिचार रहेगा। शनि की राशि परिवर्तन की स्थिति के अनुसार साढ़ेसाती एवं अढैया का प्रभाव इस संवत में इन राशियों पर इस प्रकार से होगा।

वृश्चिक- इस राशि पर उतरती हुई साढ़ेसाती पैर पर चांदी के पाद पर रहेगी जिससे इस राशि वालों को व्यापार में वृद्धि, प्रशासन की ओर से भय होगा।

धनु - इस राशि पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव लोह पाद से हृदय पर होगा। जिससे रक्त पित्त विकार, स्त्री चिंता, गलत निर्णय से हानि, क्लेश संभव है।

मकर - इस राशि को शनि की अढ़ैया का प्रभाव ताम्रपाद से सिर पर रहेगा जिससे आर्थिक धन समृद्धि, मित्रों में मतभेद, चोट-चपेट वाहन भय कारक रहेगा।

वृष - इस राशि वालों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। भाई बंधुओं से विरोध पारिवारिक चिंता, शत्रुभय बना रहेगा।

कन्या - इस राशि वालों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, परन्तु चिन्ताओं से मन व्याकुल रहेगा।

अशुभ शनि शांति के उपाय

उपरोक्त शनि का विचार गोचर ग्रहों के आधार से है, फल का पूर्ण निर्धारण जन्म कालीन ग्रहों के आधार पर करना अनिवार्य है। जिनकी जन्म कुण्डली में शनि शुभफल प्रद हो अथवा अर्न्तदशा शुभ चल रही हो उनके लिये शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्म कुंडली में शनि अशुभ ग्रहों से युक्त अशुभ स्थानों में हो तो साढ़ेसाती और अढ़ैया शनि चिंता, पीड़ा, धन हानि, कार्य में विघ्न नेष्ट फल दायक होता है। शनि के अनिष्ट फल के निवार्णार्थ छायादान, शनि मंत्र का जाप, हवन, हनुमत पूजा, अभिषेक, तेलयुक्त सिन्दूर समर्पण कर भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य का दान, प्रति शनिवार को पीपल का पूजन करने तथा दीपक जलाने से शनि का अनिष्ट फल दूर होता है। साढ़ेसाती अढ़ैया शनि का विचार जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिये। केवल राशि से साढ़ेसाती शनि का विचार नहीं होता आंशिक रूप से शनि का प्रभाव चालू नाम की राशि पर भी पड़ता है। शनि का बीज मंत्रः !! **ॐ शं शनैश्चराय नमः** !!

1. लोहे की कटोरी में तेल लेकर अपनी छाया उसमें देखकर वह तेल पॉच शनिवार आक के पौधे पर डालें। पॉचवे शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल व कटोरी वही दबा दें। ॐ ऐं ह्रीं शनैश्चराय नमः मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें।
2. नीलम, काला हकीक अथवा काले घोड़े के नाल की अंगूठी धारण करना लाभकारी होगा। शनिवार को हनुमानजी का दर्शन करने से शांति होती है।
3. काला कपड़ा, उड़द की दाल, लोहा, सरसों का तेल, काले फूल का दान, शनि दशा में शुभ प्रभाव कारी माना गया है।
4. शिवजी को तांबे का सर्प चढ़ाना लाभकारी होता है। शमी पत्र, बेल पत्र नियमित चढ़ाएं। शिव मूर्ति का दान एवं शनि दान भी रक्षाकारी होता है।
5. शनि स्त्रोत का शनिवार को पाठ करना शनि के कुप्रभावों से रक्षा करता है। मन शांत रहता है।
6. रुमाल के आकार वाले काले कपड़े में पांच काली वस्तुएं जैसे लोहा, उड़द, कोयला, काजल, तिल, काली मिर्च आदि थोड़ी-थोड़ी मात्रा में रखकर पोटली बनाकर तीन बार सिर से घुमाकर शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद जल में विसर्जन करें।
7. शनीचरी अमावस्या, शनि जयंती एवं हनुमान जयंती आदि अवसरों पर यथायोग ब्राह्मण से शनि ग्रह की शांति विधान कराने से शनि से संबंधित पीड़ा समाप्त होती है। शनि की अंतर्दशा, महादशा में भी शनि शांति करवाने से लाभ होता है।

विशेष - जिन राशियों में शनि की साढ़ेसाती एवं अढैया का प्रभाव अथवा शनि की दशा का प्रभाव हो उन राशि वालों को श्रावण माह में शिव अभिषेक महामृत्युंजय जाप के साथ शनि की शांति अवश्य कराना चाहिए एवं वाहन से सावधानी रखनी चाहिए।

जरूर पढ़िए, आगे बढ़िए

पब्लिक प्रिंट

हिन्दी भाषा, हिन्दुस्तान की शान

संपादक
वैभव भटेले
मो.-9303139229

प्रधान कार्यालय :
जी-77/20, साउथ टीटी नगर, भोपाल,

विश्लेषणात्मक समाचार और ताजा तरीन मामलों की मासिक पत्रिका

राजनीति, धर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, शिक्षा, संस्कृति, कला, मनोरंजन, साहित्य और सामाजिक सरोकार से जुड़े सभी मामलों पर पैनी नजर।

मोबाइल नं. : 9303139229 e-mail : publicprintmagazine@gmail.com, Website : www.publicprint.in

कालसर्प योग और निवारण के उपाय

कालसर्प पितृदोष आदि शांति के लिए संपर्क करें
पं. चेतन शास्त्री (गुलाटी गुरु)
सिद्धबट मंदिर, उज्जैन
मोबाइल - 9926053161

सामान्यत: जन्म कुंडली में सारे ग्रह जब राहू और केतु के बीच में कैद हो जाते हैं तो उस ग्रह स्थिति को कालसर्प योग कहते हैं। राहू को सर्प का मुख माना गया है जबकि केतु को सर्प की पूछ। काल का अर्थ 'मृत्यु' है। यदि अन्य ग्रहयोग बलवान न हों तो कालसर्प योग में जन्मे जातक की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है और यदि वह जीवित भी रहता है तो मृत्यु तुल्य कष्ट भोगता है। ज्योतिष शास्त्र में इस योग के प्रति मान्यत: प्राय: अशुभ फलसूचक ही मानी गई है।

राहू-केतु का सर्प योग से संबंध

पौराणिक मत के अनुसार 'राहू' नामक राक्षस का मस्तक कट कर गिर जाने पर भी वह जीवित है एवं केतु उसी राक्षस का धड़ है। राहू एक ही शरीर के दो अंक हैं। चुगली खाने के कारण सूर्य-चंद्र को ग्रहण कर ग्रसित कर, सृष्टि में भय फैलाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में राहू को सर्प गया गया है और केतु उसी की पूछ है।

वृहसंहिता के राहू-राराध्याय अध्याय-3, श्लोक-3 में लिखा है कि 'मुख पुच्छ विभासंगं, भुजंग आकार मुपदिशन्त्यन्ये'। मुख और पूछ से विभक्त है अंक जिसका ऐसा जो सर्प का आकार है वही राहू का आकार है।' विक्रम की 16वीं शताब्दी में मानसागर नामक एक विद्वान हुए जिन्होंने फलित ज्योतिष के पूर्वाचार्यों के श्लोक संकलित कर 'मानसागरी' नामक सुन्दर ग्रंथ की रचना की। उन्होंने अरिष्टयोगों पर चर्चा करते हुए अध्याय-4, श्लोक 10 में लिखा- लग्नाच्य सप्तमस्थाने शनि-राहू संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्त शययानां स्वपितोपि च।। अर्थात सातवें स्थान में यदि शनि-सूर्य व राहू की युति होती है तो पलंग पर सोते हुए व्यक्ति को भी सांप काट जाता है। फलित ज्योतिष पर निरंतर अध्ययन-अनुसंधान करने वाले आचार्यों ने जब देखा कि सर्प के मुख-पुच्छ अर्थात राहू-केतु के मध्य सारे ग्रह अवस्थित हों तो जातक का जीवन ज्यादा कष्टमय रहता है तो इसे कालसर्प योग की संज्ञा दे दी होगी। वस्तुत: कालसर्प योग 'सर्पयोग' का ही परिष्कृत स्वरूप है।

कालसर्प योगों के प्रकार

ज्योतिष में 12 राशियां हैं, इनके आधार पर 12 लग्न होते हैं और इनके विविध योगों के आधार पर कुल 288 प्रकार के कालसर्प योग निर्मित हो सकते हैं, लेकिन भाव के आधार पर 12 प्रमुख कालसर्प योग माने गए हैं। हमारे प्राचीन विद्वानों ने भी 12 प्रकार के कालसर्प योग का विश्लेषण किया है तथा इन योगों को अनंत, कुलिक, वासुकि, शंखपाल, पद्म, महापद्म, तक्षक, कर्कोटक, शंखचूड़, पातक, विषधर तथा शेषनाग आदि नामों से अभिटित किया है। ये सभी योग लग्न से सप्तम एवं द्वितीय भाव से अष्टम भाव में क्रमवार स्थिति को लेकर बनाए गए हैं।

कालसर्प योग निवृत्ति हेतु मुहूर्त विचार

1. सात वारों में शनि, रवि, मंगल को छोड़कर सभी वार कालसर्प निवृत्ति हेतु शुभ माने गए हैं। इनमें बुधवार सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि राहूदोषं 'बुधोहन्यात' सूत्र के अनुसार इस कार्य हेतु बुध सबसे उत्तम माना गया है।
2. तिथियों में पडवा, पंचमी, सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या इस कार्य हेतु शुभ मानी गई है।
3. नक्षत्रों में 1 अश्विनी, 2 आर्द्रा, 3 स्वाती, 4 अश्लेषा, 5 पुष्य, 6 मघा, 7 मूल, 8 ज्येष्ठा, 9 शतभिषा 10 अश्विनी नक्षत्र विशेष रूप से ग्रास है।
4. सूर्य चंद्र ग्रहण में इस योग की निवृत्ति होती है।
5. नवरात्रि भी इस कार्य के लिए श्रेष्ठ मानी गई है।
6. बुधवार की अमावस्या अश्लेषा युक्त हो तो और भी उत्तम माना गया है।
7. नाग पंचमी मुहूर्त कालसर्प योग निवृत्ति के श्रेष्ठ है।
8. शुक्ल पक्ष में चंद्रबल, कृष्णपक्ष में ताराबल अवश्य देखें।

कालसर्प योग निवृत्ति के उपाय

1. किसी विद्वान वेदपाठी ब्राह्मण से कालसर्प विधि कराएं। इससे अवश्य लाभ होता है तथा पूर्वजन्म के दोष भी मिट जाते हैं। यदि पूर्व जन्म में दोष अति उग्र है तो यह विधि तो-तीन बार करानी चाहिए।
2. यदि किसी स्त्री की कुंडली कालसर्प योग से दूषित है तथा उसको संतति का अभाव है, विधि नहीं करा सकती है तो किसी अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य 108 प्रदक्षिणा (घेरे) लगानी चाहिए। तीन सौ दिन में जब 28000 प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वत: ही संतति की प्राप्ति होगी।
3. शिव उपासना एवं निरंतर रुद्रसूक्त से अभिमंत्रित जल स्नान करने पर यह योग शिथिल हो जाता है। सफलतापूर्वक लघुरूप करावें।

संवत 2075 के ग्रहण

ज्योतिषाचार्य पं. कैलाशचंद्र दुबे
कार्यालय अध्यक्ष, ज्योतिष मठ संस्थान
मो. 8120144277

संवत 2075 शाके 1940 (सन् 2018-19 ई) में कुल पांच ग्रहण लग रहे है - जिसमें 3 सूर्य ग्रहण और 2 चन्द्र ग्रहण हैं। पहला चन्द्र ग्रहण-31 जनवरी 2018, पहला सूर्य ग्रहण- 15 फरवरी 2018, दूसरा सूर्य ग्रहण- 13 जुलाई 2018, दूसरा चन्द्र ग्रहण- 27-28 जुलाई , 2018 तीसरा सूर्य ग्रहण- 11 अगस्त-2018

भारत एवं विदेशों में दिखाई देने वाले सूर्य-चंद्र ग्रहण

1. खण्डग्रास सूर्यग्रहण- दिनांक 13 जुलाई 2018 को खण्डग्रास सूर्यग्रहण लग रहा है। यह भारत में दृश्य नहीं है। यह आस्ट्रेलिया के सुदूर दक्षिणी भाग के अल्प क्षेत्रों मेलबोर्न, विक्टोरिया, तस्मानिया दीप समूह तथा न्यूजीलैंड के सुदूर दक्षिण के कुछ क्षेत्रों में तथा अंटार्कटिका के दक्षिणी ध्रुवों के सुदूर उत्तरी क्षेत्रों के कुछ भागों में दिखाई देगा। इस ग्रहण का अधिकांश भाग तथा इसका मध्य समुद्री क्षेत्रों में दृश्य होगा। यह ग्रहण दक्षिणी गोलार्द्ध में आस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिणी समुद्री क्षेत्र से भारतीय समयानुसार 7.18 से प्रारंभ होगा तथी इसकी समाप्ति 9.43 पर न्यूजीलैंड के दक्षिण समुद्री भाग में होगी। इसका मध्य 8.31 पर होगा तथा ग्रासमान 0.3365 होगा।

2. खग्रास चंद्र ग्रहण- दिनांक 27 जुलाई 2018 को खग्रास चंद्र ग्रहण लग रहा है। यह पूरे भारत में दिखाई देगा तथा भारत में इस ग्रहण का स्पर्श समिलन्न उन्नमीलन मध्य तथा मोक्ष सभी दृश्य होंगे। यह ग्रहण हिन्द महासागर में भारतीय समयानुसार 11.54 से आस्ट्रेलिया के सुदूर पूर्वी क्षेत्र से चंद्रोदय के समय होगा। यह खण्ड चंद्र ग्रहण के रूप में आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के अधिकांश भाग में जापान, रूस, चीन, अफ्रीका, यूरोप के अधिकांश भागों में भी दिखाई देगा। भारतीय समयानुसार खग्रास चंद्र ग्रहण का प्रारंभ रात्रि 12.59 पर होगा तथा इसकी समाप्ति रात्रि 2.43 पर होगी तथा यह ग्रहण संपूर्ण यूरोप, अफ्रीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप में दिखाई देगा। इस ग्रहण की कुल अवधि 1 घंटा 44 मिनिट की होगी। इसकी समाप्ति 3.49 पर दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप में होगी। संपूर्ण चंद्रग्रहण की कुल अवधि 3 घंटा 55 मिनिट की होगी। इसका मध्य 1.52 पर होगा। इस ग्रहण का ग्रासमान 1.61 होगा। संपूर्ण भारत में यह खग्रास चंद्र ग्रहण दिखाई देगा। भारत में इसका स्पर्श 11.54 से होगा तथा इसका समिल्लन रात्रि 12.59 से होगा तथा इसका उन्नमीलन रात्रि 2.43 पर और इसका मोक्ष रात्रि 3.49 पर होगा। इसका मध्य 1.52 पर दृश्य होगा।

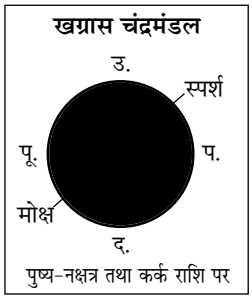

पुष्य-नक्षत्र तथा कर्क राशि पर

3. खण्डग्रास सूर्यग्रहण- दिनांक 11 अगस्त 2018 को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण लग रहा है। यह भारत में नहीं दिखाई देगा। यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका के सुदूर अटलांटिक क्षेत्र, उत्तरी यूरोप, रूस, चीन, मंगोलिया, यूनाईटेड किंगडम में दृश्य होगा। इसका प्रारंभ भारतीय समयानुसार 13.31 से ग्रीनलैंड के सुदूर समुद्री क्षेत्र से होगा तथा इसका अंत चीन के पूर्वी भाग में 17.0 पर होगा। इस ग्रहण की कुल अवधि 3 घंटा 28 मिनिट की होगी। इसका मध्य 15.16 पर रसिया में होगा। इसका ग्रासमान .7361 होगा।

4. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक 5/6 जनवरी 2019 को खंडग्रास सूर्यग्रहण लग रहा है। यह भारत में दृश्य नहीं है। यह ग्रहण चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, रशिया, ताइवान, अमेरिका के अलास्का में दिखाई देगा। इसका प्रारंभ भारतीय समयानुसार घ.29 मि.3 से चीन के पूर्वी क्षेत्र से होगा तथा इसका अंत पैसफिक समुद्री क्षेत्र में घं. 9 मि. 18 पर होगा। इस ग्रहण की कुल अवधि 4 घंटा 14 मिनट होगी इसका मध्य घं. 7 मि. 11 पर रशिया में होगा। इसका ग्रासमान .7149 होगा।

5. खग्रास चंद्र ग्रहण- दिनांक 21 जनवरी2019 को खग्रास चंद्र ग्रहण लग रहा है। यह पूरे भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण अमेरिका, यूरोप अधिकांश अफ्रीका में दृश्य होगा। भारतीय समयानुसार घ. 9 मि. 3 से खंडचंद्र ग्रहण के रूप में अफ्रीका महाद्वीप से प्रारंभ होगा तथा इसकी समाप्ति रात्रिघ. 12 मि. 21 पर पैसफिक समुद्री क्षेत्र से होगी। यह खग्रास चंद्र ग्रहण के रूप में घ. 10 मि. 10 पर प्रारंभ होगा तथा इसका अंत घं 11 मि. 13 पर होगा। इस खग्रासचंद्र ग्रहण की कुल अवधि 1 घंटा 2 मिनट की होगी। ग्रहण की कुल अवधि 3 घंटा 18 मिनट की होगी। इसका मध्य घं. 10 मि. 42 पर होगा। इसका ग्रासमान 1.20 होगा।

हम पर उपकार करते हैं देवरूप वृक्ष

मानव जीवन में नवग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव

इस ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित होती है। जिस तरह हमारा शरीर पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि आदि पंच तत्वों से मिलकर बना है इसी प्रकार इस ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु नवग्रह नक्षत्रों से प्रभावित है। और हमारे जीवन में इसी कारण लाभ-हानि, जय-पराजय, दरिद्रता-संपन्नता, सुख दुख आदि का अनुभव होता है।

प्रत्येक व्यक्ति का जन्म किसी न किसी नक्षत्र में हुआ है ऐसे 27 एवं (एक अन्य नक्षत्र) सहित कुल 28 नक्षत्र होते हैं। अत: इससे यह सिद्ध होता है कि ग्रह-नक्षत्र हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अत: ग्रह-नक्षत्र, रत्न, राशि, दिशा एवं सभी देवी-देवताओं का वास अनेक पुराणों में एवं हमारे प्राचीन सिद्ध ऋषि-मुनियों ने वृक्षों में बताकर कहा है कि इन देवताओं को अपने से उत्पन्न वृक्ष से प्रेम होता है, अर्थात जब इन वृक्षों की जल से सेवा की जाती है तो उस वृक्ष के देवता प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। स्कंध पुराण के अनुसार एक बार माता पार्वतीजी ने क्रोधित होकर सभी देवी-देवताओं को श्राप दिया कि आप सब अपने एक अंश से वृक्ष होंगे। देवी के यह वचन सुनते ही देव अपने एक अंश से वृक्ष बन गए।

यदि कोई व्यक्ति ग्रह दोष से पीड़ित है, जिसके कारण जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है तो उस ग्रह को प्रसन्न करने के लिए ग्रह से संबंधित महंगे रत्न नहीं पहन सकते तो भी उस रत्न से संबंधित पौधा लगाकर सेवा करने से जीवन में आने वाली परेशानियों से मुक्ति पाई जा सकती है। अत: इसलिए ईश्वर सभी प्राणियों

नवग्रह	पेड़	गुरू	पीपल
सूर्य	अकौआ	शुक्र	गूलर
चंद्र	पलास	शनि	शमी
मंगल	खैर	राहू	दूबा
बुध	अपामार्ग	केतु	कुशा

पर कृपा करने के लिए वृक्षों में निवास करते हैं। एक वृक्ष 10 पुत्रों के समान हैं। वृक्ष-सत्य हैं, तो फूल-सुंदर, और फल-शिव, अत: इस प्रकार वृक्षों में सत्यम, शिवम, सुंदरम का भी समन्वय होता है। प्रकृति ने हमें सब कुछ दे दिया है, एक स्वर्ग ऊपर है तो दूसरा स्वर्ग पृथ्वी लोक में नीचे भी है, इस पृथ्वी लोक के भव्य एवं सुंदरम स्वर्ग को पहचानने और समझने की जरूरत है। यह जो पवित्र देवतुल्य पेड़-पौधे, वृक्ष बनकर हमारे सामने खड़े हुए हैं, यह कोई साधारण से वृक्ष नहीं है। साक्षात ईश्वरीय शक्ति के रूप में लोगों के सामने विद्यमान है। वृक्षों की सेवा से सम्पूर्ण सृष्टि की सेवा का पुण्य कार्य संपन्न होता है।

-डॉ. प्रकाश गौतम

शास्त्र वचन

पापी कूप तड़ागानि यदि वृक्षाणि रोप यते। चतुर्चरेण लाभन्ते नैकानेक फलप्रदा।।

अर्थात मानव यदि वापी, कूप, तड़ाग, वृक्ष रोपण, वाटिका निर्माण आदि करता है जिससे जलचर, थलचर, नभचर, वायुचर इन सभी को जीवन लाभ मिलता है। इसलिए यह कार्य सृष्टि के लोकहितकारी कार्यों में श्रेष्ठ फल देने वाला माना गया है।

स्वासो तरेण शययति वृक्षं सुचिवै, नि:रोग वर्धन्ति शतं शतानि।।

नख्तं गृह्णाम द्विग्नं कृमेण तान्लोक वृद्धै वृक्षन्ति पूज्य:

अर्थात मानव की सांसों से निकली वायु को वृक्ष ग्रहण कर शुद्ध वायु में परिवर्तित कर देते हैं। यह प्रक्रिया जनमानस के लिए निरोगकारी है। इसी प्रकार नक्षत्र वृक्ष आम वृक्षों की अपेक्षा दुगनी वायु शुद्ध करने में सक्षम हैं। इसलिए शास्त्रों ने वृक्षों का रोपण, पूजन लोक कल्याणकारी माना है।

ज्योतिष मठ संस्थान की कु. कर्णिका गौतमजी एवं चिरंजीव कान्हा गौतमजी का नेहरू नगर स्थित प्रसिद्ध ए.व्ही.एम. स्कूल में मेधावी विद्यार्थी सम्मान से सम्मानित किया गया।

सम्मेलन अखबारों के पन्नो से

ज्योतिष मठ द्वारा आयोजित सम्मेलन को पत्र-पत्रिकाओ सहित लगभग सभी न्यूज चैनलों ने स्थान दिया है। जिसका ज्योतिष मठ संस्थान आभारी है। साथ ही इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए मध्यप्रदेश शासन संस्कृति संचालनालय का सहयोग तथा काली मठ संस्थान, वैदिक ब्राह्मण संस्था एवं महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के अतिरिक्त इस सम्मेलन के मीडिया पार्टनर स्वराज एक्सप्रेस न्यूज मध्यप्रदेश, इंडिया फर्स्ट न्यूज चैनल, धर्म नगरी न्यूज पेपर, पब्लिक प्रिंट का विशेष सराहनीय योगदान रहा। हम इन सभी संस्थाओ के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

पत्रिका

ज्योतिष सम्मेलन में पंचांगकारों, ज्योतिषियों ने बनाई एकराय

व्रत पर्वों को लेकर मतभेद न हो, इसलिए बनाएंगे विद्वानों की कमेटी

दो तिथियों को लेकर पंडित नहीं एक राय, पंचांगों में भी मतभेद...

पत्रिका ने उठाया था मुद्दा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. सनातनी पर्वों में त्योहार, व्रत को लेकर कई बार मतभेद की स्थिति बनती है।

इसका परिणाम यह होता है कि लोग असमंजस में रहते हैं कि कौन सा पर्व कब मनाए। व्रत, पर्वों को लेकर मतभेद नहीं हो, इसलिए एक कमेटी बनाई जाएगी, जो व्रत, पर्वों का निर्धारण करेगी। इसके साथ ही एक वैश्विक पंचांग बनाया जाएगा जो शोध पंचांग होगा। इस कमेटी में ज्योतिष, विद्वान, पंचांगकार ... शामिल किया जाएगा, साथ ही शासन को भी पहले से व्रत पर्वों की तिथियां उपलब्ध कराई जाएंगी, ताकि सरकारी अवकाश घोषित ... इस बात का ख्याल रखा जाए कि निर्धारित पर्वों पर ही अवकाश घोषित हो। यह निर्णय गुरुवार को अरेरा कॉलोनी साईं बोर्ड स्थित महर्षि संस्कृत केंद्र में आयोजित ज्योतिष सम्मेलन में लिया गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महर्षि संस्थान के ब्रह्मचारी गिरीश ने कहा कि भारत की ज्योतिष विद्या का पूरे विश्व में बड़ा सम्मान है। इसके लिए जरूरी है कि इस विद्या को हम पूरे विश्व में फैलाए, क्योंकि पूरा विश्व एक परिवार है। उन्होंने कहा कि इसके लिए महर्षि संस्थान भी पूरी तरह से सहयोग करेगा। इस मौके पर पं. अयोध्या प्रसाद गौतम ने प्राचीन ज्योतिष विद्या और वर्तमान ज्योतिष पर प्रकाश डाला, साथ ही ज्योतिष के महत्व के बारे में जानकारी दी।

इस मौके पर राजधानी पंचांग नई दिल्ली के कौशल किशोर कौशिक, रामानुज पंचांगम के डॉ.रामनारायण मिश्र, पं. विनोद गौतम, पं. विष्णु राजौरिया, वेदिका श्रीवास्तव इंदौर सहित आदि ज्योतिषी उपस्थित थे।

गणितीय गणना एक जैसी स्थापित हो

शहर के वरिष्ठ ज्योतिषी पं. प्रहलाद पंड्या ने कहा कि व्रत, त्योहारों में भिन्नता इसलिए आती है, क्योंकि गणितीय गणना की अलग-अलग पद्धतियां है। इसलिए कई बार पंचांगों में तिथि में 2 से 3 घंटे का समय आता है, वहीं ग्रह परिवर्तन में 8 से 10 दिन का अंतर आता है। अगर एकरूपता लानी है, तो जरुरी है कि किसी एक सिद्धांत पर आधारित गणना को स्थापित करना होगा, तभी इस तरह की स्थिति से बचा जा सकता है। साथ ही यह भी जरुरी है कि शासन जो कैलेंडर बनाता है, उसे भी ज्योतिषियों की सहमति से बनाना चाहिए।

नवदुनिया

ज्योतिषमठ संस्थान का ज्योतिष सम्मेलन 29 को

भोपाल (नप्र)। नेहरू नगर स्थित ज्योतिष मंठ संस्थान द्वारा 29 मार्च को ज्योतिष ...मेलन का आयोजन किया ... है। सम्मेलन में राजधानी के साथ ही वृंदावन, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, नासिक, रायपुर समेत देश के अन्य राज्यों से आए प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं पंचागकार शामिल होंगे। ज्योतिष सम्मेलन अरेरा कॉलोनी स्थित महार्षि संस्कृत केन्द्र साईं बोर्ड स्थित भवन में आयोजित किया जाएगा। ज्योतिष मठ के संचालक ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम ने बताया कि विभिन्न हिंदू तीज-त्यौहारों, शादी-विवाह व पंचाग मुहूर्तों में होने वाले विरोधाभाष की स्थिति से निपटने के लिए सम्मेलन किया जा रहा है। जिसमें

पत्रिका

सम्मेलन में हिस्सा लेंगे देशभर के ज्योतिषाचार्य

महर्षि संस्कृत केंद्र में 29 मार्च को होगा आयोजन

... | भोपाल

... संस्थान भोपाल द्वारा 2... को एक दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जा ...हा है। यह सम्मेलन अरेरा कॉलोनी ...त महर्षि संस्कृत केंद्र साईं बोर्ड में होगा। संस्थान के संयोजक ज्योतिषाचार्य विनोद गौतम ने बताया कि इस सम्मेलन में देश के जाने माने ज्योतिषी एवं पंचांगकार शिरकत करेंगे। सम्मेलन में दिल्ली, वृंदावन, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, नासिक सहित पूरे देश से ज्योतिषाचार्य भोपाल पहुंचेंगे। इस सम्मेलन में तिथि, व्रत, त्यौहार में ज्योतिष की भूमिका विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किये जाएंगे। उन्होंने बताया कि एक दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य व्रत, त्यौहारों तथा विवाह मुहूर्तो में मतभेद की स्थिति समाप्त करना है। कार्यक्रम के राजधानी पंचांग दिल्ली, पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग भोपाल, लाला रामस्वरूप पंचांग जबलपुर, भूवन विजय पंचांग, बाबूलाल चतुर्वेदी पंचांग, जबलपुर पुष्पांजलि पंचांगकार हिस्सा लेंगे।

जागरण

महर्षि ज्योतिष पंचाग का 29 को शोध सम्मेलन

भोपाल। ज्योतिषमठ संस्थान द्वारा 29 मार्च को एक दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन ... आयोजन होगा। सम्मे... संयोजक ज्योतिषाचार्य ...द गौतम ने बताया कि इस सम्मेलन में देश के नामचीन ज्योतिषी एवं पंचागकार शिरकत करेंगे।

सम्मेलन में दिल्ली, वृंदावन, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, नासिक सहित सम्पूर्ण देश के विद्वान भोपाल पधारेंगे। इसमें तिथि वृत त्यौहार में ज्योतिष की भूमिका पर शोधपत्र विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए जायेंगे। सम्मलेन में उपस्थित ज्योतिष विद्वानों का सम्मान किया जाएगा। संस्थान द्वारा सांस्कृतिक साहित्य से जुड़े प्रमुख पत्रकारों को भी सम्मानित किया जाएगा। यंह सम्मलेन महार्षि संस्कृत केंद्र सांई बोर्ड अरेरा कॉलोनी स्थित भवन में आयोजित किय जाएगा। इस एक दिवसीय सम्मेलन

नवभारत

महर्षि ज्योतिष पंचाग शोध सम्मेलन 29 को

जुटेंगे पंचांगकार, व्रत-त्योहारों के मतभेद दूर करने होगा मंथन

... ज्योतिषमठ संस्थान की ओर से 29 मार्च को एक दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में ...श के नामचीन ज्योतिषी और ...चागकार शिरकत करेंगे। इस ...म्मेलन में तिथि, व्रत, त्योहारों में ...तिष की भूमिका विषय पर ... वृंदावन, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन नासिक सहित सम्पूर्ण देश के विद्वान भाग लेंगे। सम्मेलन ... उपस्थित ज्योतिष विद्वानों ... सम्मान किया जाएगा। व्रत, त्योह... और मुहूर्तों में मतभेद की स्थि... समाप्त हो इसी उद्देश्य के ... कार्यक्रम के आयोजन में प्र...

संयोजक पं. विनोद गौतम, सम्मेलन प्रभारी पं. धनेश प्रपन्नाचार्य, पं. रामकिशोर वैदिक

सहयोग - पं. कैलाशचंद्र दुबे, पी.डी. मिश्रा, अभय दुबे, मंटू भदौरिया, उनके पड़ोसी, धीरेंद्र चौहान, नेमाजी

भास्कर

ज्योतिष पंचांग और शोध सम्मेलन

भोपाल| ज्योतिष मठ संस्थान द्वारा महर्षि संस्कृत केंद्र में गुरुवार को महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन हुआ। आयोजक ज्योतिषाचार्य विनोद गौतम की अगुवाई व्रत-त्योहारों की तिथियों-आदि में एक रुपता लाने के लिए सहमति बनाई गई। सम्मेलन में ब्रहमचारी गिरीश जी महाराज भी मौजूद थे।

पीपुल्स

एक तिथि व विधान पर मने त्योहार

भोपाल, 29 मार्च. देश में कई त्योहार दो दिन मनाए जाते हैं, इनमें एकरूपता लाने पर आज ज्योतिष सम्मेलन में मंथन किया गया. सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से आये पंचागकार और ज्योतिषाचार्यों ने अपने अपने शोध प्रस्तुत किए.

ज्योतिषियों ने व्यक्त किए अपने विचार

ज्योतिषाचार्य विनोद गौतम ने …ताया कि व्रत …ोहारों का एक साथ मनाने तथा …वाह मुहूर्तों में एक रुपता लाने … सहमति बनी. सभी पंचागकार अगले साल से सर्वसम्मति से … …त्रों से एक …जसमें एक …चाग सभी पंचागकारों और ज्योतिषों को वितरित भी किये जायेंगे ताकि पूरे देश में हिन्दू त्यौहार और व्रत एक साथ मनाए जाये. पंडित गौतम ने बताया कि इससे हिन्दू और सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार भी होगा. इस मौके पर इलेक्ट्रानिक मीडिया के वरिष्ठ पत्रकार राजेश राय को शाल श्रीफल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया. सम्मेलन में ब्रहमचारी गिरीश जी महाराज ने कहा कि अगले वर्ष से महर्षि वैश्विक पंचांग बनाया जायेगा जिससे विश्व में हिन्दू त्यौहार और व्रत एक साथ मनाए जा सके.

ज्योतिष सम्मेलन 29 को, आएंगे ज्योतिषाचार्य

भोपाल। ज्योतिष मद संस्थान भोपाल द्वारा 29 मार्च को एक दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह सम्मेलन अरेरा कॉलोनी स्थित महर्षि संस्कृत केंद्र साई बोर्ड में होगा। सम्मेलन में देश के जाने माने ज्योतिषी एवं पंचांगाकार शिरकत करेंगे।

प्रदेश टुडे

नवदुनिया

महर्षि केंद्र साई बोर्ड में आयोजित ज्योतिष सम…

हिंदी के साथ ही अंग्रेजी … जाएगा राष्ट्रीय स्तर …

महर्षि महेश योगी संस्… तत्वावधान में हुआ सम…

हितवाद

Ensure uniformity in astrology calendar: Brahmachari Girish

Brahmachari Girish addressing the programme.

■ Staff Reporter

…Math Sansthan, Bhopal … not serious in learning about it. At present, there are many small centers of astrology education in the country, but they do not have … is a need for such solutions, as to remove the difference in dates (Tithi) and festivals in the different types of almanacs (Panchaang) that are being published in the …

राज एक्सप्रेस

ज्योतिषी पंचांग में एकरूपता की आवश्यकता : ब्रह्मचारी गिरीश

भोपाल। ज्योतिष विद्या अपने आप में पूर्ण है किंतु ज्योतिष के साधक इसे सीखने में गंभीर नहीं हैं। इस समय देश में ज्योतिष शिक्षा सीखने के छोटे अनेक केंद्र हैं किन्तु उनकी प्रतिष्ठा नहीं है। … एक बड़े एवं सुविधायुक्त प्रतिष्ठित केंद्र की आवश्यकता है, … से समस्त विषयों पर उचित एवं संपूर्ण जानकारी मिल सके। उपरोक्त कथन महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ब्रह्मचारी गिरीश ने भोपाल में महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन में उपस्थित ज्योतिषियों के समूह को संबोधित करते हुए कही। ज्योतिष सम्मेलन …

पीपुल्स

मुहूर्त, पर्वों में मतभेद दूर करेगा पंचांग

पीपुल्स संवाददाता ● भोपा…
मो.नं. 9752479963

ज्योतिषमठ संस्थान के महर्षि ज्योतिष शोध सम्मेलन का गुरुवार को समापन हुआ। इसमें वृत, पर्वों एवं विवाह मुहूर्तों में पंचांगों में मतभेद दूर करने के उद्देश्य से कई प्रांतों के पंचांगकार एवं ज्योतिषाचार्य जुटे।

कार्यक्रम संयोजक ज्योतिषाचार्य … करने का आगे भी प्रयास जारी रहेगा। निर्णयित व प्रपादित सिद्धांतों पर न्यायाधीशों की उपस्थिति में निर्णय लिया कि भविष्य में महर्षि महेश योगी, वैदिक विश्वविद्यालय पंचांग का पूर्व में ही निर्माण कर सिद्धांतों के आधार पर वृत, मुहूर्तों की विवेचना करेगा। निर्मित पंचांग को संपूर्ण पंचांगकारों को पूर्व में ही दिया जाएगा। इससे पंचांगों में एकरूपता लाई जा सकेगी

पंचांग में एकरूपता की है जरूरत : ब्रह्मचारी गिरीश

ज्योतिष विद्या पूर्ण है, किंतु साधक सीखने में गंभीर नहीं हैं। ज्योतिष शिक्षा के छोटे-छोटे अनेक केंद्र हैं। पर प्रतिष्ठा नहीं हैं। हमें बड़े, सुविधा जनक प्रतिष्ठित केंद्र की आवश्यकता है, ताकि पंचांग बनाने में आसानी रहे। यह विचार महर्षि महेश योगी वैदिक …

पब्लिक प्रिंट

धरमधारा ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन में बोले ब्रह्मचारी

ज्योतिष का पूरी दुनिया में सम्मान

पिछले कुछ वर्षों से देखने में आ रहा है कि सनातनी तीज त्योहारों की तिथियों को लेकर भ्रम की स्थिति बनी रहती है। जिस… एक ही त्योहार पर ज्योतिषियों की मतभिन्… दो तारीखें तय कर दी जाती हैं। इससे … की आस्था पर कुठाराघात होता … करते हुए भोपाल के ज्योतिष मठ संस्थान … मार्च माह की 29 तारीख को महर्षि ज्योतिष पंचांग … सम्मेलन आयोजित किया।

साईं बोर्ड अरेरा क्षेत्र स्थित महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय के आडीटोरियम में आयोजित इस महत्ती सम्मेलन में महर्षि विश्वविद्याल के ब्रह्मचारी गिरीश वर्मा, धर्माधिकारी पं. विष्णु राजोरिया, जस्टिस एसएन द्विवेदी, जस्टिस एससी उपाध्याय, चामुंडा दरबारी के पुजारी पं. रामजीवन दुबे गुरुजी, पं. प्रहलाद पंड्या, महाराज वैभव भटेले आदि अनेक वक्ताओं ने वर्तमान में ज्योतिष की घटती विश्वसनीयता पर चिंता जताई साथ ही सनातन तीज-त्योहारों में तिथि को लेकर भ्रम जाल को तोड़ते हुए एक राय बनाने संबंधी सहमति बनी। कार्यक्रम का संचालन भागवताचार्य पं. निलिम्प त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर पं. राम किशोर वैदिक, पं. धनेश प्रपन्नाचार्य, पं. कैलाशचंद दुबे, पं. जगदीश शर्मा, पं. अरविंद पचौरी सहित बड़ी संख्या में ज्योतिर्विद उपस्थित रहे।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग में की गई 2017-18 की भविष्यवाणियां जो अक्षरतः सत्य सिद्ध हुई

आपके इस पंचांग की भविष्यवाणियां प्रतिवर्ष काल की कसौटी पर सत्य साबित होती हैं, जिन्हें पाठकों ने अनुभव किया होगा, पढ़िए इस वर्ष की कुछ अक्षरशः सत्य भविष्यवाणियांः-

1. **प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के गिनेचुने दिन बांकी हैं।** गत जुलाई मास में नवाज शरीफ को पद से हटा दिया गया।
2. **तमिलनाडू की मुख्यमंत्री जयललिता को स्वास्थ्य और कानूनी परेशानियों की चिंता रहेगी।** जयललिता के कानूनी मामलों के कारण सुप्रीम कोर्ट ने उनकी सहेली शशिकला को सजा सुनायी और वे जेल में है। जयललिता की मृत्यु होने के कारण वे जेल से बच गयीं।
3. **वरिष्ठ पार्टी नेता स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ सकते हैं।** पार्टी के वरिष्ठ नेता विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को अचानक अपनी किडनी ट्रांसप्लांट करानी पड़ी।
4. **उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव बहुत से संकटों में घिर जायेंगे,** राज्य में अनसोची स्थिति बनेगीं आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरेगी उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की कई घोटालों की जांच चल रही है और उत्तर प्रदेश के चुनाव में भाजपा भारी बहुमत से विजयी हुयी।
5. **उत्तरांचल में भाजपा को अच्छा लाभ होगा जबकि सत्ताधारी दल को नुकसान के योग हैं।** उत्तरांचल के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अच्छी सफलता प्राप्त कर अपनी सरकार बना ली और कांग्रेस का पतन हुआ।
6. **बिहार में नीतीश कुमार की महागठबंधन की सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकेगी और बीच में ही पद छोड़ना पड़ सकता है।** परिस्थिति वश नीतीश कुमार की महागठबंधन सरकार को इस्तीफा देना पड़ा और भाजपा के समर्थन से एनडीए की सरकार बनी, उसमें नितिश कुमार एनडीए के मुख्यमंत्री बने।
7. **राम जन्मभूमि, अयोध्या मामला एक बार फिर बड़ी चर्चा में रहेगा।** राम जन्मभूमि का मुद्दा पिछले 8 माह से गर्मजोशी के साथ उठा और इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट भी रूचि ले रहा है, उक्त मामले में दिसंबर 2017 से रोज सुनवायी के आदेश जारी हुए।
8. **''डिजीटल इंडिया'' आदि में सफलता भी प्राप्त होगी** 8 नवम्बर को नोटबंदी के बाद केन्द्र सरकार ने पूरे देश में कैशलेस पेमेंट में जोर देकर डिजीटल इंडिया का तेजी से प्रचार प्रसार कर रही है।
9. **चीन भारतीय सीमा में रोड, भवन निर्माण, बांध आदि निर्माण कार्य करके अतिक्रमण के द्वारा बड़ा तनाव पैदा कर सकता है।** जून 2017 से डोकलाम में चीन द्वारा भारतीय सीमा अतिक्रमण और रोड बनाने के कारण भारत चीन सीमा पर दोनों ओर से भारी सैन्य तनाव रहा, जो बातचीत द्वारा 4 माह बाद मामला सुलझा।
10. **किसी अंडरवर्ल्ड डॉन को मृत्य दण्ड दिया जायेगा।** हैदराबाद में आतंकी भटकल को और पिछले दिनों मुम्बई हमले के आतंकी को फांसी की सजा सुनायी गयी। इसके अलावा शेयर बाजार, सोना, चांदी, रियल स्टेट आदि के संबंध में पंचांग की व्यापारिक भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं, जिन्हें पंचांग के पाठक अनुभव करते हैं।
11. **मध्यप्रदेश में साधु-संत किसानों का असंतोष उभरेगा तथा यह वर्ष आंदोलन के लिए जाना जाएगा।** वर्ष 2017 की शुरुआत से ही साधु-संत, किसान, कर्मचारियों एवं व्यापारियों के विरोध स्वरूप सरकार को परेशानी हुई। किसान आंदोलन के कारण गोली चलने की घटना से यह वर्ष आंदोलन के लिए जाना जाएगा। सरकार को शर्मिंदगी झेलकर बैकफुट पर आना पड़ा।
12. **उड़ीसा में प्राकृतिक आपदा से नुकसान होगा, भाजपा का जनाधार बढ़ेगा।** बाढ़ से उड़ी में इस वर्ष बहुत आपदा आई तथा भाजपा का जनाधार बढ़ा।
13. **कर्नाटक में आगामी विधानसभा चुनाव भाजपा को कड़ी मेहनत के बाद सरकार बनाने में सफल होगी।** विधानसभा चुनाव में भाजपा को बहुमत नहीं मिला, परन्तु एक दिन की सरकार बनाने में सफल हो गई। प्रदेश में यदुरप्पा का प्रभाव बढ़ेगा। श्री यदुरप्पा मुख्यमंत्री बने।
14. **योगी आत्यिनाथ सांप्रदायिक ताकतों से निपटने के लिए कार्य कर सकते हैं।** योगी आदित्यनाथजी की एक साल के मुख्यमंत्रित्वकाल की गतिविधियां इस संबंध में तेज रही हैं।
15. **किसी पूर्व राजनेता का निधन से शोक व्याप्त होगा।** श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के निधन से भारत में शोक की लहर दौड़ गई।
16. **राम मंदिर के निर्माण को गति मिलेगी।** इस वर्ष की शुरुआत से ही धार्मिक उन्माद एवं राम मंदिर का मुद्दा चर्चा का विषय रहा।
17. **महाराष्ट्र में शिवसेना एवं भाजपा का संघर्ष चलता रहेगा।** ऐसे कई मौके आए जब भाजपा एवं शिवसेना एक दूसरे के विरोधी बयानों के कारण चर्चा में रहे।
18. **मध्यप्रदेश में वर्ग संघर्ष द्वारा असंतुष्ट वर्ग सरकार को दुविधा में रखेंगे।** सपाक्स एवं अपाक्स का वर्ग संघर्ष मध्यप्रदेश में चरम पर है। सरकार उसे साधने का प्रयास कर रही है।
19. **उत्तर एवं दक्षिणी प्रदेशों में वर्षा, बाढ़, भूस्खलन से भारी हानि के संकेत ग्रह दे रहे हैं।** इस वर्ष उत्तरांचल एवं केरल में भारी बारिश के कारण अति तबाही हुई।
20. एक माह में तीन ग्रहण वर्षा में अवरोध पैदा करेंगे। मध्यप्रदेश में सामान्य बारिश की भविष्यवाणी के बावजूद भी 27 जुलाई से बारिश का क्रम धीरे-धीरे समाप्त हो गया। जिससे बारिश की समीकरण बिगड़े।

सामान्य जानकारी

विक्रम संवत् मास के नाम

1. चैत्र 2. वैशाख 3. ज्येष्ठ 4. आषाढ़ 5. श्रावण 6. भाद्रपद (भादों) 7. आश्विन (क्वांर) 8. कार्तिक 9. मार्गशीर्ष (अगहन) 10. पौष 11. माघ 12. फाल्गुन

शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष

विक्रम संवत् के हर मास (चंद्रमास) में दो पक्ष होते हैं-

1. शुक्ल पक्ष (सुदी) - अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष कहते हैं। यानि अमावस्या के बाद बढ़ता हुआ चांद पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष का सूचक है।

2. कृष्ण पक्ष (बदी) - पूर्णिमा के बाद से अमावस्या तक की तिथियों को कृष्ण पक्ष कहते हैं। यानि पूर्णिमा के बाद घटता हुआ चांद अमावस्या तक कृष्ण पक्ष का सूचक है।

पंचक एवं योग

पंचक - इसमें गृह निर्माण, दक्षिण की यात्रा, काष्ठ, तृण की क्रिया मना है। दाह-संस्कारों में काष्ठ व तृण की क्रिया के कारण ही पंचक माना जाता है। व्रतों, त्यौहारों में पंचक का महत्व नहीं है। गणेश, दुर्गा विसर्जन में भी पंचक का महत्व नहीं है।

अमृत सिद्धि योग - सभी कार्यों में शुभ होता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग - सर्वत्र शुभकारक योग है।

द्विपुष्कर योग - शुभ-अशुभ में दुगना फलदायक है।

त्रिपुष्कर योग - शुभ-अशुभ में तीन गुना फलदायक है।

स्मार्त एवं वैष्णव

स्मार्त कौन - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, गृहस्थ जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक हैं, सभी स्मार्त हैं।

वैष्णव कौन - जिन लोगों ने वैष्णव गुरू से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख चक्र अंकित करवाया हैं। साधु सन्यासी, विधवा स्त्री, विष्णु उपासक को ही शास्त्र में वैष्णव कहा गया है।

घर का वास्तु शास्त्र

मकान में कहां-क्या?

पूर्व दिशा में मुख्य द्वार एवं स्नानगृह, आग्नेय दिशा में रसोई, भंडारगृह, दक्षिण दिशा में शयनकक्ष एवं शौचालय, नैऋत्य में मास्टर बेडरूम, फालतू सामान, पश्चिम दिशा में भोजन कक्ष, वायव्य दिशा मे कुआंरी लड़कियों के लिए शयनकक्ष, उत्तर दिशा में धन, तिजोरी, बालकनी या मुख्य द्वार। ईशान में पूजाघर, बच्चों का अध्यनकक्ष, जल संग्रह होना चाहिए।

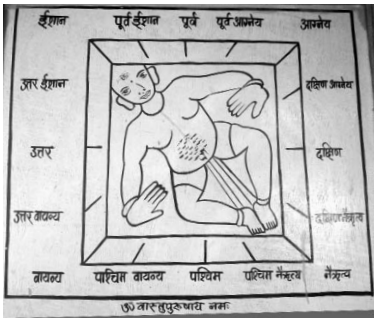

कारखाने में कहां-क्या?

पूर्व में मुख्य द्वार, खुली जगह। अग्निकोण में ट्रांसफार्मर, वायलर। दक्षिण में मशीनरी, मार्केटिंग मैनेजर, नैऋत्य में भारी मशीनरी। पश्चिम में कच्चा माल एवं कर्मचारियों के लिए कैंटीन, वायव्य में पक्का माल, उत्तर में मुख्य दरवाजा, कैशियर के कागजात, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा, ईशान में जल स्टोर, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा होना चाहिए। कर्मचारी आवास पश्चिम में बनाएं।

प्रमुख वास्तुदोष

- नैऋत्य दिशा में गड्ढा- यदि नैऋत्य दिशा में गड्ढा हो तो परिवार के मुखिया की आसमयिक मृत्यु, नींद न आना, व्यवसाय में हानि एवं कई मुसीबतें आती हैं।
- ईशान दिशा में टायलेट - ऐसी स्थिति में बुद्धि ठीक से काम नहीं करती व ज्यादातर गलत निर्णय लेने से परेशानियां आती रहती हैं। गृहस्थी में नाना प्रकार की दिक्कतें आती हैं।
- उत्तर दिशा में मिट्टी का टीला होना - इसके कारण सब सुखों का नाश हो जाता है। कुटुम्ब में परस्पर झगड़े होते हैं। बच्चों की पढ़ाई में अनेक विघ्न आते हैं। पूरे परिवार में मानसिक क्लेश का वातावरण रहता है।

वास्तुदोष शांति के उपाय

- मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह स्वास्तिक या गणेश जी की तस्वीर का उपयोग करना चाहिए।
- प्रतिदिन अग्निहोत्र करना चाहिए।
- प्रतिदिन गाय, कौआ, कुत्ते को यथा शक्ति खाने को देना।
- वर्ष में एक वार अमावस्या के दिन दही-चावल एवं नारियल पूरे घर में उतार कर बाहर फेंक देना चाहिए। यह वली का स्वरूप है।
- वर्ष में एक बार हवन-पूजन करवाना चाहिए।
- घर को सदा स्वच्छ रखना चाहिए।
- घर के प्रत्येक सदस्य को परस्पर आदर करना चाहिए।
- घर के सभी जनों को अपना (स्वयं का) वास्तु ठीक रखना चाहिए।

पाक्षिक
धर्म नगरी
भोपाल से प्रकाशित

साधु-संत, अखाड़ों से संबंधित सटीक खबर, धर्म पर पैनी नजर, तीन कुंभों की कवरेज करने के पश्चात चौथे सिंहस्थ कुंभ उज्जैन-2016 की कवरेज करने की तैयारी।

सिंहस्थ कुंभ पर स्पेशल विशेषांक अवश्य पढ़ें।

प्रधान संपादक
राजेश पाठक
मो.-9752404020

472, आचार्य नरेंद्रदेव नगर
भोपाल

www.dharamnagri.com eamil-kumbh2013@gmail.com

ज्योतिष के महर्षि

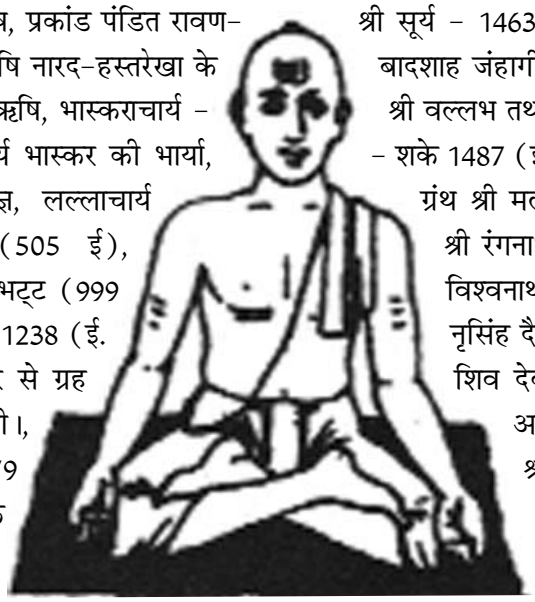

महर्षि वेदव्यास, गौतम ऋषि, प्रकांड पंडित रावण–ललाट विद्या के माध्यम से, ऋषि नारद–हस्तरेखा के माध्यम से, ऋषि पारासर, भृगु ऋषि, भास्कराचार्य – सूर्य सिद्धांत, लीलावती आचार्य भास्कर की भार्या, आर्यभट्ट – ज्योतिष गणितज्ञ, लल्लाचार्य (499 ई.), वारहमिहिर (505 ई), ब्रह्मगुप्त (598 ई.). श्रीपति भट्ट (999 ई.), ज्योतिषी महादेव – शाके 1238 (ई. सन 1316) ग्रह लाघव प्रकार से ग्रह साधन सारिणी निर्मित की।, गंगाधर ज्योतिषी – 1279 कामधेनु नामक ग्रंथ, शाके 1356 (ई. सन 1434) वर्तमान प्रचलित सूर्य सिद्धांत चंद्रमानाभिधान नामक ग्रंथ, श्रीमकरन्द शाके 1400 ई (सन 1478), सूर्य सिद्धांत – पंचाग साधनोपयोग ग्रन्थ की रचना की मकरन्द सावित्री उत्तर भारत में सर्वत्र प्रसिद्धि प्राप्त हुई। श्री केशव – शाके 1378 (ई. सक 1456) अनेक ग्रंथ रचनाओं में ग्रह कौतुक ग्रहसिद्धि, तिथि सिद्धि, जातक पद्धति, विकृति, तांत्रिक पद्धति, सिद्धतानपाठ मुहूर्त तत्व, कुंडाष्टक लक्षण, गणिमठ दिपिका कामस्थादि। ज्योतिषि लक्ष्मीदास – श्री केशव के पौत्र 1442 (ई. सन 1520) भास्कराचार्य सिद्धांत शिरोमणी ग्रंथ संहिता। श्री ज्ञानराज – 1425 (ई. सन 1503) सिद्धांत सुन्दर ग्रह गणित्यीय ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की। श्री गणेश – श्री गणेश ने 13 वर्ष की आयु में ग्रह माधव करण ग्रंथ की रचना की। ग्रह लाघव करण ग्रंथ के आरंभ में शक 1442 में की इनका जन्म शके 1429 का है। श्री विष्णु देवता – शक 1478 श्री सूर्य – 1463, ज्योतिषी कृष्ण दैवज्ञ – कृष्ण दैवज्ञ बादशाह जंहागीर के प्रधान सभा पंडित थे इनके पिता श्री वल्लभ तथा माता का नाम गोनि था। रघुनाथ शर्मा – शके 1487 (ई. सन 1565) मणि प्रदीप नामक करण ग्रंथ श्री मल्लारि – शके 1493 (ई. सन 1571) श्री रंगनाथ – शके 1495 (ई. सन 1573) श्री विश्वनाथ – शके 1500 (ई. सन 1578) श्री नृसिंह दैवज्ञ – शके 1508 (ई. सन 1586) श्री शिव देवज्ञ – शके 1513 (ई. सन 1591) अपनी पूर्ण आयु ज्योतिषाध्ययन में की। श्री सोमदैवज्ञ–शके 1524 (ई. सन 1602) पंचाग पयोगी 500 श्लोकों की कल्पलता नामक ग्रंथ की रचना की। श्री मुनीश्वर – शके 1525 (ई. सन 1603) ने शक 1568 में सिद्धांत सर्वभौम नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की। (पेज 20) सूर्यनारायण व्यास (आधुनिक विज्ञान), श्रीमाली राधाकृष्णन (आधुनिक) श्री ब्रह्मलीन ज्योतिषी पं. भोजराज द्विवेदी ब्रह्मलीन श्रीनाथूराम व्यास, वर्तमान में सुपुत्र श्री नारायण शंकर व्यास, जबलपुर। ब्रह्मलीन ज्योतिषी पं. बाबूलाल चतुर्वेदी, वर्तमान में पं. सूर्यकांत चतुर्वेदी, **ब्रह्मलीन श्री रघुनाथ प्रसाद गौतम पुत्र स्व. श्री श्रीरामाधीन गौतम, स्व. श्री रामरूप गौतम, स्व. श्री सुंदरलाल गौतम, वर्तमान में श्रीराम रूप गौतम के पुत्र ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पुत्र. ज्योतिषी पं. प्रकाश गौतम, पं. विनोद गौतम, पं. कृष्णकुमार गौतम, पांचवीं पीढ़ी – नयन गौतम, सात्विक गौतम, कान्हा गौतम।**

–सविता गौतम

वृंदावनी संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा
हेतु संपर्क करें
पं. धनेश प्रपन्नाचार्य महाराज
काली मठ संस्थान,
साकेत नगर, भोपाल
मोबाइल नं. 9826973147

नजर एवं धूप के चश्मे बनवाने हेतु संपर्क करें
नेमा आप्टीकल
अत्याधुनिक मशीनों द्वारा
जांच सुविधा उपलब्ध
माता मंदिर, नगर निगम काम्पलेक्स, भोपाल
मोबाइल नं. 9993489005

नेक सलाह

- मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
- जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।
- खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ।
- पीना चाहते हो तो ईश्वर चिंतना का शर्बत पिओ।
- पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
- देना चाहते हो तो नीची निगाह करके दो और भूल जाओ।
- लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो।
- जाना चाहते हो तो तीर्थ स्थानों को जाओ।
- आना चाहते हो तो दुखियों की सहायता को आओ।
- छोड़ना चाहते हो तो पाप और अत्याचार को छोड़ो।
- बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो।
- तौलना चाहते हो तो बात को तौलो और ठीक बोलो।
- देखना चाहते हो तो अपने आपको देखो।
- सुनना चाहते तो ईश्वर की प्रशंसा व दुखियों की पुकार सुनो।
- अपने कर्तव्य का पालन करो दुनियाभर की खुशी तुम्हारी ही है।

हानिकारक या अहितकारी संयोग - खान पान का मिश्रण अहितकारी

- दूध के साथ – दही, नमक, इमली, खरबूजा, बेलपत्र, नारियल, मूली, तुरई, गुड़, तेल, सत्तू, खट्टे फल खटाई का सेवन अहितकारी।
- दही के साथ – खीर, दूध, पनीर, गर्म खाना या वस्तु, खरबूजा आदि।
- खीर के साथ – खिचड़ी,कटहल, खटाई, सत्तू, शराब आदि।
- शहद के साथ – मूली, अंगूर, वर्षा का जल, गर्म वस्तुएं।
- गर्म जल के साथ – शहद।
- शीतल जल के साथ – मूंगफली, घी, तेल, तरबूजा, जामुन, खीरा, गर्म दूध।
- घी के साथ – शहद (बराबर मात्रा में)
- खरबूजा के साथ – लहसुन, मूल के पत्ते, दूध, दही।
- तरबूज के साथ – पुदीना, शीतल जल।
- चाय के साथ – ककड़ी, खीरा।
- चावल के साथ – सिरका।

स्वराज EXPRESS
मध्यप्रदेश – छत्तीसगढ़

24X7 NEWS CHANNEL

निर्भीक, निष्पक्ष, सत्य, सटीक खबरों के लिए धर्म-संस्कृति, कला, खेल, राजनीति की पल-पल की खबर

विशेष कार्यक्रम : जनता मांगे जवाब, मैं जनता की जुबान हूं

सोमवार से शुक्रवार रात 8.00 बजे

चैनल हेड-श्री एस.पी. त्रिपाठी

Plot No.16, Sandhya Prakash Bhawan,
Malviya Nagar, Bhopal,
Madhya Pradesh 462003
Phone No. : 0755 402 9000

यह ज्ञान है जरूरी

ज्योतिष और कर्म-कांड में कई शब्द सूत्रात्मक व अर्थपूर्ण हैं जिनके बारे में पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। यहां कुछ महत्वपूर्ण शब्दों व उनके अर्थों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

पंचदेव- (सभी गृहस्थों को पूजा करनी चाहिए) गणेश, शिव, विष्णु, दुर्गा, सूर्य।

इष्टदेव - अपना प्रिय देवता (माता, पिता, गुरू, देवता एवं ऋषि)

पंच तत्व- जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश।

कुल देवता - कुल के परंपरानुसार पूजित देवता (देव, नाग, किन्नर व गंधर्व)

पंच पल्लव - बरगद, गूलर, पीपल, आम एवं पाकड़।

पंच रत्न- पुखराज, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम।

पंचामृत-गौ- दुग्ध, गौ दही, गौघृत, शहद और शकर।

पंच गव्य - गाय का गौमूत्र, गोबर, घी, दही तथा दूध।

पंचमृदा - गौशाला, हथसार, शमशान, बामी तथा राजदरबार।

सप्तऋषि - गौतम, वशिष्ठ, जमदाग्नि, अत्रि, कश्यप, पारासर, भृगु एवं सत्यवाणी।

पंचधातु- सोना, चांदी, तांबा, कांसा और पीतल।

सप्तधान्य - जौं, धान, तिल, कौदो-कुटकी, मूंग, चना एवं गेहूं।

सप्त मृत्तिका - घुड़साल, हाथीसाल, बांबी, नदियों का संगम, तालाब, राजा के द्वार और गौशाला।

सर्वोसंधि - मुरा, जयमासी, बच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दाऊ हल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता।

पंचमंत्र - नवार्ण, पंचाक्षरी, द्वादशाक्षर, महामृत्युंजयी, सिद्ध मंत्र।

अवस्थाएं - बाल्यावस्था, किशोर, युवा, वृद्धावस्था

नवग्रह - सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहू, केतु।

छाया ग्रह - राहु-केतु।

मांत्रिकाएं - गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसैना, मातरो, लोकमाता, धृष्टि, पुष्टी, तुष्टी, आत्मनः, कुलदेवता, गणेशाम्बिका।

द्वादश ज्योर्तिलिंग - सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ऊंकार (ममलेश्वर), केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, त्रयम्बकेशवर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, सोमेश्वर, घृष्णेश्वर (शिवालय)

दस दिशाएं - पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नेऋत्य, पश्चिम, बायव्य, उत्तर, ईशान, उद्धर्व भूमि।

दशोप चार - पद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, वस्त्र, निवेदन, गंध, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य।

पंचोप चार - गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

षोडसोपचार - पाद्य, अर्घ, आचमन, स्थल, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पाठ, तर्पण, नमस्कार।

पंच लोकपाल - गणेशजी, दुर्गा, वायु, आकाश, अश्वनी कुमार।

नवदुर्गा - शैलपुत्री, ब्रह्मचारणी, चंद्रघंटा, स्कंधमाता, कूशमांडा, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री।

दश दिग्पाल - इंद्र, अग्नि, यम, नैरित्का, वरुण, वायु, कुबेर, ईशन, ब्रह्मा, अनन्त।

अष्ट लक्ष्मी - अमृत, आध्य, विद्या, सौभाग्य, काम, सत्य, भोग एवं योग।

स्नान - मंत्र, स्नान, वारुण स्नान, भौम स्नान, अग्नि स्नान, वायव्य स्नान, दिव्य स्नान, मानसिक स्नान।

चार वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

संगम - गंगा, जमुना, सरस्वती।

त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

त्रिदेवियां- महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती।

पंच माता- जननी, भूमि, पालनहारी, गौ भारत।

पंचकाशी - वाराणसी, गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, दक्षिणकाशी, शिवकाशी।

पंचनाथ - उत्तर - श्री बद्रीनाथ, श्री बद्रीकाश्रम (उत्तराखंड), दक्षिण - श्री रंगनाथ (रामेश्वर) पूर्व - श्री जगन्नाथ, श्री जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), पश्चिम - श्री द्वारकानाथ, श्री द्वारिका (सौराष्ट्र-गुजरात), मध्य - श्री गोवर्धननाथ, श्री नाथद्वारा (राजस्थान)।

सप्त मोक्षनगरी - अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन, द्वारिका।

पंच सरोवर - बिन्दु सरोवर (सिद्धपुर), नारायण सरोवर (कच्छ-गुजरात), पम्पा सरोवर (मैसुर स्टेट), पुष्कर सरोवर (अजमेर-राजस्थान), मान सरोवर (कैलाश पर्वत-चीन)

सप्त सरस्वती- सुप्रभा (पुष्कर), विशाला (गया), कांचनाक्षी (नैमिषारण्य), मनोरमा (उत्तरकौसल), ओघवती (कुरुक्षेत्र), सुरेणु (हरिद्वार), विमलोद्रका (हिमालय)

सप्तगंगा - भागीरथी, वृद्ध गंगा, कालिंदी, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, सिंधु।

सप्त पवित्र नदियां - गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, सिंधु।

सप्त पाताल - तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल, पाताल

सप्त द्वीप - जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर

कुंभ स्नान मेला - हरिद्वार - कुंभ राशि का गुरू और मेष राशि का सूर्य होने पर, प्रयाग (इलाहाबाद) - वृष राशि का गुरू और मकर का सूर्य होने पर, उज्जैन - सिंह राशि का गुरू और मेष का सूर्य होने पर, नासिक - सिंह राशि का गुरू और सिंह का सूर्य होने पर।

नवखंड - इलावृत, भद्राश्व, हरिवर्ष, केतुमाल, रम्यक, हिरण्यमय, कुरू, किंपुरूष, भारतवर्ष।

सप्त समुद्र- 1 लवण मय सिन्धु, 2 क्षीर सिन्धु, 3 दधि सिन्धु, 4 धृत सिन्धु, 5 इक्षुरसमय सिन्धु, 6 मधुमय सिन्धु एवं 7 अमृतमय सिन्धु।

शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करें।
उत्तम चौघड़िया - अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। **खराब चौखड़िया** - उद्वेग, रोग व काल हैं।

दिन की चौघड़िया							समय बजे तक	रात की चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शुभ कार्यों में वर्जित समय विचार

देवशयन - आषाढ़ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते हैं। इन्हें देवशयन या चातुर्मास कहते हैं, इन दिनों में विवाह, उपनयन, गृहाराम्भ, शांति, पौष्टिक कर्मदेव-स्थापना आदि का निषेध है।

होलाष्टक - होली से 8 दिन पूर्व तक होलाष्टक माना गया है। इसमें कुछ क्षेत्रों में (सतलज, रावी, व्यास नदियों के तथा पुष्कर सरोवर के तटवर्ती भाग में) विवाहादि मांगलिक कार्य वर्जित हैं। अन्य क्षेत्रों में वर्जित नहीं है।

गुरु एवं शुक्र के अस्त में वर्जित कार्य - विवाह, मुंडन (चौल), उपनयन, कर्णछेदन, दीक्षा, गृह प्रवेश, द्विरागमन, वधु प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, कुआं, जलाशय खोदना, चातुर्मास, उत्सर्ग इत्यादि कृत्य वर्जित हैं।

भद्रा दोष - भद्रा में विवाह, गृहारंभ, गृहप्रवेश तथा मांगलिक कार्य वर्जित हैं, पूर्वार्ध दिन की भद्रा रात में तथा उत्तरार्ध की भद्रा दिन में शुभ कार्य के लिए मान्य है।

विभिन्न वारों को जिन वस्तुओं का भक्षण करके जाने से दिशा शूल दोष का परिहार है वह निम्न हैं -
रवि- घृत
सोम-दूध
मंगल-गुड़
बुध-तिल
गुरु-दही
शुक्र-जौ की वस्तु
शनि-उड़द की दाल

दिशा शूल विचार

पूर्व की ओर सोम, शनि तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में। पश्चिम में रवि, शुक्र और रोहिणी नक्षत्र में। दक्षिण में गुरुवार और पू.भा. नक्षत्र में। उत्तर में मंगल एवं बुध को यात्रा करना मना है। उसी दिन पहुंच जाने और आपत्तिकाल में दिशा शूल नहीं माना जाता है। प्रस्थान सामग्री रखने से दिशा शूल नहीं माना जाता है। प्रस्थान सामग्री रखने से दिशा शूल का परिहार हो जाता है। दिशा शूल रहित दिन कोई वस्त्र, पुस्तक या फल-फूल अपने स्थान से दूसरे स्थान में रखें तथा 3 और 5 रात्रि के भीतर प्रस्थान सामग्री लेकर गन्तव्य स्थान को जाना चाहिए। अपने घर से बाहर यात्रा पर जाने के लिए बुधवार आर्थिक दृष्टि से ठीक नहीं, किन्तु व्यक्ति पर आपत्ति आने की संभावना नहीं रहती है तो पूर्व की ओर गोधूलि बेला में, पश्चिम की ओर प्रात:काल में, उत्तर की ओर दोपहर में दक्षिण की ओर रात्रि में यात्रा करना चाहिए। अति आवश्यक कार्य व विवाह में दिशा शूल नहीं माना जाता। नित्य यात्रा करने वालों पर भी दिशा शूल लागू नहीं होता।

नई-नई सोच के प्रश्नों की जानकारी शास्त्रों से खोजकर भारतीय संस्कृति के भंडारों से निकाल कर वर्तमान युग के पाठकों हेतु कैलेंडर एवं पंचांग में प्रस्तुत की गई है।

नववर्ष मंगलमय हो

इस कामना के साथ यह पंचांग खरीद कर अपने मित्रों व परिचितों को अवश्य भेंट करें।

-पं. अयोध्या प्रसाद गौतम

पंचांग प्राप्ति स्थल

ज्योतिष मठ संस्थान
नेहरू नगर, भोपाल
मो. 9827322068

कृष्णा लाइफ स्टाइल
पुराना बस स्टैंड अमानगंज
मो. 9630088264

श्री दिलीप कुमार जैन
सलेहा रोड, देवेन्द्र नगर,पन्ना
मो. 7509706486

आदर्श फोटो कापी सेंटर
सिरमौर चौराहा, रीवा
मो. 9424982991

रामजी पुस्तक भंडार
कमानिया गेट, जबलपुर
मो. 9302543396

रविन्द्र बुक डिपो
घोड़ा नक्कास, भोपाल
मो. 9826088604

सागर संकटमोचन प्लास्टिक स्टोर
चौराहा के पास उचेहरा, सतना
मो. 9893701848

श्रीकृष्णा भक्ति भंडार
गोपाल मंदिर, उज्जैन
मो. 98277205372

ज्योति बुक डिपो
जुमेराती गेट, भोपाल
मो. 9893411822

पूजा प्रोडक्ट एवं रत्न-रुद्राक्ष भंडार
जगतदेव तालाब रोड, सतना
मो. 9893678590

भारत की धर्म संस्कृति भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार

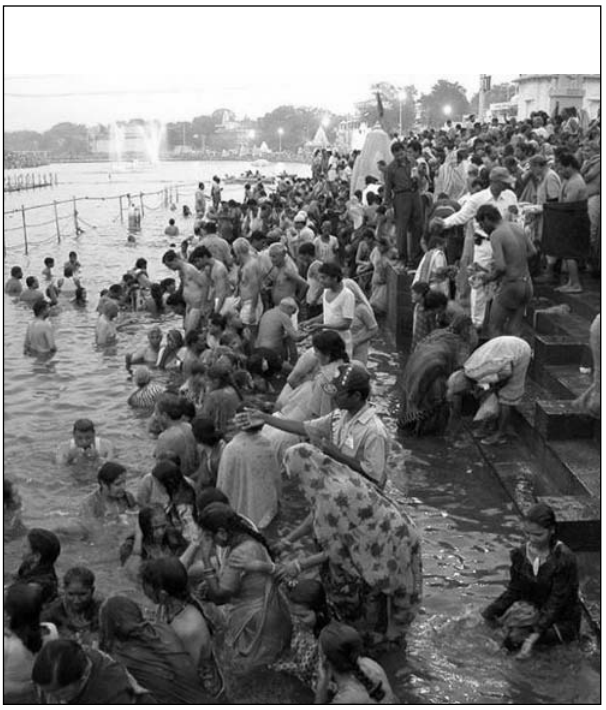

भारतीय संस्कृति में ग्रह-नक्षत्र, देव ऋषि, ब्राह्मण, साधु-संतों का विशेष स्थान है। इस संस्कृति में माता-पिता, गौ-ब्राह्मण को देवताओं की संज्ञा प्राप्त है। ऐसे भारत देश में अनेक स्थानों पर प्राचीन मंदिर एवं प्राचीन धरोहरें स्थित हैं। पूरे देश में जहां द्वादश ज्योर्तिलिंगों का अपना अलग महत्व है वहीं 52 शक्तिपीठों की कीर्ति जग-जाहिर है। इन शक्तिपीठों में साधक अपनी साधनाएं करते हैं। हमारे देश के अन्य शहर कश्मीर से कन्याकुमारी एवं सोमनाथ से रामेश्वरम तक संस्कृति से भरे पड़े हैं। इन शहरों में सालभर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। कई शहर बिना किसी उद्योग के संस्कृति के आधार पर पल रहे हैं। जैसे उज्जैन को भगवान महाकाल पाल रहे हैं उसी प्रकार वाराणसी को बाबा विश्वनाथ पाल रहे हैं। इलाहाबाद, हरिद्वार एवं ऋषिकेश आदि अनेक शहरों को गंगा मैया पाल रही हैं। ऐसे ही नर्मदा, सरयू, महेन्द्रा, जमुना, क्षिप्रा, वेदवती, महासुर, ख्याता, गया गांडकी आदि नदियों को मातृशक्ति के रूप में स्थान प्राप्त है। जो कि अनेक शहरों की अर्थव्यवस्था को प्रतिपादित करती हैं। हमारे देश में अनेक परंपरावादी मंदिर हैं जो अपनी परंपरा के आधार पर श्रद्धालुओं से भरे पड़े रहते हैं। हमें सोचना होगा कि हमारे अधिकतर शहर-कस्बों में हमारी संस्कृति एवं प्राचीन मंदिर ऐसे औद्योगिक फैक्ट्री के रूप में हैं जिससे इस शहर की अर्थव्यवस्था संचालित होती है। इन शहरों में वर्षभर श्रद्धालुओं का आना-जाना जारी रहती है जिससे बिना उद्योगों के इन शहरों में अच्छी-खासी आमदनी होती है। यह आमदनी हमारी संस्कृति एवं मंदिरों से होती है। लेकिन अफसोस कुछ समय से हमारी संस्कृति की जड़ों को खोदा जा रहा है। हमारे पारंपरिक रिवाजों को मानने वाले मंदिरों की परंपराओं को नष्ट किया जा रहा है। मंदिरों में नए-नए नियम कानून लगाकर उन्हें उनकी संस्कृति को समाप्त किया जा रहा है। ओरछा स्थित रामराजा मंदिर की प्राचीन मान्यताओं के आधार पर मंदिर की प्रतिष्ठा बनी हुई है। इन मान्यताओं को समाप्त करने से संस्कृति का ह्रास होगा। सच्चाई यह है कि इन

गंगा दर्शन : हरिद्वार स्थित हर की पौड़ी का विहंगम दृश्य

स्थानों पर अनेक प्रकार से पंडे-पुजारी एवं सरकारें लूटने में लगी हुई हैं। उदाहरण के तौर पर हरिद्वार स्थित गंगा आरती में प्रति दिन एक लाख लोग शामिल होते हैं, परन्तु सिर्फ पांच हजार भक्तों को ही गंगा आरती दर्शन प्राप्त होते हैं। बचे 95 हजार श्रद्धालु गंगा आरती नहीं देख पाते, जबकि प्रत्येक दिन आरती में कम से कम दस लाख रुपए की आय होती है। यह आय सीधे सरकारों के खाते में जाती है। जबकि इस आय से श्रद्धालुओं के लिए कुछ स्थानों पर एलईडी भी लगवाई जा सकती है। जिससे सभी लोग आरती दर्शन कर सकें। लेकिन कई सालों से श्रद्धालुओं की मांग उठने के बाद भी सुविधा के नाम पर सरकारें कुछ नहीं कर रहीं। बल्कि अपना खजाना भर रही हैं। उज्जैन स्थित महाकालेश्वर भगवान की नगरी में मां क्षिप्रा की ऐसी दशा हो गई है कि उसके जल से आप आचमन भी नहीं कर सकते। यही हाल वृंदावन स्थित यमुना नदी का है, जहां पर श्रद्धालु जाते तो स्नान करने के लिए हैं, लेकिन उन्हें आचमन भी नसीब नहीं होता। कारण कि इन नदियों में उद्योग-धंधों से आने वाले गंदे-नालों का मिलना है। तथा इस संबंध में सरकारों का उदासीन रवैया भी है। सोचना यह है कि जब हमारे कई शहरों को भगवान पाल रहे हैं तब ऐसे शहरों की व्यवस्था को बेहतर बनाने की अपेक्षा बदतर क्यों बनाया जा रहा है। यह सब एक मिली भगत है। जो कि राजनैतिक विश्लेषकों को भली-भांति मालूम है। अब तो जाति के आधार पर भी हमारी संस्कृति का बंटवारा किया जाने लगा है। विगत उज्जैन कुंभ में समानांतर दलित कुंभ का आयोजन कुछ इसी का हिस्सा था। पूर्व समय में जब हम गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान करते थे तब हमें यह पता नहीं होता था कि हमारे बगल में कौन स्नान कर रहा है? लेकिन अब स्वार्थ धर्मियों द्वारा अलग-अलग घाट अलग जाति के लिए सुविधा कारणों का हवाला देकर तैयार किए जा रहे हैं। जिसमें दलित साधुओं को स्नान कराया जाता है। अर्थात हमारी संस्कृति की जड़ को नष्ट करने का प्रयास है। परन्तु आज भी हमारे कुछ साधु-संत मनीषी अपनी संस्कृति को बचाने के लिए अथक परिश्रम कर अपनी परंपराएं बचाकर उपरोक्त धार्मिक स्थानों को अभी भी हरा-भरा बनाए हुए हैं। जिससे भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। परन्तु अगर इस संस्कृतिक अर्थव्यवस्था से ज्यादा छेड़छाड़ की गई तो भारत को गरीब होने से कोई नहीं बचा सकता। जो कि विश्व के अनेक देश इस षड़यंत्र में शामिल हैं उनकी मंशा सार्थक होगी। ऐसे में हमें जागना होगा, अपनी संस्कृति को बचाना होगा, अपने पर्यावरण, अपनी पवित्र नदियों को संरक्षित करना होगा तथा अपने मंदिर की परंपराओं को निरंतर बनाए रखने में अपना योगदान देना होगा।

-पं. विनोद गौतम

जानिए अपना भविष्य

विघ्न बाधाओं से मुक्ति के उपाय

- अनुष्ठान, गृह प्रवेश, महामृत्युंजयी आराधना, जाप
- कपाल भैरवी, बगुलानुमुखी, अकालानुमुखी, मोक्षानुमुखी, आदि शत्रुविजयी अनुष्ठान
- जन्म-पत्रिका, पंचांग, कैलेंडर निर्माण कार्य
- जन्म पत्रिका में मंगल दोष, पितृ दोष, कालसर्प दोष, चांडाल दोष, विष कन्या दोष आदि समस्याओं के अनुसंधान व समाधान के लिए तुरंत संपर्क करें

ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम, श्यामा डांडा, पन्ना मो. नं. 6262849711
ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम, ज्योतिष मठ भोपाल, मो. नं. 9827322068

⁂ ज्योतिष मठ संस्थान ⁂

(भारतीय प्राचीन ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद, खगोल, वास्तु एवं मौसम अनुसंधान संस्थान)

पता : ई.एम. 129 ज्योतिष मठ, नेहरू नगर, भोपाल (मप्र)-462003
मोबाइल नं. : 9827322068

email-pt.vinodgoutam@gmail.com

आग्रह : ज्योतिष मठ संस्थान के विकास व अनुसंधान कार्यों में उचित आर्थिक सहयोग प्रदान कीजिए एवं संस्थान के सदस्य बनिए, सहयोग राशि हमारे संस्थान के बैंक खाता क्रमांक 61211920616 IFSC-SBIN0001308 में जमा कर हमें तुरंत सूचित करें।

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन 29 मार्च 2018

आयोजक-ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल | संयोजक-ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

इस सम्मेलन में देश के अनेक प्रांतों से पधारे वैदिक विद्वान ज्योतिषाचार्य, मनीषी और पत्रकार, पंचांगकार, उपासक, वास्तुविद् एवं अतिथिगण

ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतमजी, ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल
ब्रह्मचारी श्री गिरीशजी महाराज, कुलाधिपति महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय, भोपाल
महाराज श्री वैभव भटेलेजी, प्रसिद्ध कथावाचक भोपाल
प्रसिद्ध कथाकार डॉ. निलिम्प त्रिपाठीजी-भोपाल
ज्योतिषाचार्य पं. श्री विष्णु राजोरियाजी धर्माचार्य भोपाल
पं. श्रीरामजीवन दुबे गुरुजी, चामुंडा दरबार-भोपाल
पं. श्री प्रहलाद पंड्याजी, गणेश ज्योतिष संस्थान भोपाल
पं. श्री एसएन द्विवेदीजी पूर्व न्यायाधीश-भोपाल
पं. श्री एससी उपाध्यायजी, सीबीआई जज-भोपाल
पं. श्री अजय त्रिपाठीजी, वरिष्ठ पत्रकार-भोपाल
श्रीमती सुमन त्रिपाठीजी, संपादक दै. खरी-खरी, भोपाल
श्रीमती रामकुंवर गौतम-उपासक, श्यामाडांडा-पन्ना
पं. श्री रमेश शर्माजी, संपादक-ओपन-आई न्यूज-भोपाल
श्री आशुतोष गुप्ताजी, इंडिया फस्ट न्यूज-भोपाल
श्री अग्निहोत्रीजी, स्वराज न्यूज, भोपाल
श्री राजेश रायजी, अधिकृत पत्रकार दूरदर्शन-भोपाल
श्री निशांत शर्माजी, वरिष्ट टीवी पत्रकार-भोपाल
श्री विनोद तिवारीजी, वरिष्ठ पत्रकार-भोपाल
श्री रवि चौधरीजी, रंगकृति संस्था-भोपाल
श्री निरूपम तिवरीजी, संपादक शिवम मा. पत्रिका-भोपाल
श्री बृजेश जादौनजी समाजसेवी मयूरी केटर्स-भोपाल
श्री संजय भदौरियाजी (मंटू) -नयापुरा भोपाल
श्री आशीष कश्यपजी-नयापुरा भोपाल
डॉ. श्री अनिल शर्माजी, प्रभात साहित्य परिषद भोपाल
पं. श्री रामकिशोर वैदिकजी, प्रसिद्ध भागवताचार्य-भोपाल
पं. श्री धनेश मिश्रा प्रपन्नचार्य-भोपाल
पं. श्री कौशल किशोर कोशिक, राजधानी पंचांग-दिल्ली
डॉ. पं. श्री राम नारायण मिश्रजी, पंचांगकार-भोपाल
डॉ. पं. श्री प्रकाश गौतमजी, पंचांग गणिताचार्य-दमोह
पं. श्री अशोकानन्द महाराज, भाग्य दर्पण केंद्र-भोपाल
पं. श्री सुबोध मिश्राजी, ज्योतिष मठ-भोपाल
कर्नल डॉ. नरेश कुमार सोनीजी-भोपाल
पं. श्री राम नरेश त्रिपाठीजी ज्योतिष शास्त्री-भोपाल
पं. श्री ब्रह्म कुमार मिश्राजी, सिगनेचर रीडर-भोपाल
पं. श्री भाले रावजी वैदिक शास्त्री त्र्यंबकेशवर धाम
पं. श्री राजनाराण शास्त्रीजी, भोपाल
पं. श्री राकेश शास्त्रीजी, भोपाल
पं. श्री कैलाशचंद्र दुबेजी मुहूर्ताचार्य, भोपाल
पं. श्री ओमप्रकाश मिश्रजी भोपाल
पं. श्री अनंत मिश्राजी ज्योतिषाचार्य-सिवनी
पं. श्री सतीश कुमार नेमाजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री कमलेश पाराशरजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री राजेंद्र पाजपेयीजी, संस्कृति विचारक-भोपाल
पं. श्री शिवार्चन शुक्लजी, दुर्गा मंदिर डी सेक्टर भोपाल
पं. श्री रामनारायण तिवारीजी, जड़-बूटी विशेषज्ञ भोपाल
पं. श्री राकेश कुमार गुप्ताजी, भोपाल
श्री आकाशचंद्र मेहताजी, भोपाल
पं. श्री ठाकुर प्रसाद शर्माजी भोपाल
कु. ममता यादवजी, मौसम विज्ञानी-भोपाल
पं. श्री आर.आर. त्रिपाठीजी मौसम विज्ञानी-भोपाल
पं. श्री देवेन्द्र दुबेजी, वैदिक आचार्य-भोपाल
श्री आनंद कुमार बरनदानीजी भोपाल
श्री लक्ष्मीचंद चौधरीजी, कुरावर मंडी
पं. श्री पुरुषोत्तम शास्त्रीजी, भोपाल
पं. श्री राघवेन्द्र शास्त्रीजी, भोपाल
पं. श्री शैलेंद्र शास्त्रीजी भोपाल
पं. श्री विवेक शास्त्रीजी, भोपाल
श्री नितिन ओराने, त्र्यंबकेश्वर-नासिक
डॉ. प्रीति माघमारेजी एस्ट्रोलाचर-भोपाल
श्रीमती कमलासिंह एस्ट्रोलाचर-भोपाल
डॉ. पीएनएस चौहानजी, भोपाल
श्रीमती इंदूसिंहजी चौहान भोपाल

महर्षि ज्योतिष पंचांग शोध सम्मेलन 29 मार्च 2018

आयोजक-ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

पं. श्री राजेश पाठकजी, संपादक धर्म नगरी, भोपाल
पं. श्री बलराम शास्त्रीजी वैदिक शास्त्री-मंडीदीप
पं. श्री राजाबाबू दुबेजी-वैदिक शास्त्री वृंदावन
श्रीमती अनीता गौतमजी-दमोह
पं. श्री ऋषभ दुबेजी, भोपाल
श्रीमती सविता गौतमजी ज्योतिष मठ भोपाल
पं. श्री संजय भारद्वाजजी- भोपाल
पं. श्री हरिओम जोशीजी-ज्योतिषाचार्य इंदौर
पं. श्री एचपी जोशीजी- ज्योतिषाचार्य भोपाल
पं. श्री रामनिवास रिझारियाजी-भागवताचार्य भोपाल
पं. श्री मधुसूदन शर्माजी, वैदिक आचार्य भोपाल
पं. श्री युवराज राजोरियाजी - ज्योतिषाचार्य गुना
श्री अशोक प्रियदर्शीजी, प्रसिद्ध पत्रकार-भोपाल
श्रीमती वेदिका श्रीवास्तवजी ज्योतिषाचार्य इंदौर
श्री चंद्रकांत साहू पत्रकार, भोपाल
पं. श्री राधेश्याम शर्माजी, ज्योतिषाचार्य भोपाल
पं. श्री धर्मेन्द्र पचौरीजी, ज्योतिषाचार्य भोपाल
आचार्य पं. कृष्णा तिवारीजी करोंद-भोपाल
पं. श्री जगदीश शर्माजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री अभय शंकर मिश्राजी ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री संतोष शर्माजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री देवेश जोशीजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
श्रीमती लक्ष्मी सिंहलजी, ज्योतिष-वास्तु विशेषज्ञ-भोपाल
पं. श्री सनम पंड्या, ज्योतिषाचार्य, भोपाल
श्री लक्ष्मीचंद चेलानीजी, ज्योतिष, वास्तु शास्त्री बड़ोदरा
पं. श्री विशाल दयानंद शास्त्रीजी, वास्तु सलाहाकर उज्जैन
पं. श्री श्याम सुंदर दुबेजी, तथास्तु, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री कृष्ण गोपाल शर्माजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री रामेश्वर चौबेजी, भागवताचार्य-भोपाल
श्रीमती कविता दुबेजी-भीमादेवी उपासक, भोपाल
श्री प्रमोद कुमार खरेजी, दमोह
श्री वीवी बोरखे, कल्पना नगर भोपाल
पं. श्री राकेश शास्त्रीजी, ज्योतिषाचार्य, भोपाल

संयोजक-ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

पं. श्री लेखराज शर्मा, ज्योतिषाचार्य, गुफा मंदिर-भोपाल
पं. श्री चंद्रप्रकाशजी, भोपाल
पं. श्री बृजेश शास्त्रीजी, महर्षि संस्थान-भोपाल
पं. श्री राजेश उपाध्यायजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री शारदा प्रसाद दीक्षितजी, ज्योतिष शास्त्री-सीहोर
पं. श्री जितेंद्र शर्माजी, महर्षि संस्थान भोपाल
श्री प्रवण कुमार शाहजी, मौसम विज्ञानी, भोपाल
श्री अजयशंकर देशपांडेजी, भोपाल
पं. श्री केआर उपाध्यायजी, ज्योतिष तंत्रज्ञ, करोंद-भोपाल
श्रीमती रेखा उपाध्यायजी देवी उपासक करोंद-भोपाल
पं. श्री अखिलेश शास्त्रीजी, करोंद भोपाल
पं. श्री विष्णु प्रसाद द्विवेदीजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री प्रमोद पांडेजी ज्योतिष कर्म-कांडी-भोपाल
पं. श्री भारत भूषण जोशीजी, भोपाल
डॉ. प्रदीप साहूजी-भोपाल
पं. श्री सुरेंद्र अवस्थीजी, ज्योतिषाचार्य-भोपाल
पं. श्री विनोद तिवारी, ज्योतिषाचार्य-खुरई
पं. श्री भरत शास्त्री दुबेजी, व्याकारणाचार्य-भोपाल
प्रोफेसर उर्मिला सिंह तोमर-ग्वालियर
श्रीमती डॉ. अंजना गुप्ताजी, प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य-भोपाल
श्री विनय ठक्करजी, शिक्षा योग केंद्र-भोपाल
पं. श्री राजेश शुक्लाजी ज्योतिषाचार्य-वाराणसी
श्री राकेश सोनीजी-सीहोर
पं. श्री राजेंद्र भार्गवजी, वैदिक ज्योतिषी भोपाल
पं. श्री अभिषेक दुबेजी, वैदिक ज्योतिषी-भोपाल
पं. श्री अभिषेक शर्माजी, ज्योतिष कर्मकांडी-भोपाल
श्री विनोद रावतजी, ज्योतिषाचार्य-चामुंडा दरबार-भोपाल
सुश्री कर्णिका गौतमजी, ज्योतिष मठ, भोपाल
पं. श्री कान्हा गौतमजी, ज्योतिष मठ, भोपाल
पं. श्री गौरव शर्माजी, महर्षि संस्कृत केंद्र-भोपाल
पं. श्री श्याम द्विवेदी, महर्षि संस्कृत केंद्र-भोपाल

ज्योतिषमठ संस्थान के सहयोगी सम्मानीय सदस्यगण

जस्टिस श्री अशोक तिवारीजी, इंदौर
श्री पी.के. धमीजाजी, रीवा
श्री बाला प्रसाद विश्वकर्माजी, नागौद
श्री बलवीर सिंह कुशवाहजी, भोपाल
डॉ. श्री अनिल शर्माजी, भोपाल
श्री सुरेश नामदेवजी, भोपाल
पं. श्री अखिलेश भारद्वाज, भोपाल
श्री सिद्धार्थ गुप्ताजी, गोरखपुर
श्री सुरेंद्र सिंह गहरवारजी, कटनी
श्री अनिल श्रीवास्तवजी, इंदौर
जादूगर श्री आनंद अवस्थीजी
सुश्री कृष्णा सिंहजी, मुंबई
श्री आसिमअली खान अभिनेता, मुंबई
श्री रिंकू महाराजजी, नागा बाबा आश्रम भोपाल
प. श्री अशोक भट्टजी, प्रोफेसर कॉलोनी, भोपाल
श्री जी.डी. मिश्राजी, गुलमोहर कालोनी, भोपाल
श्री संजीव शर्माजी, (प्रशासनिक अधिकारी) भोपाल
श्री नीरज पाण्डेयजी, (प्रशासनिक अधिकारी) भोपाल
श्री पवन अरोराजी, (प्रशासनिक अधिकारी) भोपाल
श्री एम.के. गुप्ताजी, (प्रशासनिक अधिकारी) भोपाल
श्री बी.डी. मिश्राजी, (बीएड कालेज) सागर
श्री निशांत शर्माजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री रमेश शर्माजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री राजीव त्रिपाठीजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री अजय त्रिपाठीजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री एस.पी. त्रिपाठीजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री आशुतोष गुप्ताजी, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री संदीप भाम्वरकर, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल
श्री भरत सिंह परमारजी, पन्ना
श्री बब्बाजू, पन्ना
जादूगर श्री ओ.पी. शर्माजी
श्रीमती दिलहर कुमारीजी, महारानी साहब पन्ना
पं. श्री सोनू गर्ग, वाराणसी
पं. श्री राममिलन मिश्रा, मकरंदगंज-पन्ना
श्री मुन्नवर कौसरजी, समाजसेवी-भोपाल
डॉ. पी.एन.एस. चौहान, भोपाल
श्री प्रहलाद प्रजापतिजी, भोपाल
डॉ. संजय सिन्हाजी मुजफ्फपुर नगर, बिहार
डॉ. श्रीमती संगीता सिन्हाजी मुजफ्फपुर नगर, बिहार
श्री डीपीएस चौहान, (भूतपूर्व चीफ जस्टिस) इलाहाबाद, उप्र
श्री तरणजीत सिंहजी, नई दिल्ली
श्रीमती सोनालीजी, नई दिल्ली
श्री मुन्नूसिंहजी (एडवोकेट), बैकुंठपुर-छत्तीसगढ़
श्री जगनन्दनसिंहजी बघेल सीबीआई रिटायर डीएसपी
उमरिया, शहडोल
श्री वाला प्रसाद विश्वकर्माजी, नागौद-सतना

श्रीकृष्णा लाईफ स्टाईल

रेडिमेड कोट-पैन्ट, शूटिंग-शर्टिंग, साड़ी एवं सभी प्रकार के वस्त्रों के विक्रेता

फैन्सी एवं वैवाहिक साड़ियों का अनूठा संग्रह

पुराना बस स्टैण्ड अमानगंज (पन्ना)

मयंक असाटी

मोबाइल नम्बर - 9630088264

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग कैलेंडर यहां से प्राप्त करें